thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

वैदिक संसार

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सम्पूर्ण संसार को श्रेष्ठ बनाओ

वेदों की और लौटो

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०५६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

वर्ष -४ अंक- ९ मासिक-हिन्दी नवम्बर,२०१४ इन्दौर(म.प्र.) मूल्य-२५/- कुल पृष्ठ-४४

आपके पूर्वज जंगलों में बसे अशिक्षित नहीं थे, संसार को जागरित करने वाले महापुरुष थे।
आपका इतिहास पराजय की गठड़ी नहीं है, वह विश्व विजेताओं की गौरव-गाथा है।
आपकी वैदिक ऋचाएँ ग्वालों के गीत नहीं है, श्रीराम और श्रीकृष्ण जैसी महान् आत्माओं को साकार करने वाले त्रिकालाबाधित सत्य है।
—दयानन्द

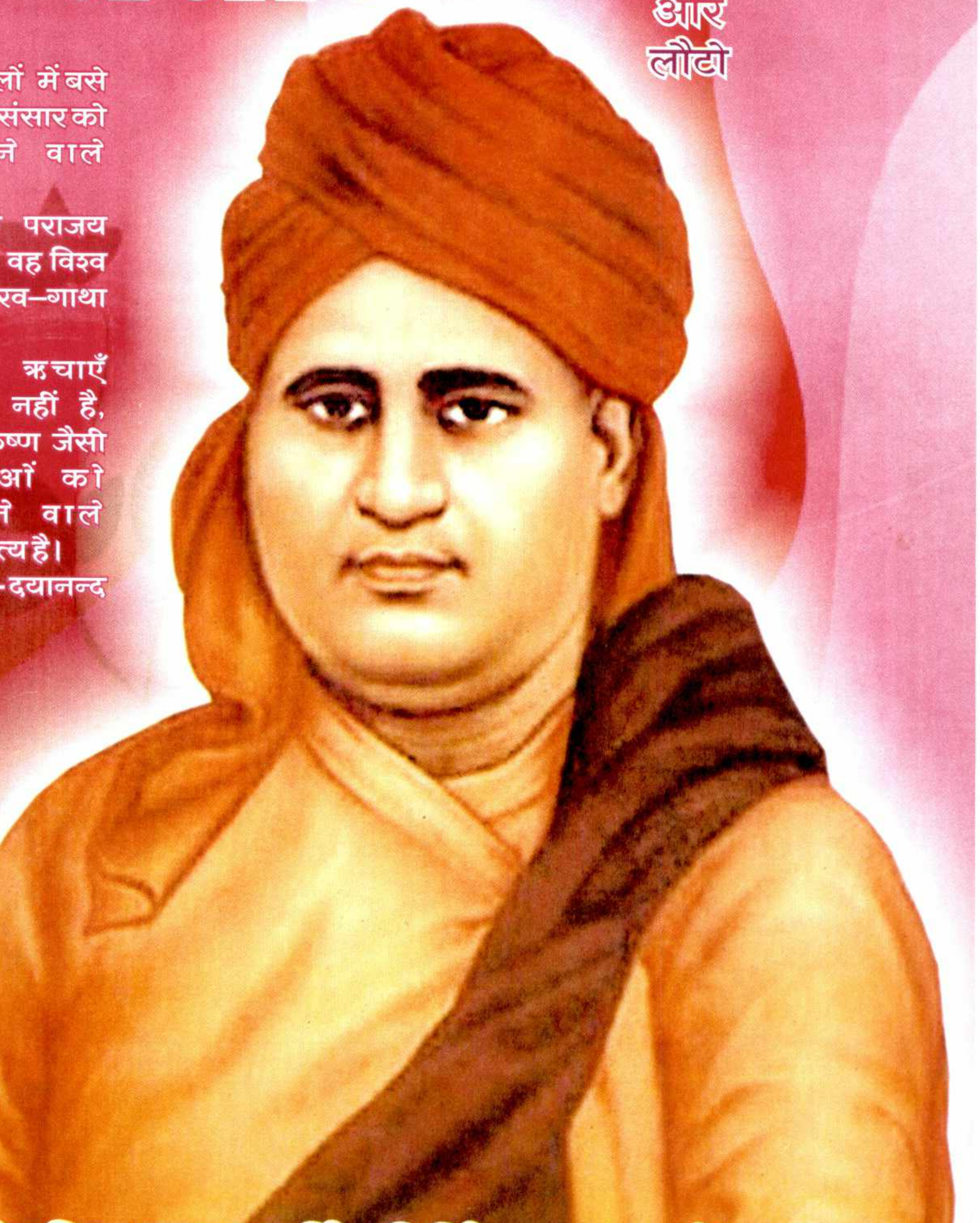

ईश्वर भक्त, वेद निष्ठ, राष्ट्र समर्पित, निर्भिक, सत्य मार्ग के पथिक
सादगी-सुचिता की प्रतिमूर्ति, **ऋषिवर देव दयानन्द**
के १३१ वें निर्वाण दिवस पर महान् आत्मा को शत-शत नमन

thearyasamaj.org

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३८ पर

विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा आयोजित दि. 6 से 10 अक्टूबर तक माधापुर (भुज) में वेदकथा सम्पन्न

प्रमुख सहयोगी एवं मुख्य यजमान
हंसाबेन भट्ट

वेद कथाकार
स्वामी शान्तानन्द सरस्वती

संयोजक :
शशिकान्त भाई पटेल

व्यास पीठ पर विराजित वेद कथाकार
स्वामी शान्तानन्द सरस्वती जी के साथ अन्य विद्वत्गण

पं. योगेश जी के यज्ञ ब्रह्मत्व में बहन हंसाबेन के साथ
देवयज्ञ करती अन्य माता– बहनें

भजनोपदेशक पं. वल्लभ प्रसाद जी अपने सहयोगियों के
साथ वेद कथा को मधुरता प्रदान करते हुए

भारी संख्या में उपस्थित मातृशक्ति एवं बन्धुगण
वेद कथा का अमृत पान करते हुए

वेद कथा का कुशल मंच संचालन करते विश्व हिन्दू परिषद्
के सौराष्ट्र मंत्री भाई शशिकान्त जी पटेल

वेद कथा में उपस्थित धर्मानुरागीयों
की बृहद संख्या में उपस्थिति

बहन हंसाबेन द्वारा स्वामी जी का भावभीना सम्मान

मंच संचालक महोदय का स्वामी जी द्वारा स्नेहिल सम्मान

स्वामी जी द्वारा हंसाबेन का वैदिक साहित्य भेंट कर सम्मान

संत औधवराम गुरुकुल, भवानीपुर के
प्रधान शंकरभाई भानुशाली एवं विद्यार्थीगण स्वामी जी के साथ

वेद प्रचार समिति भुज के प्रमुख
वैदिक साहित्य सुलभ करवाते

वैदिक संसार प्रकाशक – सुखदेव शर्मा , इन्दौर का
आत्मीय अभिनंदन संयोजक शशिकान्त भाई पटेल द्वारा

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आर.एन.आई. - एम.पी.एच.आई.एन. २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन - एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१५-१७

वर्ष- ४, अंक- ०१
अवधि- मासिक, भाषा हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ नवम्बर २०१४
प्रकाशन आर्ष तिथि : पौष, शुक्लपक्ष, तृतीया
सृष्टि संवत् : १,९७,२९,४९,११६
कलि संवत् : ५,११६
विक्रम संवत् : २०७१, दयानन्दाब्द : १९१

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इंदौर - ०९४२५०६९४९१

संपादक गजेश शास्त्री ०९९९३७६५०३१
सह सम्पादक नितिन शर्मा ०९४२५९५५१९१

शब्द संयोजन एवं साज सज्जा - कु. भाग्यश्री शर्मा

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश
ई.मेल.-vaidiksansar@gmail.com

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति - २५/-
वार्षिक सहयोग - २५०/- (१२ प्रति)
त्रैवार्षिक सहयोग - ६००/- (३६ प्रति)
आजीवन सहयोग - २,१००/- (१५ वर्ष)
आधार स्तंभ - ११,०००/- (न्यूनतम्)
विशिष्ट सहयोग - २५,०००/-
अन्य सहयोग - स्वेच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इंदौर
करंट खाता क्रमांक - ३२८५९५९२४७९
आई.एफ.एस. कोड क्र.-एस.बी.आई.एन.०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज - वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ क्र.
भूले-भटके आर्यों! जानो अपना अतित	संपादकीय	०४
वेद मंत्र, भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
मरहूम तथा आँजहानी	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
हमारी महान् विभूतियाँ -महर्षि दयानन्द सरस्वती	सा.-आर्य धर्मेन्द्र जीवन	०९
वैदिक ऋषिका - इन्द्राब्रह्मस्पती	शिवनारायण उपाध्याय	१०
ये विश्वे अमृतस्य पुत्राः "विश्वकर्मा बन्धुत्व"	पुरुषोत्तमदास गोठवाल	१०
परमात्मा की ओर पदार्पण	मृदुला अग्रवाल	११
"निर्णय के तट पर कर्ता"-भोक्ता, बद्ध-मुक्त....	डॉ. ओमानन्द सरस्वती	१३
ऋषि दयानन्द को प्रणाम	सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी	१३
उपेक्षित प्रताप	भारतेन्द्र आर्य	१४
वयं राष्ट्र जागृयां पुरोहितः	रामफल सिंह आर्य	१५
तुम्हारी शरण में.....	रमण नावलीकर	१५
वेदों में आधुनिक विज्ञान	कृपालसिंह वर्मा	१७
स्वामी दयानन्द और विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	१७
वैदिक संसार प्रकाशन की आवश्यक सूचनाएँ....	वैदिक संसार	१८
सत्य न्याय एवं वेद के आग्रही स्वामी दयानन्द.....	उमाकान्त उपाध्याय	१९
ऋषि दयानन्द की योग साधना	देशराज आर्य	२०
मानव मात्र के लिए स्वामी दयानन्द जी.....	भगवानदेव वेदालंकार	२१
महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्ग दर्शक है	खुशहालचन्द्र आर्य	२३
मैं और मेरा	ओमप्रकाश बजाज	२४
मरना ही है तो मरो परन्तू कीर्ति रूप से शेष रहो	अमरजा टोपे शेकदार	२४
विश्व शांति का स्त्रोत वैदिक धर्म	साध्वी उत्तमा यति	२५
नव भारतोदय को किरणांजलि देता सूर्योदय	देवनारायण भारद्वाज	२७
आर्यों के नाम दूर देश से चिंतन हेतु पत्र	आचाय ज्ञानेश्वरार्य	२९
वेदमाता	रामगोपालसैनी	३०
अतिथि यज्ञ-कर्ता	बाबुलाल जोशी	३०
भारत का प्रथम राज्य - आंध्रप्रदेश	इन्द्रदेव एवं लक्ष्मेन्द्र	३०
वैदिक चर्चाओं का आयोजन	रमेश चन्द्र भाट	३१
विदेशी गुलामी के प्रतीक १ जनवरी.....	डॉ गंगाशरण आर्य	३३
आर्य जगत् की गतिविधियाँ	संकलित	३४
राजस्व प्राप्ति से अधिक बिमारियों एवं अपराध...	संकलित	३५
हिमालय प्रदेश में न्यायालय द्वारा पशुबलि...	संकलित	३५
आध्यात्मिक जिज्ञासा/ प्रश्न आपके, समाधान...	वैदिक संसार	३६
आपके पत्र	संकलित	४१
शोक सूचना	संकलित	४२

thearyasamaj.org

संपादकीय

भूले-भटके आर्यों! जानो अपना अतित एवं विधर्मी मतों का सच

वर्तमान में तुम्हें सत्य से अवगत करवा अज्ञानता के अंधकार से निकालने वाला कोई नजर आता नहीं

इस संसार का सबसे बड़ा झूठ अगर कोई है तो वह यह है कि सत्य कड़वा होता है। सत्य को कड़वा समझने तथा कहने वाले बंधुजन वस्तुत: सत्य से अपरीचित ही हैं। सत्य संसार का एक मात्र ऐसा तत्व है जो उसको आत्मसात करने वाले को सुख सागर में गोते लगवाते हुए सदैव आनन्द की मधुर स्मृतियों में सराबोर रखता है। इसमें लेश मात्र भी कड़वाहट अथवा अप्रियता नहीं। प्रश्न उठता है कि फिर सत्य को कड़वा क्यों कहा जाता अथवा समझा जाता है। इसका उत्तर यह है कि सत्य श्रेष्ठ गुणकारी घृत के समान वह अमृत्व है जिसे विचारपूर्वक पुरुषार्थ कर प्राप्त किया जाता है जैसे सभी जानते हैं कि दूध के अन्दर घृत है दूध से घृत को प्राप्त करने हेतु उसे विधिपूर्वक दही में परिवर्तित कर दही को मथने के बाद मक्खन व मक्खन को गर्म कर घी प्राप्त करना होता है अगर हमने दूध को प्रारम्भिक अवस्था में ही विकृत (फाड़) कर दिया तो हम घृत प्राप्त नहीं कर सकते इसी प्रकार सत्य वह तत्व है जो प्रत्यक्ष दृष्टि में नहीं आने के उपरांत भी सर्वत्र उपस्थित है सत्य के आकांक्षि-अभिलाषी मानव को उसे पाने हेतु परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त नीर-क्षिर विवेक का उपयोग करते हुए पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त करना होता है। सत्य के प्रबल पक्षधर महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा सत्य के अर्थ का प्रकाश करते हुए अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखा गया यह वाक्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है **'मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने हारा है तथापि स्व प्रयोजन की सिद्धी, हठ, दुराग्रह तथा अविद्यादि दोषों के कारण सत्य को छोड़ असत्य पर झुक जाता है।'** इसी कारण उन्होंने आर्यसमाज का चौथा नियम रखा है **'सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये'** तथा सत्य की प्राप्ति का स्त्रोत भी आर्यसमाज के तीसरे नियम में इस प्रकार बताया है **'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'**। आईये मानव मात्र के मूल धर्म संस्कृति और मूल धर्म-संस्कृति के उद्गम स्थान और खरपतवार के रूप में इस धरा पर उपजे विधर्मी मतों तथा वर्तमान में घटित घटनाक्रमों पर चिंतन करते हैं कि आखिर सच क्या है?

इस सच को कौन झूठला सकता है कि भारत देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में इस्लाम, यहूदी, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध, सिक्ख आदि मत, पंथ सम्प्रदायों का बिजारोपण आज से लगभग ५००० वर्ष पूर्व द्वापर युग में महाभारत काल तक भी नहीं हुआ था। इस्लाम की उत्पत्ति १४३६ वर्ष पूर्व अरब क्षेत्र में हुई तथा लगभग १००० वर्ष पूर्व लूटेरों आक्रांताओं के माध्यम से यह भारत में आया।

WAY TO HEAVEN

मोहम्मद बिन कासिम, महमूद गजनी, गौरी, चंगेज खाँ, तैमूर लंग, गयासुद्दीन तुगलक, कुतुबुद्दीन एबक, इब्राहिम लोदी, शेरशाह सूरी, अलाउद्दीन खिलजी, अकबर, औरंगजेब, बाबर, दोस्तमोहम्मद, रजिया सुल्तान आदि के द्वारा इस्लाम के पैरोकार बन गैर इस्लामी मनुष्यों के साथ की गई लूटपाट-रक्तपात, बलात्कार, बलात् धर्म परिवर्तन के अमानवीय कारनामों से इतिहास रक्त रंजित है। विचारणीय विषय है क्या इस्लाम शान्ति का दूत बनकर भारत आया और इसके श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों के आधार पर इसे सहर्ष स्वीकार किया गया अथवा भारत में इसकी उत्पत्ति वैदिक धर्म-संस्कृति के ह्रास के परिणाम स्वरूप ब्राह्मण-क्षत्रियों के पथभ्रष्ट होने के कारण मद-मोह-लोभ में फंसे तथा अनैक्यता के जाल में जकड़े आपसी फूट के शिकार आर्य जाति की कमजोरियों का लाभ उठाकर तलवार की नोक पर प्राणों की विवशता वश अज्ञानता जनित प्रलोभन के कारण हुई? इस्लाम के नाम पर भूतकाल तथा वर्तमान में व्याप्त हिंसा की पृष्ठभूमि में इस्लाम के प्रमुख ग्रन्थ कुरान की आयते हैं जो हिंसा को बढ़ावा देती हैं जिसके अनुसार इस्लाम को न मानने वाला काफिर है और काफिरों के सर कलम कर दो, उनकी उंगलियों को काट डालो, उनकी बस्तियों को जला डालो। काफिरों की बिबियों और सम्पत्तियों को लूट लो और लूटा गया माल प्रत्येक मुसलमान के लिये जायज है तथा ऐसा करने वाला ही सच्चा मुसलमान है, ऐसे मुसलमान को जन्नत मिलेगी और उस जन्नत में उसके लिये गद्दे तकिये लगे होंगे, शराब परोसी जाएगी, सुन्दर आँखों वाली अनेकों हुरें होंगी, हुरों के साथ-साथ मन उब जाने पर गिलमान (लोंडे) भी रहेंगे। **इन शिक्षाओं के बूते पर कोई व्यक्ति कैसे सद्भावी सहिष्णु, मानवीय मूल्यों युक्त बन सकता है?**

इन तथ्यों के प्रकाश में स्पष्ट है कि भारत में इस्लाम बलात् फैला इसके लिये जितने मुस्लिम आक्रांता दोषी हैं उससे कहीं अधिक इस धरा के वे लोग भी दोषी हैं जिन्होंने एक मात्र मानवीय सिद्धांतों पर आधारित वैदिक धर्म के स्थान पर अंधविश्वास-पाखण्ड फैलाया। अधर्मी आक्रांताओं को मुँह तोड़ उत्तर देने के समय मुहूर्त आदि नहीं होने, मन्त्रों आदि के जाप मात्र से सब ठीक हो जाने तथा जड़ मूर्तियों की पूजा पाठ से तलवारों का सामना करने का झूठा दिलासा देकर तथाकथित हिन्दू जाति का सर्वनाश करवाया।

मात्र किसी के छू लेने भर से, किसी के द्वारा बलपूर्वक कुछ खिला देने से धर्म नष्ट होने लगा जैसे धर्म-धर्म न होकर छुई-मुई हो गया। हमारे अपने शोषित-पीड़ित तबके जिन्हें जन्मजात शूद्र (अछूत) का प्रमाण पत्र से अलंकृत कर दोयम दर्जे का व्यवहार किया गया जो आज भी निरंतर

thearyasamaj.org

जारी है यह भी अन्य विधर्मी मतों के प्रसार का प्रमुख कारण था और है। जो विधर्मी मतावलम्बियों व आक्रांताओं की जोर-जबरदस्ती, प्रताड़ना के शिकार अज्ञानतावश प्रलोभन व जन्नतों के हसीन सपनों में फँसे अथवा अपने लागों के ऊँच-नीच के भेदभाव से रूष्ट होकर गये अपने भाइयों जिनकों उस समय हमारी सहानुभूति की आवश्यकता थी उनको सहानुभूति के स्थान पर तिरस्कृत किया गया। बाद में भी जब-जब गले लगाने के अवसर आये तब-तब उन्हें दुत्कारा गया तो आखिर वे जाएं तो जाएं कहाँ? विवशता वश दोनों ओर से प्रताड़ित उस वर्ग ने अपनी भलाई इसी में समझी कि जो अपना नवीन आश्रय स्थल है उसे ही मजबूत बनाया जावे ऐसे ही कुछ कारणों से वे भी विधर्मी मतों के संरक्षक-संवर्धक बन गये।

इस प्रकार विधर्मी मतों की जड़ें आर्यावर्त (भारत) में जमी जो निरन्तर फैलती गईं और फैलती जा रही हैं।

इस नब्ज को पकड़ा देव-दयानन्द सरस्वती ने उन्होंने न हिन्दू बनने की बात कही, न मुसलमान बनने की उन्होंने मानव को मनुष्य बनने का संदेश दिया तथा उपाय सुझाया मानव मात्र को मनुष्य बनाने वाले परमपिता परमात्मा प्रदत्त वेदज्ञान को आत्मसात करने का। न तो उन्होंने हिन्दुओं से विशेष स्नेह किया ना मुसलमान तथा अन्य मतावलम्बियों से घृणा की उन्होंने जीवन पर्यन्त सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन किया। इस हेतु उन्होंने मानव मात्र को सत्य का अमृत पान करवाया तथा स्वयं असत्य का विष ग्रहण कर कीर्तिशेष रूप में अमर हो गये।

मानव मात्र में असत्य की खरपतवार तथा वैदिक धर्म के स्थान पर मत-मतान्तरों की फैली विषबेल को नष्ट करने के लिये उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश जैसा अमोघ शस्त्र दिया जिसके प्रथम दस सम्मुलासों में वेदोक्त मनुष्य जीवन निर्माण हेतु मार्ग सुझाया तथा आर्यों में आई विकृति की और ग्यारहवें सम्मुलास में, एक वैदिक धर्म के स्थान पर उपजे मतों-पंथों की समीक्षा बारहवें सम्मुलास में की तथा विदेशी विधर्मी मतों का सच क्रमशः तेरहवें और चौदहवें सम्मुलास में प्रस्तुत किया। इस्लाम का सच सर्वजन के सम्मुख प्रस्तुत करने के बाद भी इस्लाम मत के अनुयायी उनके भक्त थे और अनेकों ऐसे थे जिन्होंने स्वामी जी से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को सत्य मार्ग पर समर्पित कर दिया। एक वही देवदूत ऐसा आया था जो असत्य रूपी मत-मतान्तरों की खरपतवार को समूल नष्ट करने का साहस रखता था। उस जैसा और कोई नहीं हो सकता जो अंग्रेजों के शासन काल में ईसाई पादरियों और अंग्रेज पदाधिकारियों के समक्ष ईसाई मत की धज्जियाँ बिखेर कर रख देता था किन्तु काल के गाल ने उसे हमसे असमय छीन लिया। एक धक्का लगा वेद ज्योति की जलाई गई ऋषि दयानन्द की मशाल को।

उस मशाल को मजबूत हाथों से थामा ऋषि दयानन्द के परम् शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जिनकी मुस्लिमों के मध्य इतनी प्रतिष्ठा थी कि आज विश्वभर के मुसलमानों के आकर्षण का केन्द्र भारत की सर्वोपरी दिल्ली स्थित जामा मस्जिद जिसके इमाम आज भारत के मुसलमानों के स्वयंभू रहनुमा बनकर देश के लोकतांत्रिक पद्धति से निर्वाचित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जो वर्तमान भारत के शाह कहे जा सकते हैं को इस कारण निमंत्रण नहीं दे रहे हैं की भारत के ९७ प्रतिशत मुसलमान नरेन्द्र मोदी को पसन्द नहीं करते। (ऐसी उनकी निजी मान्यता है) **यह भी हो सकता है कि कुरान की वे आयतें जो गैर मुस्लिमों से मित्रता करने हेतु एक सच्चे मुसलमान को रोकती है शायद वो रोक रही हो क्योंकि शाही इमाम एक सच्चे मुसलमान होने का दम भरते हैं।** इसी जामा मस्जिद के एक जलसे में स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रवचन करने का अवसर प्राप्त हुआ था। जिसके पश्चात् उन्हें चाँदनी चौक के समीप फतेहपुरी मस्जिद में भी प्रवचन हेतु ससम्मान बुलाया गया था। **स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी श्रद्धानन्द जी ही ऐसे विरले महापुरुष हुए हैं जिनके मुखारविन्द से मुसलमान भाई भी दत्तचित्त होकर पवित्र वेदवाणी सुनते थे और उनका झुकाव वेदोक्त धर्म के प्रति हुआ था। यही कारण था कि स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा चलाये गये शुद्धि आंदोलन के फलस्वरूप लाखों विधर्मी अपने-अपने मतों को त्याग वैदिक धर्मी बने थे।** उनके द्वारा वर्ष १९३१ में शुद्धि सभा की स्थापना की गई जो आज भी कार्यरत है। उनके शुद्धि आंदोलन से मतांध कट्टरपंथियों में कड़ा रोष था इसी के फलस्वरूप उनकी हत्या कर दी गई।

इस्लाम के प्रचार-प्रसार को रोकने में प्रमुख योगदान देने वाले आर्य **मुसाफिर के नाम से प्रसिद्ध स्वामी दयानन्द के परम् भक्त पण्डित लेखराम हुए हैं** जिनकी भी हत्या विधर्मी मत रूपी इस भू-भाग पर उपजी खरपतवार को नष्ट करने के कारण हुई। इन तीनों विभूतियों ने विधर्मी मतों के प्रचार-प्रसार को रोका ही नहीं वरन् भटक चुके लाखों भाइयों की प्रेम पूर्वक घर वापसी भी करवाई। इन्होंने तथा इनसे प्रेरणा लेकर असंख्य जनों ने विधर्मी मतों से प्रभावित भाइयों को विधर्मी मतों के सच से अवगत करवा कर घर वापसी की। अपने मूल धर्म में लौटे भाइयों तथा अन्य ऋषिभक्तों ने हजारों की संख्या में मिलकर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार कर वैदिक धर्म को पल्लवित किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती, धर्म धुरन्धर

वेद मंत्र एवं भावार्थ

ओ३म् महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा वि राजति।। ऋग्वेद १/३/१२

भावार्थ – जैसे वायु से तरंगयुक्त और सूर्य से प्रकाशित समुद्र अपने रत्न और तरंगों से युक्त होने के कारण बहुत उत्तम व्यवहार और रत्नादि की प्राप्ति में बड़ा भारी माना जाता है, वैसे ही जो आकाश और वेद का अनेक विद्यादि गुणवाला शब्दरूपी महासागर उसको प्रकाश करने वाली वेदवाणी और विद्वानों का उपदेश है, वही साधारण मनुष्यों की यथार्थ बुद्धि का बढ़ाने वाला होता है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैदिक संसार के उद्देश्य

* महान् योगी संन्यासी, महर्षि, अखंड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, अछूत एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खंडन-मंडन के प्रणेता, अंधविश्वास नाशक, पाखंड खंडनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानंद के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
* वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धांतों, ऋषि दयानंद प्रणीत संदेशों को प्रकाशित करना।
* आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धिता, अंधविश्वास, पाखंड, कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
* आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, संदेशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
* आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती और आर्य मुसाफिर पण्डित लेखराम के बलिदान होकर ये विभूतियाँ असमय नहीं गई होतीं तो इस भू-भाग से बलात् थोपी गई विकृत अमानवीय विचारधाराओं की समस्या का बहुत कुछ समाधान हो गया होता। और देश को विभाजन का दंश भी नहीं झेलना पड़ता। इन महान् विभूतियों के असमय इस संसार से प्रस्थान कर जाने से वैदिक धर्म, आर्यावर्त देश तथा सम्पूर्ण मानव जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। इनके जाने के बाद इनके शुरू किये गये कार्यों में शिथिलता आ गई। और इनके स्थान पर इस्लाम की प्रशंसा करने वाले नेहरू-गांधी जी जैसे नेता इस भू-भाग पर उभरे जिन्होंने अपनी अति उदारवादी अथवा तुष्टीकरण की नीतियों के चलते इन विकृत विचारधाराओं को खाद-पानी देकर पोषित किया जिसका परिणाम देश के विभाजन तथा कत्ले आम के रूप में देशवासियों ने भोगा और इस समस्या से कभी मुक्त नहीं होने वाले दो इस्लामी राष्ट्रों का बिजारोपण इस भू-भाग को काटकर स्थायित्व प्रदान कर दिया गया।

'जहाँ सत्य है वहाँ खुदा है' कहने वाले गान्धी ने इस्लाम की प्रशंसा में अनेक बार कसीदे कढ़े। प्रश्न उठता है कि अगर इस्लाम इतना ही मानवीय मूल्यों से युक्त मत है और उसके अनुपात में इस भू-भाग का मूल वैदिक धर्म निम्नतर तो फिर गान्धी जी अपने पुत्र हीरालाल के इस्लाम कबूल कर लेने पर दुखी क्यों हुए? बल्कि उन्होंने भी इस्लाम स्वीकार कर लेना था और देश का बंटवारा धर्म के आधार पर नहीं करते हुए इस सम्पूर्ण भू-भाग को ही इस्लामिक राष्ट्र बनवा देना था कम से कम छद्म धर्म निरपेक्षता के नाम पर इस भू-भाग की मूल धर्म-संस्कृति और उसके अनुयाइयों को तिल-तिल कर मरना तो नहीं पड़ता देश की स्वतंत्रता का सम्पूर्ण श्रेय आँख मूँद कर चन्द गान्धीभक्त गान्धी जी को देते हैं प्रश्न उठता है कि क्या गान्धी जी ने केवल विभाजित हिन्दुस्तान वाले भू-भाग के लिये ही योगदान दिया था? क्या पाकिस्तान, बांग्लादेश वाले भू-भाग के लिये नहीं? फिर क्या कारण है कि गान्धी जी को पाकिस्तान, बांग्लादेश में स्मरण नहीं किया जाता उनकी जन्मतिथि, पुण्य तिथि नहीं मनाई जाती जबकी इन देशों को गान्धी जी का अधिक एहसान मन्द होना चाहिये कि गान्धी जी ने हमेशा उनकी तरफदारी की। अपनी लाश पर देश के बँटवारे की बात कहने वाले गान्धी जी ने धर्म के आधार पर देश के टुकड़े होना स्वीकार कर लिया। आबादी की अदला बदली के नाम पर ५५ करोड़ रूपये और हजारों वर्ग मील भूमि भी दिलवा दी और आबादी की अदला-बदली को रद्द करवा कर हिन्दुओं को नर्क से बद्तर हालत में उन इस्लामी राष्ट्रों में मरने के लिये छोड़ दिया और यहाँ इस्लाम के रहबरदारों को आँखे तरेरने तथा हिंसात्मक गतिविधियाँ चलाने का परमिट दे दिया। जिसे कांग्रेस ने वोटों की राजनीति के चलते भरपूर सहयोग किया। कांग्रेस के पथमार्गी बन कर अनेक राजनैतिक दल तथा राजनेता इतिहास की अनदेखी कर मुस्लिमों की चापलुसी के साथ-साथ तुष्टिकरण की प्रतिस्पर्धा परस्पर करते देखे जा सकते हैं। ये लोग अनेकता में एकता का राग अलापते हैं अनेकता में एकता का राग अलापने वाले या तो स्वयं धोखे में हैं या फिर जानते-बूझते दूसरों को मूर्ख बना रहे हैं क्योंकि अच्छाई और बुराई कैसे एक हो सकते हैं? और आप एक करने की कोशिश करोगे तो एक का अस्तित्व बचेगा एक का समाप्त हो जाएगा जैसे दूध और पानी को एक करोगे तो पानी का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

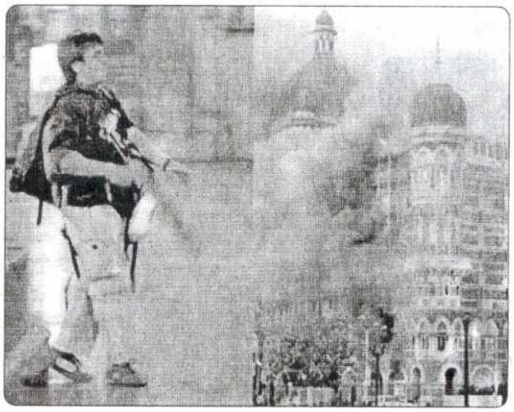

एक सज्जन व्यक्ति और दुष्ट व्यक्ति को एक कैसे किया जा सकता है? और एक करने की कोशिश करोगे तो सीधी सी बात है सज्जनता समाप्त हो जाएगी क्योंकि सज्जनता में आक्रामकता, स्वार्थ, छल-कपट आदि नहीं होने से वह हावी नहीं होगी और दुष्ट व्यक्ति अपनी दुष्टता छोड़ेगा नहीं तो इन दुर्गुणों का भरपुर उपयोग कर दुष्टता अपना साम्राज्य स्थापित कर लेगी। इसी प्रकार **हिंसा और दुर्भावना से युक्त विचारधारा और मानवीय मूल्यों पर आधारित वैदिक धर्म में एकता किस प्रकार हो सकती है? दो परस्पर धुर विरोधी विचारधाराओं में एकता असंभव ह**। समझदारी इसी में है कि दोनों विचारधाराओं का निर-क्षिरविवेक का उपयोग कर निष्पक्षता से गहन अध्ययन किया जावे और जो अमानवीयता से युक्त हो उसका त्याग कर मानवीय मूल्यों से युक्त विचारधारा को स्वीकार करना ही श्रेयस्कर है। गान्धी जी के प्रश्रय के चलते ही सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे लौह पुरुष को प्रधानमंत्री बनाने के स्थान पर अपने-आपको हिन्दू कहलाने में लज्जित होने तथा खान-पान, रहन-सहन से पूर्ण विदेशीयत को अपनाये नेहरू को प्रधानमंत्री बनाया गया जबकी नेहरू से ज्यादा उस समय के कांग्रेसी पटेल को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में थे। क्या कारण है कि आजादी के बाद कांग्रेस नेहरू-गांधी पर सीमट कर रह गई? क्या सरदार वल्लभ भाई पटेल की देश भक्ति और निष्ठा पर किसी को २कोई संदेह है? फिर कांग्रेस के सत्ता में रहते हुए भी पटेल उपेक्षित से क्यों रहे? प्रथम बार सरदार वल्लभ भाई पटेल को यथोचित सम्मान देते हुए प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई में देश ने पटेल के सम्मान में उनके जन्म दिवस ३१ अक्टूबर को एकता दिवस के रूप में मनाया इस अवसर पर नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि **'गान्धी जी पटेल के बगैर अधुरे थे गान्धी जी की दाण्डी यात्रा को सफलता के मुकाम तक पहुँचाने में पटेल का अहम् योगदान है जिसके कारण से गान्धी जी और उनके द्वारा चलाया गया स्वतंत्रता आंदोलन मजबूत हुआ।'** गान्धी जी का नेहरू प्रेम आड़े नहीं आता और पटेल जैसे नेताओं को महत्व दिया जाता तो संभवत: देश का विभाजन भी नहीं होता और इस भू-भाग से बलात् थोपी गई विचारधारा की समस्या का समाधान उसी प्रकार हो गया होता जैसा हैदराबाद रियासत का विलयीकरण आर्य समाज के योगदान से गृहमंत्री रहते हुए श्री पटेल ने किया अन्यथा आज दो नहीं तीन इस्लामिक राष्ट्र इस भू-भाग पर होते। मोदी जी ने यह भी कहा है कि **'लगभग ५५० रियासतों के विलयीकरण के बाद देश सुदृढ़ हुआ है तो उसका श्रेय सरदार वल्लभ भाई पटेल को जाता है अंग्रेजों की योजना थी की उनके जाने के बाद भारत अनेक टुकड़ों में बँट जाए किन्तु पटेल साहब ने प्रेम से समझाकर, नहीं समझने पर जहाँ आँखें दिखाना थी वहाँ आँखे दिखाकर देश को एक सूत्र में पिरोया।'** नि:संदेह मोदी ने जी ने वह सच कहा है जो पटेल की अपनी पार्टी कांग्रेस ने कभी नहीं कहा। वर्तमान कश्मीर समस्या का कारण नेहरू का ढुल-मुल रवैया रहा। नेहरू के कश्मीर के प्रति दोहरे रवैये से असंतुष्ट होकर डॉ. श्यामप्रसाद मुखर्जी ने मंत्रीमण्डल से इस्तीफा दिया। जिन्हें देश में दो विधान (कानून), दो निशान (ध्वज) स्वीकार नहीं था। भारतीय संविधान के अनुसार राजा हरिसिंह जी के द्वारा कश्मीर रियासत का विलयीकरण कर देने के पश्चात् कश्मीर भारत का अभिन्न अंग था इसके बावजूद भारत के लोगों को

thearyasamaj.org

कश्मीर जाने के लिए परमिट बनवाना होता था। इन्हीं दोहरी व्यवस्थाओं के विरोध में उन्होंने अपने को आहूत कर दिया।

इन दिनों दिल्ली के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी के द्वारा अपने उत्तराधिकारी के ताजपोशी समारोह में भारत के सवा करोड़ जनता की नुमाइंदगी करने वाले विश्व ख्याति प्राप्त भारत के वर्तमान शाह (प्रधानमंत्री) माननीय नरेन्द्र मोदी को आमंत्रित नहीं करते हुए भारत देश पर सदैव गिद्ध दृष्टि रखते, अपनी नापाक हरकतों से सम्पूर्ण विश्व में कुख्यात, इन्सानी जज्बातों से दूर, नापाक नियतों-षडयंत्रों से अस्तित्व में आये, नापाक देश के वजीरे आजम नवाज (जो शरीफ नहीं होने से शरीफ कहकर शराफत का मजाक उड़ाने से अच्छा है उसे शरीफ ही न कहना) को आमन्त्रित करना सुर्खियों में है वैसे यह मात्र एक घटना नहीं। बल्कि भारत के मुसलमानों की मानसिकता को उजागर करती है। इस्लामी व्यवस्था में वंश परम्परा से कोई इमाम नहीं होता ना ही कोई शाही और कोई साधारण इमाम होता है। इमाम-इमाम ही होता है शाही घरानों के द्वारा निर्मित मस्जिदों में शाहों (शासकों) द्वारा नियुक्त इमाम शाही इमाम के रूप में जाने जाते थे। इमाम साहब को होश में आना चाहिए कि उनके शाहों के जमाने गुजर गये, अब भारत देश लोकतान्त्रिक देश है। जहाँ बुलेट से नहीं बैलेट से शाह बनते हैं और वर्तमान में शाह बनने के लिये आवश्यक बैलेट (पूर्ण बहुमत) प्राप्त कर नरेन्द्र मोदी भारत के शाह बन चुके हैं। इमाम साहब के बुलाने न बुलाने से भारत के प्रधानमंत्री जी को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। मोदी जी उनकी व भारत की प्रतिष्ठा विश्व में कितनी है जग जाहिर है तथा इमाम साहब मियाँ नवाज को बुलाकर नरेन्द्र मोदी अथवा भारत का क्या बिगाड़ लेंगे? उल्टे विश्व स्तर पर इमाम साहब, मियाँ नवाज और मुसलमान तथा इस्लाम का चेहरा और बेनकाब होगा। वैसे इमाम साहब भारतीय मुसलमानों के स्वयंभू नेता बनते हैं। जैसे सब मस्जिदों के इमाम (नमाज पढ़वाने वाले) होते हैं वैसे ही वे शाहजहाँ उस समय के बादशाह द्वारा बनवाई गई उस विशालकाय मस्जिद के मात्र इमाम हैं जहाँ अधिक तादाद में मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि फलाँ इमाम इतने ज्यादा लोगों को नमाज पढ़वाने से उसका दर्जा अलग हो गया।

भारतीय मुसलमानों की भी बेहतरी इसी में है की वे उन्हें इस्तेमाल कर अपनी रहनुमाई थोपने वाले नेताओं तथा इस्लाम के सच को जानें और अपने मूल की ओर लौटने का प्रयास करें।

दैनिक भास्कर समाचार पत्र दिनांक १३ अक्टूबर २०१४ के पृष्ठ-१४ पर मुस्लिम चरमपंथियों से अपनी जान बचाकर भागते फिर रहे भारतीय मूल के लेखक सलमान रश्दी ने भारतीय-अमेरीकी चरमपंथियों के द्वारा मजहब की भाषा तोड़ने मरोड़ने का आरोप लगाते हुए लिखा कि अमेरीका के ईसाई और भारत के हिन्दू कट्टरपंथियों ने धर्म की भाषा को भयानक तरीके से तोड़ा मरोड़ा है धर्म की विकृत भाषा के कारण ही अब ब्रिटेन के मुस्लिमों का कट्टर पंथ की ओर झुकाव बढ़ रहा है।

रश्दी साहब ने यह तो वही बात कर दी कि **'उल्टा चोर कोतवाल को डांटे'** भाई रश्दी साहब आपके मजहब की बात आपके अपने वालों को समझाने का आपने ही प्रयास किया था उसमें हिन्दू कट्टरपंथियों का क्या दोष? और परिणाम क्या निकला आपकी जान के पीछे हिंदू कट्टरपंथी थोड़े ही पड़े वो आपके ही थे जिन्हें आप लोग अपने वाले कहते हो। रश्दी साहब ने हिन्दू कट्टर पंथ को देखा होगा शायद वे मानव की मूल धर्म-संस्कृति से परीचित नहीं है उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती का सत्यार्थ प्रकाश

मरहूम तथा आँजहानी

-प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु

महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा में उस युग के कई राजनेताओं की चर्चा की है। इनमें से कई पुस्तक के लिखने तक दिवंगत हो चुके थे। इस आत्मकथा का उर्दू अनुवाद डा. आबिद हुसैन ने किया है। इसे गाँधी स्मारक निधि ने प्रकाशित किया है। डा. आबिद हुसैन जामिया मिलिया में पढ़ाते थे।

इस अनुवाद की एक विशेषता अत्यन्त शिक्षाप्रद है। अनुवादक महोदय ने पुस्तक में वर्णित प्रत्येक दिवंगत मुसलमान के लिये **'मरहूम'** शब्द का प्रयोग किया है। इस अरबी शब्द का अर्थ **'रहमत किया गया'** अर्थात् जिस पर अल्लाह मियाँ दया करेगा-जो बहिश्त में स्थान पायेगा। जो नेता मुसलमान नहीं थे (पारसी, सिख, हिन्दू आदि) उन दिवंगत नेताओं के लिए स्थान-स्थान पर **'आँजहानी'** शब्द का प्रयोग किया गया। भूलचूक से भी किसी को मरहूम नहीं लिखा गया। यह पढ़कर मैं चौंक गया। **'मरहूम'** को मुसलमान होने से जन्नत में स्थान मिलेगा। जो-जो समान बहिश्त में होता है, वह सब कुछ उन्हें मिलेगा। **'आँजहानी'** का स्थान दोजख (नरक) में होगा। उसे दोजख की आग में जलना होगा। **इसका सीधा अर्थ यह है कि महात्मा गाँधी यदि स्वयं को कहीं दिवंगत लिख जाते तो यह अनुवादक उनको भी दोजख में कोई झोंपड़ी या कमरा आवंटित कर देता।**

खुशवन्तसिंह आँजहानी-अभी कुछ मास पूर्व वयोवृद्ध पत्रकार श्री खुशवन्तसिंह का निधन हुआ है। उनको राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति दोनों ने श्रद्धांजलि दी। मैंने उर्दू दूरदर्शन वाहिनी में दोनों की श्रद्धांजलि सुनी और पढ़ी। दोनों में वही भेद पाया जो महात्मा गाँधी की आत्मकथा के उर्दू संस्करण तथा अन्य भाषाओं के संस्करण में है। उपराष्ट्रपति डॉ. हमीद अन्सारी जी ने श्रीयुत् खुशवन्तसिंह को **'आँजहानी'** कहकर श्रद्धांजलि दी। **भले ही खुशवन्तसिंह धर्मनिरपेक्षता की माला फेरने वालों में बहुत आगे थे परन्तु उपराष्ट्रपति उनको अल्लाह की दया तथा बहिश्त से वंचित करते हैं। कलमा न पढ़ने तथा सिख होने से उनका स्थान दोजख में रहेगा। प्रसंग हो या न हो आज कई दलों व अनेक नेताओं को धर्मनिरपेक्षता का दौरा पड़ता रहता है। ऐसे सब लोग स्मरण कर लें कि इन में जो मुसलमान नहीं, वे दोजख की आग का ईंधन हैं।** यह मेरा मत नहीं, डॉ. अन्सारीजी जैसे गुणियों का अटल विश्वास है।

हमारा मत तो निर्विवाद है। ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है पापी सब मत में दुःख ही भोगेगें। धर्मात्मा जो भी है, जिस भी मत में हैं- वे सब सुख पायेंगे। अवस्था विशेष का नाम स्वर्ग व नरक है। सत्कर्म से स्वर्ग तथा दुष्कर्म से नरक दुःख ही भोगना पड़ेगा। **ऐसा स्वस्थ, स्पष्ट, वैज्ञानिक तथा असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण वेदवेत्ता ऋषि दयानन्द ने इस युग में विश्व को दिया है। क्या इस देश के बड़े-बड़े राजनेता महर्षि दयानन्द जी महाराज की इस महानता तथा विलक्षणता को स्वीकार करके इस प्रचारित करने का साहस दिखायेंगे? -'परोपकारी' मासिक, अजमेर से**

thearyasamaj.org

पढ़ना चाहिए उन्हें पता लग जाएगा कि वैदिक धर्म, हिन्दू कट्टर पंथ और इस्लाम का सच क्या है? हालांकि उन्होंने खुले मन से स्वीकार किया है कि **'समस्याओं की सबसे ज्यादा मौजूदगी इस्लामी जगत् में है इसकी जड़ें इस्लाम के भीतर से निकले सलाफी मूवमेंट में है यह मूवमेंट रक्तपात और जंग की भाषा वाली विचारधारा की बात करता है इस तरह के मूवमेंट का दुनियाँ भर में सऊदी अरब समर्थन करता है।'**

इस्लाम का सच तो यही है वे नहीं जानेंगे तो और कौन जानेगा? और अगर उन्हें महसूस होता है की अमेरीका के ईसाई और भारत के हिन्दू कट्टरपंथियों ने धर्म की भाषा को भयानक तरीके से तोड़-मरोड़कर विकृत रूप में पेश किया है तो उनको और उनके जैसे इस्लामी जगत् के बुद्धिजीवियों को उन कट्टरपंथियों की विकृत भाषा का मुँह तोड़ जवाब देकर इस्लाम के असली मानववाद का चेहरा जो शायद कहीं छुप गया है उसे सामने लाना चाहिये। **अन्यथा इस्लाम की स्थापना से आज तक तो दुनियाँभर में जिहाद के नाम पर कत्ले आम, महिलाओं, बच्चों के साथ बर्बरता का चेहरा ही नजर आया है।**

प्रतिक्रिया पर प्रतिक्रिया

इसी समाचार पत्र के पृष्ठ-१० अभिव्यक्ति पेज पर टाईम मैग्जिन के एडिटर एट लार्ज जनाब फरीद जकारिया की प्रतिक्रिया **'इस्लाम को लेकर सोच कैसी हो?'** जो उन्होंने टेलिविजन एंकर बिल माहर द्वारा अपने साप्ताहिक शो के दौरान की गई घोषणा कि **'मुस्लिम विश्व में बहुत कुछ आई.एस.आई.एस. जैसा है'** और शो के अतिथि सैम हैरिस ने उनसे सहमती जताते हुए **'इस्लाम खराब विचारों का उद्गम है'** कहने पर व्यक्त की है।

फरीद जकारिया जी ने अपनी प्रतिक्रिया में माहर और हैरिस के प्रस्तुतिकरण को भौंडा सरलीकरण तथा भौंडी अतिश्योक्ति करार देते हुए माहर और हैरिस को निर्लज्ज सरलीकरण का दोषी करार दिया है।

आपने इस्लाम को हिंसक और प्रतिक्रियावादी बताने के खिलाफ दी जाने वाले सारी दलिले जानने का दावा करते हुए कहा है कि १.६० अरब इस्लाम के अनुयायी है तथा भारत और इंडोनेशिया में करोड़ों मुस्लिम रहते हैं जो इस खाँचे में फिट नहीं बैठते।

हालाँकि आपने ईमानदारी से स्वीकार किया है कि **'आज इस्लाम के साथ समस्या तो है इस बात से कौन इन्कार कर सकता है। ऑकड़ें इसकी गवाही देते हैं दुनियाँ के जिन भी हिस्सों को आधुनिक दुनियाँ से ताल-मेल बैठाने में दिक्कत आ रही है वहाँ अनुपात से ज्यादा मुस्लिम हैं इसमें कोई शक नहीं है। पिछला इतिहास देखें तो पता चलेगा कि वर्ष २०१३ में आतंकवादी हमले करने वाले १० शीर्ष गुटों में ७ मुस्लिम गुट हैं इसी प्रकार जिन शीर्ष १० देशों में आतंकवादी हमले हुए थे उनमें से सात में मुस्लिम बहुसंख्यक हैं। इस बीच व्यू रिसर्च सेन्टर ने धार्मिक स्वतन्त्रता को लेकर सरकारें जो पाबंदियाँ लगाती हैं उसके आधार पर देशों को रेटिंग दी है, इस रिसर्च एजेंसी ने पाया कि सबसे ज्यादा पाबंदियाँ लगाने वाले देशों में से १९ देशों में मुस्लिम बहुसंख्यक हैं। अपना धर्म छोड़ने के खिलाफ, जिन २१ देशों में कानून है उन सारे देशों में मुस्लिम बहुसंख्यक हैं।'** इन समस्त आकड़ों को प्रस्तुत करने के बावजूद भी जकारिया जी लिखते हैं कि कहना होगा कि आज इस्लाम में अतिवाद कैंसर की तरह फैला हुआ है। मुस्लिमों में ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं जो हिंसा और असहिष्णुता के पैरोकार हैं और महिलाओं तथा अल्पसंख्यकों के प्रति प्रतिक्रियावादी रूख रखते हैं। सारी दलील में **'आज का इस्लाम'** यह प्रतिवाद महत्वपूर्ण है यानी इस्लाम आज किस दौर से गुजर रहा है उसे देखना होगा माहर और हैरिस के विश्लेषण की आधार भूत समस्या यह है कि वे इस्लाम में अतिवाद की हकीकत को लेकर उसका वर्णन ऐसे करते हैं जैसे यही सब कुछ इस्लाम में आधारभूत ढंग से अंतर्निहित है, उसमें गूंथा हुआ है।

माहर कहते हैं **'इस्लाम एक मात्र ऐसा धर्म है जो माफिया की तरह व्यवहार करता है यदि आपने कोई गलत बात कह दी, कोई गलत चित्र बना दिया या गलत किताब लिख दी तो वह आपको मार डालेगा।'** जहाँ तक ऐसे घटनाओं में क्रूरता का सवाल है वे बिल्कुल सही कह रहे हैं लेकिन इसे **'कुछ मुस्लिमों'** की बजाय इस्लाम के साथ जोड़ना गलत है यदि १.३० अरब मुस्लिम इसी तरह सोच रहे होते तो माहर अब तक मारे जा चुके होते। कहने का तात्पर्य यह है कि **इस्लाम की वस्तुस्थिति के आंकड़ों को स्वीकार करने के बावजूद जकारिया जी यू टर्न लेते हुए इसे 'कुछ मुस्लिमों' की करतूत करार देते हुए मुस्लिम जगत् को किसी दौर में खुले आधुनिक सहिष्णु और शांतिपूर्ण बताते हैं तथा वे कहते हैं कि धर्म में आधार भूत समस्या नहीं है।** और चीजे एक बार बदल भी सकती है उसे सकारात्मक रूप दिया जा सकता है। वे माहर और हैरिस की टिप्पणी को कड़वा सच करार देते हुए भी सरलीकृत और अतिश्योक्ति पूर्ण कर देते हुए परामर्श देते हैं कि सार्वजनिक क्षेत्र के बुद्धिजीवियों के लिये एक और काम है-अच्छे के लिये बदलाव लाना। अच्छाई को सामने लाना। विश्व कल्याण करना। वे माहर और हैरिस पर आक्षेप लगाते हुए प्रश्न करते हैं कि क्या वाकई उन्हें लगता है कि इस्लाम की तुलना माफिया से करने से ऐसा होगा? हैरिस कहते हैं कि वे चाहते हैं कि ऐसे मुस्लिम अपने धर्म में सुधार लाएँ जो आस्था को गंभीरता से नहीं लेते। तो इस्लाम को सुधारने की रणनीति यह है कि १.६० अरब मुस्लिमों से यह कहना कि उनका धर्म दुष्टता पूर्ण है और उन्हें उसे गंभीरता से लेना बन्द कर देना चाहिये।

जकारिया जी ईसाई धर्म में किसी समय में व्याप्त बुराईयों का जिक्र करते हुए लिखते हुए आशा व्यक्त करते हैं कि जिस प्रकार ईसाई धर्म के बुद्धिजीवियों व धर्मशास्त्रियों ने उदार और सहिष्णु तत्वों को प्रोत्साहन देकर ऊपर उठाया उसी प्रकार किसी समय में इस्लाम में भी सुधार आयेगा वे माहर से अपेक्षा करते हैं कि खबर बनाने की बजाय सुधारवादी प्रयास करें।

सम्पूर्ण क्रिया-प्रतिक्रिया को हम वैदिक दृष्टिकोण पर देखें तो प्रतित होता है कि धर्म आखिर क्या है? क्या धर्म मनुष्य के जीवन में सुधार लाने वाला माध्यम है अथवा मनुष्य धर्म में सुधार लाता है? वेद आदि शास्त्रों के अनुसार धर्म वह ईकाई है जो मानव के अन्दर मानवीय गुणों का आधान करती है अर्थात् उसे मानवीय गुणों से युक्त मनुष्य बनाती है, ऐसी ईकाई में संकिर्णता नहीं होकर व्यापकता होती है जभी तो वैदिक धर्म 'वसुधैव कुटुम्बकं' अर्थात् वसुधा भर के लोग एक परिवार की धारणा की प्रस्तुत करता है। फरीद जकारिया जी एक सुशिक्षित बुद्धिजीवी व्यक्ति हैं वे इस्लाम की उत्पत्ति, इस्लाम की शिक्षा, इस्लाम का भारत और दुनियाँभर में प्रचार-प्रसार नहीं जानते ऐसा संभव ही नहीं है किंतु वे बड़ी चतुराई से इस्लाम की मूल समस्या को **'कुछ मुस्लिमों'** के मत्थे मढ़कर इस्लाम को पाक साफ होने का प्रमाण पत्र देने की असफल कोशिश कर रहे हैं।

उनसे प्रश्न है कि क्यों 'कुछ मुस्लिम' इन अमानवीय कार्यों में संलग्न है? क्या उन्हें इस्लाम ने मानवीयता का पाठ नहीं पढ़ाया?

क्या फरीद जकारिया जी ने इस्लाम के भारत आगमन का मध्य युगीन इतिहास नहीं पढ़ा? **भारत के करोड़ों मुसलमान जिनकी दुहाई जकारिया जी इस्लाम के सहिष्णु और उदारवादी होने के सबूत के तौर पर**

शेष पृष्ठ-१२ पर....

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती

साभार - आर्य धर्मेन्द्र जीवन
- राव साहब रामविलास शारदा

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १३१ वें निर्वाण दिवस पर हम महर्षि दयानन्द सरस्वती की मृत्यु तथा शोक सभाओं के जो वृतांत समाचार पत्र-पत्रिकाओं में उस समय प्रकाशित हुए थे, उनमें से कुछ को महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र पुस्तक 'आर्य धर्मेन्द्र जीवन' में संकलित किया गया है उसी में से लाहौर से प्रकाशित 'देशोपकारक' का वृतांत प्रस्तुत कर रहे हैं जो मुस्लिम भाइयों में स्वामी जी की प्रतिष्ठा को स्पष्ट करता है - संपादक

जब कि श्रीमान् स्वामी जी महाराज की इस ज़हानफ़ानी से रहलत फ़र्माने की खबर वहशत असर मुवर्रिखे ३० अक्टूबर सन् ८३ बज़रिये तार आर्यसमाज मुलतान में पहुँची, तो फ़ौरन मातिमी नोटिस बग़रज़ इजहार रंज व अलम जारी की गई। मुताबिक उसके एक बड़ा मज़मा समाज के मकान में जमा हुआ, जिनमें अलावा मेम्बरान समाज के बाशिन्दगान् शहर अहलेहिन्द व अहले इस्लाम बकसरत शामिल थे। उस वक्त सबसे पहिले **एक दुकानदार ने बावजूद न होने मेम्बर समाज निहायत सोज व गुदाज़ से स्वामी जी महाराज के औसाफ हमीदा बयान करके निहायत रंज निस्बत वफात उनके जाहिर किया। बाद अजां लाला चन्दाराम सेक्रेटरी व काशीप्रसाद वाइसप्रेसीडेंट वगैरह चन्द साहबान ने अपनी ऐसी पुरसोज तकरीरें सुनाई कि जिनसे तमाम हाजरीन जलसा फूट-फूट कर रो उठे और समाज निहायत आह व जारी से बर्खास्त हुआ। इस तौर पर कई तारीखों में यह मातिम वहाँ होता रहा और उसमें हिन्दू व मुसलमान बराबर जमा हो कर गमगीन होते रहे। बतौर नमूना यहाँ पर हम मुन्शी बाजिदअली साहब सेक्रेटरी अंजुमन इस्लामिया का एक मजमून जो उन्होंने लिखा हुआ सुनाया था, बजिंसही हवाले कलम करते हैं।**

ऐ! आर्यावर्त! तेरी बदकिस्मती पर मुझे रोना आता है।

ऐ! आर्यावर्त! तेरी यतीमी पर मेरा खून होता है।

ऐ! आर्यावर्त! तेरी बेकसी पर मुझे गैरत आती है।

ऐ! आर्यावर्त! तेरी बेपरोंवाली पर मेरा दिल कुम्हलाया जाता है। कैसी जल्दी तेरे प्यार के सरचश्मे को बन्द कर दिया गया।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि हमशीरख्वार परवरिश पाएँ।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि हम **इन वाही और तबाही के फन्दों से** निकलें।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि हम बेजा बेवजह बेजरूरत और बेसूद कयूद से रिहाई पावें।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि हम उन **वाहियात रस्मियात के फन्दों** से निजात पाएँ।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि **हम आपस के निफाक को** दूर करें।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि **हम बनीनो इन्सान को अपना भाई समझकर** उनसे मोहब्बत करना सीखें।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि हम उलूम अलविया की तहसील करें।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि **हम सच्चे धर्म को फिर सीखें।**

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि **हम अपना खोया हुआ नाम** फिर हासिल करें।

ऐ खुदा! क्या तुझे यह मंजूर न था कि **हम उस पाकधर्म को सीखकर तेरी उन आला नामाश्र की कैफियत उठाएँ जो तूने अपने बन्दों के वास्ते मखसूस की है।** नहीं-नहीं, यह सब कुछ तेरी मर्जी के मुताबिक और तेरी मन्शा के मुआफिक हो रहा था। फिर क्यों तूने हमको इकलखत इस तरह बेसरो सामान कर दिया यानी **हमारे सच्चे हामी और दाही श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज को, जो हमें यह सब कुछ सिखाते थे,** ३० ता. अक्टूबर सन् ८३ ईस्वी के ६ बजे शाम को बुला लिया। दिवाली की रात को मसनूई चिरागों से रोशन थी लेकिन हकीकी आफताब आलमताब गरूब हुआ। **हम बिल्कुल नादान थे, वह हमें हर एक चीज शिनाख्त कराता था। हम कमताकती से उठ नहीं सकते थे वह हमें उठाता था। हम बेमायगी इल्म से बात नहीं कर सकते थे वह हमें बोलना सिखाता था। हम एक दलदल अजीम में फसे हुए थे, वह हमें उसमें से निकालता था और खुश्क जमीन पर लाता था। हम रसूमात की बेड़ियाँ पैरों में और तास्सुबकी हथकड़ियां हाथों में दिय हुए थे, वह हमको उनसे निजात देता था। हम अपने भाइयों से हिकारत करते थे, वह हमको रिफाकत सिखाता था। हम अपनी आँखों पर पर्दे और दिलों पर मोहरें रखते थे, वह उनको उठाता था। हम बईहमाँ कुछ अपने तई समझे हुये थे, वह हमें बताता था कि धर्म के वास्ते जाहिरी जहान फिजूल है। हम उस गलत इम्तियाज को सबाब जानते थे, उसने उसको ऐब साबित कर दिया। हमने अपना नंग व नामूस गंवा दिया था, वह हमें फिर दिलाना चाहता था।**

ऐ खुदा! हम तुझसे बहुत दूर हो गये थे, वह हमें तुझसे मिलाना चाहता था। लेकिन

ऐ खुदा! तू ही जाने तेरे दिल में क्या आई कि तुने **उसको हमसे इतनी जल्द जुदा कर दिया!!!**

तेरी बातें तू ही जाने। अब भी रहम कर। ●

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में

बोधोत्सव का आयोजन

दिनांक १६ से १८ फरवरी २०१५ तक

आर्यजनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भाँति आगामी वर्ष में **महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन १६-१८ फरवरी २०१५ तक किया जायेगा।** आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

-रामनाथ सहगल, मन्त्री

thearyasamaj.org

वैदिक ऋषिका - इन्द्राबृहस्पती

इन्द्रा ब्रहस्पती ऋषि बृहस्पति परिवार की महिला है। वे यजुर्वेद में बता रही है कि चक्रवर्ती सम्राट को विद्वान् किस प्रकार से उपदेश करें। यजुर्वेद अध्याय-९ के पहले मंत्र की वे ऋषिका है।

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा।।

पदार्थ - (**देव**) दिव्य गुण युक्त (**सवितः**) सम्पूर्ण ऐश्वर्य सम्पन्न राजन्! आप (**भगाय**) सब ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए (**स्वाहा**) वेद वाणी से (**यज्ञम्**) सबको सुख देने वाले राज धर्म का (**प्र, सुव**) प्रचार और (**यज्ञपतिम्**) राज धर्म के रक्षक पुरुष को (**प्रसुव**) प्रेरणा कीजिए जिससे (**दिव्यः**) प्रकाशमान दिव्य गुणों में स्थित (**गन्धर्वः**) पृथ्वी को धारण और बुद्धि को शुद्ध करने वाला (**वाचस्पतिः**) पढ़ने-पढ़ाने और उपदेश से विद्या का रक्षक सभापति राज पुरुष है वह (**नः**) हमारी (**केतम्**) बुद्धि को (**पुनातु**) शुद्ध करे और हमारे (**वाजम्**) अन्न को सत्य वाणी से (**स्वदतु**) अच्छे प्रकार भोगे।

भावार्थ - इस मंत्र में राजा अथवा सम्राट को सम्बोधन कर कहा गया है कि है राजन्! आप सम्पूर्ण श्रेष्ठ गुणों से युक्त हैं। आप सम्पूर्ण ऐश्वर्यों के स्वामी हैं। कृपया आपकी पूजा भी ऐश्वर्य युक्त हो इसलिए अपने राज पुरुष को प्रेरणा दीजिए कि वह वेद का प्रचार करते हुए लोगों को राज धर्म का उपदेश करें। वेद प्रचार द्वारा वह हमारी बुद्धियों को शुद्ध करें जिससे कि हम भी ऐश्वर्यशाली बनें और फिर हमारे शुद्ध अन्न का वह भी सत्य वाणी से भोग करे।

इस विवरण से सिद्ध हुआ है कि इन्द्राबृहस्पती राजधर्म की ज्ञाता थी और जानती थी कि जब तक राज्य की व्यवस्था ठीक नहीं होगी प्रजा दुःखी रहेगी। यदि राज्य की व्यवस्था ठीक होगी तो प्रजा में शान्ति रहेगी और उसका तेजी से विकास होगा।

-शिवनारायण उपाध्याय

ये विश्वे अमृतस्य पुत्राः "विश्वकर्मा बन्धुत्व"

ईश्वर की उपासना द्वारा सनातन ब्रह्म को विद्वान् पुरुष द्वारा उपासना से जोड़कर दिव्य लोकों को अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कराओ प्रभु! ऐसा आदेश निम्न वेद मंत्राश द्वारा द्रष्टव्य हुआ है विदित हो।

"युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः।।

यजु. ११/५

भावार्थ :- परम कृपालु परमात्मा अपने भक्तों पर कृपा करते हुये कहते हैं- हे अमृत पुत्रों! मेरे वचन को बड़े प्रेम से सुनो। आप लोग मुझको बारंम्बार नमस्कार करते और मेरा ही मन में ध्यान धरते हो, इस प्रकार इस लोक में कीर्ति और शान्ति दाता आप ही हो अन्य नहीं। मोक्ष के सुख को प्राप्त भी आप लोगों के लिए ही नियत है, इनको प्राप्त होकर सदा आनन्द में रहो।

अर्थात् "पूर्व्यं ब्रह्म - मैं सनांतन ब्रह्म हूँ और वाम् - आप गुरु शिष्य दोनों को युजे - उपासना से जोड़ता हूँ, इससे आप लोग कीर्ति, यश की प्राप्ति कराओ, अर्थात् सर्वोपरि कर्म की ही उपासना "**पर-ब्रह्म**" की सच्ची उपासना गाई है। वेद में जड़ पूजा का निषेध है जैसे औजार जड़ ही रहेंगे परन्तु इनके द्वारा बनाई वस्तु (चैतन्य) हमें और अन्य संसार को चमत्कृत व अचम्भित करती आ रही है, जिससे संसार सुखी व समृद्धि को प्राप्त होता रहा है।

कर्मप्रधानता - भगवत गीता में कर्म योगी के लिये बताया है -

"यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्म बन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसंगः समाचार"।। गी. १/३/९

अर्थात् यज्ञ के निमित्त - लोकहित की कामना से किये गये कर्म बिना यह संसार प्राणियों का समुदाय (कर्म बन्धनः) कर्मों से बांधा जाता है। हे कुन्तीपुत्र! तदर्थ उस (यज्ञ) के लिये आसक्ति छोड़कर (कर्म समाचारः) कर्मकर। ज्ञानी के लिये कर्म की आवश्यकता है अज्ञानियों के निमित्त बगैर फल की इच्छा ज्ञान देना ही कर्म बताया, परन्तु ये आलसी बने रहेंगे और कर्म को छोड़ देंगे। ज्ञानी के लिये तथा अज्ञानियों के लिये कर्म करना आवश्यक है। उसमें आसक्ति भाव नहीं आना चाहिये, तभी वह निष्काम कर्मयोगी कहलाने का पात्र बनेगा। आसक्ति भाव आने से राग द्वेष उत्पन्न होकर क्रोध बढ़ता है।

मनुष्य जन्म की उपयोगिता - विश्व को आदि काल से हम जिस ज्ञान की परिभाषा को मूल स्वरूप में अथर्ववेद ने यों व्यक्त किया है विचार करें।

"त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने।।

अथर्व. १/१/१७२

अर्थ - आप जगत्पिता सब यज्ञों के ग्रहण करने वाले, यज्ञों के स्वामी हैं अर्थात् श्रद्धा से किये यज्ञ, होम, तप, ब्रह्मचर्य, वेदपठन, सत्यभाषण, ईश्वर भक्ति आदि उत्तम-उत्तम काम आपको प्यारे हैं। अर्थात् मानव जन्म में ही परमात्मा का यथार्थ ज्ञान हो सकता है। पशु-पक्षी आदि अन्य योनियों में तो आहार, निद्रा, भय, राग, द्वेषादि ही वर्तमान में है, न इन योनियों में यज्ञ आदि उत्तम-उत्तम काम कर सकते हैं और न आप को ज्ञान ही हो सकता है।

"ज्ञान से ही उत्पादक के बिना कोई जड़ प्रकृति रूप वस्तु स्वयं उत्पन्न नहीं हो सकती है।"

न्यायपूर्वक राज्य का पालन करना, शिक्षा, कल-कारखानों उद्योग-धन्धों के द्वारा-ऋ. १/९/२ राष्ट्र की श्रीवृद्धि और समुन्नति का नाम "**अवश्मेघ यज्ञ**" है, नित्यप्रति इस जगत् में यज्ञ हो रहा है इसका लाभ भी यथार्थ ज्ञान से मिल रहा है, जैसे सौर्य ऊर्जा, पवन चक्कि से ऊर्जा, जल-विद्युत परियोजना आदि द्वारा विभिन्न स्त्रोतों से। विज्ञानियों के अनुसंधान की कठिन साधन ही अमृतपुत्रों को भगवान विश्वकर्मा द्वारा सुखों की वर्षा कर रहा है।

वेद ने गाया है "**स्वस्ति पंथा मनु चरेम**" अर्थात् हम कल्याण मार्ग के पथिक बनकर उभरते रहे, जो सच्ची उपासना है, भक्ति है।

- पुरुषोत्तमदास गोठवाल
एस-८ बी, कबीर मार्ग, बनीपार्क, जयपुर-३०२०१६
दूरभाष - ०१४१-२२०५९९१

thearyasamaj.org

परमात्मा की ओर पदार्पण

– मृदुला अग्रवाल
१९ सी, सरत बोस रोड़, कोलकाता-२०
चलभाष-०९८३६८४१०५१

परमात्मा की ओर पदार्पण के लिये सर्वप्रथम स्वयं को सुधारना अति आवश्यक है।

''बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।''-सन्त कबीर।

हम स्वयं के दोषों को ढूंढकर उन्हें क्यों नहीं सुधारते? हम सब एक-दूसरे को उपदेश देते हैं, सलाह-मशवरा देते हैं, पर क्या कभी खुद के अन्त:करण में झाँक कर देखते हैं कि हम संसार से क्या चाहते हैं या हम हृदय में क्या महसूस करते हैं? हम ईश्वर से क्या चाहते हैं, ईश्वर-तत्व को जानते भी हैं कि नहीं? परमात्मा का हमारी आत्मा से क्या सम्बन्ध है? 'आत्मा से परमात्मा की ओर पदार्पण करते समय स्वयं के कर्मों में निश्चयात्मक बुद्धि का प्रयोग करते भी हैं कि नहीं? प्रभु पर अपने अधिकार की भावना रखना बहुत जरूरी है। यह सोचना कि प्रभु मेरा है, मैं उसका हूँ, इस बीच में और कोई नहीं है। किसी में भी कोई बुराई नहीं है। ईश्वर कल्याणमय है, मंगलमय है, आनन्दमय एवं मधुमय है। उसमें जो गुण है वही तो सब पर बरसेगें। हमें ईश्वर के गुण ग्रहण करने चाहिये।

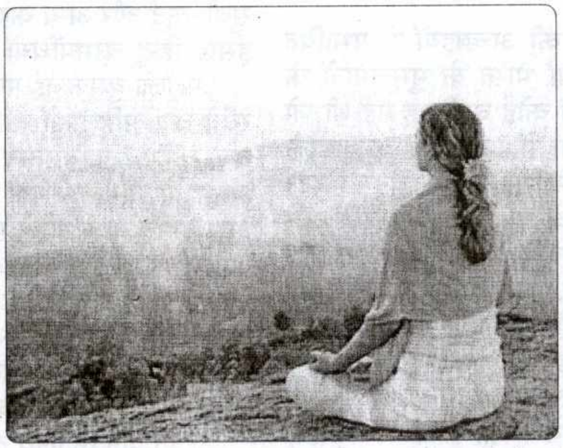

''गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्।
पातं सोमगृतावृधा।।''-सामवेद, मन्त्र-६६५

भावार्थ-''स्तुति करते हुए वेदज्ञान और ऋतम्भरा बुद्धि से प्रकाशमान विद्वान् और योगीजन ज्ञानरूप अग्नि के द्वारा वेदज्ञान के कारण परमेश्वर की शरण में स्थिति पाते हैं तथा आनन्दरस का पान भी करते हैं।'' **''जीव-प्रकृति-परमात्मा''** = जीवात्मा से परमात्मा की ओर पदार्पण करते वक्त प्रकृति मध्य में होती है। प्रकृति हमें कई रूपों में आनन्द देती है। हमारे कल्याण के लिये बहुत सारे पदार्थ प्रदान करती है, जैसे-वायु, जल, अग्नि, आकाश, पृथिवी, सूर्य, वनस्पति, पशु इत्यादि। हम अपने-आप को अपने सबसे निकट सम्बन्धियों से दूर कर लेते हैं, जो कि हमें सिर्फ प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं। जैसे, **५ तत्व** = वायु, अग्नि, जल, पृथिवी एवं आकाश। व्यक्ति का भौतिक निर्माण इन्हीं ५ तत्वों से होता है, इसीलिये हम सब या प्रत्येक व्यक्ति सबसे ज्यादा निकट इन्हीं के साथ होते हैं। मन एवं शरीर को प्रकृति के निकट रखकर उसका सदुपयोग करें, स्वस्थ रहें। जैसे, ऋग्वेद, मण्डल-१, सूक्त-९०, मन्त्र-५,६,७ एवं यजुर्वेद, अध्याय-१३, मन्त्र-२७,२८,२९ में लिखा है:-

''मधुवाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।।''
''मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।।''
''मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।''

अर्थात्-जब बसन्त ऋतु आता है, तब पुष्प आदि की सुगन्धों से युक्त वायु, मधुर रस से युक्त जल (वर्षा) एवं औषधियाँ, सम्पूर्ण वातावरण में फैले रहते हैं। ऐसे में मनुष्य का घूमना-फिरना पथ्य होता है।

इस समय रात्रि-प्रात:काल, प्रकाश, पृथ्वी की रज, सब कुछ मधुर गुणों से युक्त होते हैं, जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिये अति उत्तम हैं।

पशु-पक्षी भी मधुर-मधुर शब्दों को बोलते हैं और सब प्राणी आनन्दित होते हैं। पीपल आदि वनस्पति, सूर्य, किरणें सब कोमलतापूर्ण होती है। ऐसे समय में यज्ञों का अनुष्ठान भी सुखकर होता है।

उद्यन्नादित्यः क्रिमीन् हन्तु निम्रोचन् हन्तु रश्मिमीः।
ये अन्तः क्रिमयो गीव।। अथर्व.-२.३२.१

भावार्थ – प्रात:काल और सायंकाल में सूर्य की कोमल किरणों और शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु के सेवन से शारीरिक रोग के कीड़ों का नाश होकर मन हृष्ट और शरीर पुष्ट होता है। उदय और अस्त होते हुए सूर्य के समान मनुष्य बालपन से बुढ़ापे तक अपने दोषों का नाश करके सदा प्रसन्न रहे।

हम इन निकट सम्बन्धियों को भूल जाते हैं। चाँद की चांदनी (शीतलता), सूर्य का प्रकाश (तेज, ओज, ज्ञानरूपी उजाला) सबको भूलकर स्वयं को सम्पत्ति एवं सन्तति में लपेटे रहते हैं। बाहर की हरी-भरी भूमि, घास, वृक्षों की हरियाली, इन सबको छोड़कर मकान-घर-फ्लैट आदि को सजाने, संवारने में अपना अमूल्य समय गंवा देते हैं। **जो समय भगवान को पाने में, उसकी भक्ति में, उसका स्मरण करने में, ध्यान करके उसे अपने हृदय में विराजमान करने में लगाना चाहिये, उस समय को हम व्यथ की वार्तालाप करने में, एक-दूसरे की निन्दा करने में, स्वयं की प्रशंसा करने में-इन सब में लगा देते हैं।** यह नहीं सोचते कि यह दुर्लभ मानव-जीवन दुबारा मिलेगा की नहीं। इसी जीवन में अपने अनमोल समय का सदुपयोग करें। संसार की कृत्रिमता को छोड़कर परमात्मा का वास्तविक आनन्द पाने की कोशिश करें। वेदरूपी राजपथों पर चलकर जीवनमुक्त होकर आनन्द की श्वासें ले, आनन्द भोगें। मनुष्य अविवेक के कारण मूढ़ होकर अपनी और संसार की हानि कर डालता है। वह पुरुष अपने प्रमाद पर पश्चाताप कर और पाप-कर्म छोड़कर ईश्वर-आज्ञा का पालन करके आनन्द भोगे।

''अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये।
अवावशन्त धीतयः।।''-सामवेद, मन्त्र-६५८

भावार्थ-''प्राप्त करने योग्य नित्य परमेश्वर की शरण में उपस्थित होकर ज्ञानीजन अमृत की वर्षा करने वाले आनन्दमय कोष को भली-भांति खोलते हैं और ब्रह्मानन्द की कामना भी करते हैं।'' चमक दमक वाले भौतिक सुख के लिये अपना ईश्वर प्राप्ति रूप ब्रह्मानन्द को दाँव पर लगा देना कहाँ की शाबासी है। जब तक त्याग की भावना प्रबल न हो, परमात्मा से मिलने की इच्छा स्वयं की आत्मा को झकझोर न दे, संसार की सम्पत्ति एवं सन्तति से वैराग्य उत्पन्न न हो, तब तक जीवन का आन्तरिक आनन्द मधुमय नहीं हो सकता। स्वयं का सुधार नहीं हो सकता। मनुष्य जीवन के वास्तविक आनन्द की उपलब्धि नहीं हो

thearyasamaj.org

सकती है। हम क्यों भूल जाते हैं कि परमात्मा के पास सिर्फ आनन्द ही आनन्द है। हम अपने आप को परमात्मा का प्रतिनिधि समझकर प्रकृति के ५ तत्व एवं संसार की प्रत्येक वस्तु का सदुपयोग करें तो सत्य-साधना होगी। श्रेष्ठता का अहंकार, धन-संचय करना, सांसारिक वस्तुओं पर अपना अधिकार मानना जो आज है कल नहीं है, है तो सब परमात्मा की ही जो सर्वत्र व्याप्त है।

स्वामी दयानन्द जी के अनुसार सत्य पर चलना, असत्य का त्याग करना, स्वयं को सुधारने का सबसे उत्तम मार्ग है। कल्याणमय जीवन-पथ, सत्य-पथ ही है।

''उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम्।
देवन्देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।''-यजु. ३५/४

सूर्य के समान तेजपुंज प्रकाशमान, ज्योतिस्वरूप परमात्मा के दर्शन की अभिलाषा, परमात्मा के निकट रहने की इच्छा एवं अज्ञानमय सांसारिक अन्धकार से स्वयं को ऊपर उठाकर जीवन की उन्नति एवं कल्याणमय मार्ग पर चलना ही श्रेयस्कर मार्ग है।

सच्चिदानन्द, सुखस्वरूप, संसार के उत्तम सुखों को देने वाला, धार्मिक विद्वानों के परमहितकारक, सृष्टि से पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्यस्वरूप से विद्यमान रहने वाला, सकल जगत् का उत्पादक, प्रकाशकों का प्रकाशक परमात्मा हमें अच्छी बुद्धि की प्रेरणा दें एवं हमें अपनी ओर पदार्पण की शक्ति प्रदान करें। ●

पृ. ०८ का शेष संपादकीय.....

प्रस्तुत कर रहे हैं क्या ये सहर्ष इस्लाम की अच्छाइयों से प्रभावित होकर इस्लाम के अनुयायी बने हैं? क्या भारत के मुसलमानों के प्रति गान्धी-नेहरू और कांग्रेस के प्रेम में कोई कमी रह गई थी जो भारत के मुस्लिम युवक-युवती सीरिया में आई.एस. के लड़ाके बनने जा रहे हैं तथा कश्मीर और केरल में आई.एस. के बैनर-पोस्टर लगा रहे हैं? क्या मुस्लिमों को भारत के पूर्ण इस्लामीकरण और आई.एस. के शासन काल में ही सुख-चैन मिलेगा जो आज नहीं है? जहाँ का खाते हैं, पूर्ण सम्मान से जीते हैं, पूर्ण धार्मिक-राजनैतिक-शैक्षिक स्वतंत्रता और अधिकार पाते हैं उसी देश के कश्मीर में भारतीय ध्वज, संविधान को जलाने-फाड़ने की घटनाएँ, पाकिस्तानी ध्वज फहराए जाने की घटनाएँ, सुरक्षा बलों पर पथराव और तो और बाढ़ की विभिषिका में राहत कार्यों में लगे सुरक्षा बलों पर पथराव, सम्पूर्ण देश में क्रिकेट मैच के समय पाकिस्तान की जीत की खुशी में मुसलमानों द्वारा खुशी का इजहार तथा भारतीय टीम की जीत पर गुस्से का इजहार करते हैं। मुम्बई में प्रदर्शन के दौरान शहीदों के स्मारक को क्षतिग्रस्त करना आदि-आदि अनेक घटनाएँ हैं जो प्रश्न उपस्थित करती हैं कि क्या यही शराफत, ईमानदारी और धार्मिक होने का तकाजा है, क्या इससे राष्ट्रनिष्ठा अथवा राष्ट्रभक्ति माना जाए या यह माना जाए की भारत के मुसलमान इस राष्ट्र को अपना नहीं मानते?

जकारिया जी! सम्पूर्ण भारत के मुसलमानों के रहनुमा बनने वाले, इस्लामी शिक्षाओं का पाठ पढ़ाने वाले दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम बुखारी साहब की हरकतों को आप क्या कहेंगे **जब इस्लाम के आला इजरत इस तरह करेंगे तो इस्लाम में सुधारवादी कार्य क्या बिल माहर और सैन हैरिस की जिम्मेदारी है?**

जकारिया जी! जिस तरह आपने ईमानदारी से इस्लाम में कुछ समस्याओं को स्वीकार किया है **क्या यह भारत की भूमि पर ही संभव है या पाकिस्तान अथवा अन्य इस्लामिक राष्ट्र में अगर आप होते तो वहाँ भी स्वीकार कर सकते थे?**

क्या जकारिया जी इस्लाम के मूल आधार कुरान की उन आयतों को झूठला सकेंगे? जो मारकाट और हिंसा को बढ़ावा देती है। (पढ़ें सत्यार्थ प्रकाश का चौदहवाँ सम्मुल्लास)

जकारिया जी! **आई.एस.आई.एस. द्वारा यजिदी समुदाय जो इस्लाम का ही भाई-बंधु है की महिलाओं को इस २१वीं सदी के प्रगतिशील युग में बेचे जाने की घटना को क्या कहेंगे?**

जकारिया जी! **बोको हराम द्वारा नाइजिरियाई छात्राओं के अपहरण तथा उनके उत्पीड़न के विषय में क्या कहेंगे?** जकारिया जी! **शिया-सुन्नी-कुर्द और अन्य कबाईली समुदायों के बीच खूनी संघर्षों जिनमें ईसाई-हिन्दू चरमपंथियों की कोई भूमिका नहीं को क्या कहेंगे?**

मलाला युसूफजई मात्र एक नाम है **इस्लाम के महिलाओं के प्रति रवैये का, महिलाओं की शिक्षा, स्वतंत्रता के बारे में जकारिया जी क्या कहेंगे? पाकिस्तान और अन्य इस्लामिक देशों में ईशनिन्दा के आरोप में लोगों को मार डालने की घटनाओं के विषय में तथा जिन्हें आप अपने वाले कहते हो उन सलमान रश्दी, तस्लिमा नसरीन जैसे अनेकों बुद्धिजीवी जिन्होंने वे इस्लाम में सुधार की वकालात की और उनकी जान के लाले पड़े हुए हैं इस सब विषय में जकारिया जी आप क्या कहेंगे? क्या ईश निन्दा का दण्ड देने का ठेका इस्लामी चरमपंथियों को उस परमात्मा ने दे दिया है? क्या वह परमात्मा स्वयं अपनी निन्दा या अपनी व्यवस्था के विरूद्ध दण्ड देने में सक्षम नहीं है?**

जन्नत पाने के लिये क्या प्रत्येक मुसलमान उतावला नहीं है? क्या इसी जन्नत को पाने के लिये मुसलमान २०-२५ किलो विस्फोटक पदार्थ बांध कर २०-२५ वर्ष की आयु में अपने-आपको उड़ा लेता है? क्या अजमल आमिर कसाब पाकिस्तान के एक गरीब परिवार में जन्म लेकर जीवन के मात्र कुछ बसन्त देखकर ही खेलने खाने के दिनों में जन्नत पाने के लिये भारत के मुम्बई नहीं आया था? जकारिया साहब! **आखिर यह जन्नत क्या है, कहाँ है, कैसी है और वहाँ क्या-क्या मिलेगा?** पता नहीं हो तो पता लगा लीजिएगा। क्या सब हालातों को मात्र कुछ मुस्लिमों की करतूत करार देने से इस्लाम के सच पर परदा डल जाएगा? नहीं! जकारिया साहब **आँखें बंद कर लेने से समस्या समाप्त नहीं हो जाती समस्या को खुले मन से स्वीकार कर समस्या का समाधान करने से समस्या समाप्त होती है।** किन्हीं व्यक्तियों में आई विकृतियों को दूर किया जा सकता है किन्तु दूषित विचारधाराओं को शुद्ध करने का विफल प्रयास करने से अच्छा है उन विचारधाराओं को ही त्याग दिया जाए। अतः आओ हम महर्षि दयानन्द के सन्देश **'एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातिय उन्नति होना दुष्कर है सब उन्नतियों का केन्द्र एक्य है जहाँ भाषा भाव और भावना में एकता आ जाये वहाँ सागर में नदियों की भाँति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं'** को आत्मसात करें और हिन्दू, मुसलमान ईसाई आदि मतावलम्बी बनने के स्थान पर सम्पूर्ण सष्टि के निर्माता, समस्त मनुष्यों का एक मात्र परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त संसार के प्राचीनतम् ज्ञान वेद आधारित सत्य सनातन वैदिक धर्म की ओर लौट चलें और **वसुधैव कुटुम्बकं** तथा **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** अर्थात् वसुधाभर के लोगों को गुण-कर्म-स्वभाव से श्रेष्ठ बनाने के सन्देश को साकार करें। ●

thearyasamaj.org

''निर्णय के तट पर'' कर्ता-भोक्ता, बद्ध-मुक्त कौन?

- स्वामी डॉ. ओमानन्द सरस्वती
वेद मंदिर महर्षि दयानन्द संस्थान, चन्दूखेड़ी
जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष : ०९७५४९३२१९१

ओ३म् ''**द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया**'' (ऋग्वेद १/१६४/२०) इस मन्त्र के अर्थ और व्याख्या के अन्त में कहा है कि आत्मा निर्लेप, अकर्ता, अभोक्ता है, तो कर्ता, भोक्ता नहीं है तो और कौन कर्ता, भोक्ता है? ईश्वर, जीव, प्रकृति में, प्रकृति जड़ अकर्ता, ईश्वर फलदाता है तो जीवात्माकर्ता, भोगता=सुख-दुःख को भोगता है। भोगी जाने वाली प्रकृति है, इसकी व्यवस्था करने वाला ईश्वर है। इस गंभीर विषय पर दर्शनों आदि को भी जानों।

असंगोऽयं पुरुष इति। सांख्य १/१५ एवं बृ. आ. उप. ४/३/१५ में कहा कि यह पुरुष (आत्मा) प्रकृति-बुद्धि-अहंकार, पंचतन्मात्र में ८ प्रकृतियाँ और १ मन, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ५ कर्मेन्द्रियाँ, ५ स्थूल भूत ये १६ विकृतियाँ=इन २४ जड़ तत्वों से परे (असंग) पचीसवाँ तत्व १ चेतन आत्मा है। यह नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव है=असंग आत्मा है। ''**पाँच भौतिको देह**'' सां. ३/१७। यह देह स्थूल शरीर पृथ्वी, जल-तेज (अग्नि)-वायु-आकाश से बना है, इसे बाह्य करण-उपकरण भी कहते हैं। ''**सप्तदशैकं लिंग**'' सां. ३/९ में सूक्ष्म शरीर (अन्तःकरण) ११ इन्द्रियाँ, ५ तन्मात्राएँ तथा १ बुद्धि=ये १७ तत्व माने गये हैं। वैसे संक्षेप में तो मन-बुद्धि-अहंकार तीनों को ही गिना है-क्योंकि योग द. ने मन-चित्त को एक ही का पर्याय मान लिया है। ''**उभयात्मक मनः**'' सां. २/२६। मन उभयात्मक ज्ञानेन्द्रिय-कर्मेन्द्रिय है। व मन, चित्त एक ही के पर्याय भी योग में कहे हैं। ''**चरमोऽहंकार**'' सं. १/२७। अहंकार चरम है। ''**अभिमानोऽहंकारः**'' सां. २/१६। अभिमान को अहंकार कहते हैं।

''**अहंकारः कर्ता कर्ता न पुरुषः**'' सां. ६/५४। कार्यसिद्धि अहंकार के अधीन है। ''**महतोऽन्यत्**'' सां. ६/६६।=महत्तत्व=बुद्धितत्व रूप अन्तःकरण का कार्य है, उसके द्वारा सुख-दुःख भोग की अनुभूति जीव को कराता है।

बुद्धि के आश्रित ही सब भोग हैं, यह प्रसिद्ध है क्योंकि ''**असंगोऽयं पुरुषः**'' बृह. ४/३/१५ एवं सां. १/१५। में स्पष्ट कहा है, भोग तो बुद्धि (ज्ञान) से सेवन करता है, उसके अभाव में योगाभ्यास होगा।

''कार्यसिद्धि अहंकार के अधीन है, अहंकार इन्द्रियों पर अधिष्ठातृत्व के लिये शरीर में प्रवेश करता है। उन इन्द्रियों के विषयों के प्रति दौड़-धूप करता है। पुनः त्रिविध दुःखों का अनुभव करता है।''**स्वस्वामि परिणामात**'' सां. ६/७०। इसका त्याग करना आवश्यक है। **विशिष्टस्याजीवत्वमन्वय व्यतिरेकात्**'' सां. ६/६३ जीव संज्ञा क्यों है? अहंकार अभिमान से युक्त जीव है, अतः जीवआत्मा=जीवात्मा है। अहंकार आत्मा का अन्तःकरण है। अहंकार से इन्द्रियाँ हुई है। ''**चिद्वसानो भोगः**'' सां. १/१०४। चेतन पुरुष भोक्ता है, ''**नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव**'' वाला कैसे कर्ता व कर्ता के बिना कैसे भोक्ता है? ''**अकर्तु रवि फलोपभोगोऽन्नाद्यवत्**'' सां. १/१०५। भोक्तृभाव अन्नाद्यवत् होता है। जैसे पाचक भोजन पकाता है-स्वामी अकर्ता होते भी खाता-भोगता है। युद्ध में सेना-प्रजा मरती है, पर जय-पराजय राजा की होती-कही जाती-राजा भोगता है।

''**क्लेश कर्मा-दयः मनसि**'' सुख-दुःख मन में है-पर पुरुष=आत्मा दुःखी है कहते हैं।''**अविवेकाद्वात-त्सिद्धेकर्तुः फलावगमः**'' सां. १/१०६। अर्थात् अविवेक से पुरुष (आत्मा) का कर्तापन व भोक्तापन कहा जाता है। विवेक से-अकर्ता-अभोक्ता है।।

''गीता अ.५, श्लो.८-९''
इन्द्रिया इन्द्रियार्थेषु वर्तन्ते, गुणागुणेषु वर्तन्ते'' इन्द्रियाँ-इन्द्रियों के अर्थों में वर्त रही हैं, गुण-गुणों में वर्त रहे हैं, मैं कर्ता-भोक्ता नहीं हूँ। मैं आत्मा तो द्रष्टा-ज्ञाता अक्रिय, असंग, निर्लेप हूँ। अर्थात् -हम (आत्मा) गुणों के कायों को अज्ञानवश अपना मान बैठे हैं, अपने पर आरोपकर दुःखी व्यर्थ होते हैं। विवेक होने से बन्धाभाव से मुक्त हो जाता है। यह कर्ता सभोक्ता को समझो। आत्मा तो निष्क्रिय, द्रष्टा, ज्ञाता-चेतन, नित्यशुद्ध बुद्धमुक्त स्वभाव ही है। आत्मा को अपने स्वरूप का ज्ञान न होने से-प्रकृति को न जानने से बद्ध है। सां. १/१९ ''१/५५'' ''**वाङ्मात्रं न तु तत्वं चित्तस्थे**'' सां. १/५८। पुरुष (आत्मा) में अविवेक कथन मात्र (समझाने के लिये) है-तात्विक रूप में नहीं। चित्त में अन्तःकरण में अविवेक है। अन्तःकरण-चित्त के द्वारा, अविवेक का अनुभव आत्मा करता है। ''**भोक्तृभावात्**'' सां. १/१४३। पुरुष में भोक्तृभाव=भोगने की प्रवृत्ति है, अज्ञान से। भोग्यादि शरीर-संसार प्रकृति है। ''**स हि सर्ववित् सर्वकर्ता**'' सां. ३/५६। वह परमात्मा ही सब का ज्ञाता व कर्ता धरता है। ''**उपाधिर्भिद्यते न तु तद्वान्**'' सां. १/

ऋषि दयानन्द को प्रणाम

ऋषि दयानन्द सरस्वती जी को, सदा करते हैं प्रणाम।
उनके आदर्शों पर हम चलें सदा सुबह शाम।।
जीवन में आर्य संस्कृति, अपनाना ही है सुखधाम।
भारत भूमि धन्य जहाँ, महर्षि के सर्वश्रेष्ठ नेक काम।।
आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर, चारों वेदों का भाष्य था निष्काम।
संन्यासियों की शान इसी में, राष्ट्र नवनिर्माण में लें विश्राम।।
मनुज मात्र हित आर्य समाज स्थापित कर, जुटाया श्रेष्ठ आयाम।
सबका स्वास्थ्य सबल निरोग हो, करे नित योग प्राणायाम।।
दस नियमों का उपदेश देकर, बताया हिय में खोजे राम।
जड़पूजा में न फँसे, सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन में लगे न छदाम।।
आडम्बर पाखण्ड अंधविश्वास को छोड़ें,
करें रोज यज्ञ, न हो बदनाम।
''सुन्दर'' जीवन का सार समझा गये ऋषि,
आओ हम रोज करें प्रणाम।।

-सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी
अधिक्षक, पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक
छात्रावास, बुरहानपुर (म.प्र.)-४५०३३१

thearyasamaj.org

१५१। उपाधि नामरूप शरीर नष्ट होते हैं, उपाधि वाला नामी आत्मा का नाश नहीं होता है। "**नाशः कारणलयः**" सां. १/१२१। कारण में कार्य का लय हो जाना नाश है। **पंचत्वंगतः**। "**ज्ञानान्मुक्ति**" सां. ३/२३। ज्ञान से मुक्ति होती है। "**बन्धोविपर्य्यर्यात्**" सां. ३/२४। अज्ञान से बन्धन होता है। मोक्ष पुरुष का है प्रकृति का नहीं।

"**नैकान्ततोबन्ध मोक्षौपुरुषस्या विवेकाद्वते**" सां. ३/७१। पुरुष का आत्मा का बन्ध और फिर उससे मोक्ष स्वरूपतः नहीं है। आत्मा स्वरूपतः न बद्ध है, न मुक्त है।

"**अन्तःकरण धर्मत्वं धर्मादिनाम्**" सां. ५/२५। धर्म-अधर्म दुःखादि अन्तःकरण के धर्म (कार्य) हैं। अन्तःकरण पुरुष का कारण है, आन्तरिक साधन है, बहिष्करण के समान, शरीर इन्द्रिय मनादि सब वैसे ही धर्म-अधर्म सुख, दुःख उभयात्मक अन्तःकरण के गुण हैं, करण सामान से क्योंकि इंसमें ही रहते हैं, इससे ही प्रतीत होते हैं। अतः पुरुष में संगापत्ति नहीं है। अतः पुरुष असंग है।

"**जीवन्मुक्तिश्च**" सां. ३/७८ जीवन मुक्ति विदेह, अन्तिम देह, क्षीण क्लेश योगी है।।

"**तत्वाभ्यासान्नेतिनेतीति त्यागात् विवेक सिद्धिः**" सां. ३/७५। तत्व चिन्तन, आत्मा परमात्मा के मनन आदि से, मन से भी अनुभव आगे वह नहीं है, वह नहीं है। अर्थात् परमात्मा इस प्रकार त्याग प्रकार से विवेक सिद्धिः। विवेक की परमात्मा के साक्षात्कार की सिद्धि स्वात्मा में होती है। "**स एष आत्मा नेति-नेति**" बृह. ३/४/२६, २/३।।

परन्तु "**इच्छाद्वेष**" (न्याय द. १/१०) और "**प्राणापान निमेष**" (वैशे द. ३/२/४) में बताये हुए लिंग आत्मा के धर्म नहीं है, और न इनका आत्मा के साथ समवाय सम्बन्ध है। यह आत्मा का शरीर के साथ सम्बन्ध-अस्तित्व बतलाने के लिये केवल लिंगमात्र (चिन्हमात्र) है। जैसे राम का मकान निर्देश करने के लिये यह कहा जाय कि "जिस मकान में आम का वृक्ष है, वही राम का मकान है। क्योंकि-प्राण, अपान, पलक मींचना, खोलना, श्वास-प्रश्वास, हिक्का, उद्गार, मल-मूत्र-गर्भ-विसर्जनादि-प्राणों के धर्म हैं। इन्द्रियों का विकार इन्द्रियों का धर्म है।" इच्छा-द्वेष सुख-दुःख प्रयत्न-ज्ञान बुद्धि के धर्म हैं। ये सब तीनों गुणों के कायों के धर्म गुण रूप ही हैं।

ज्ञानप्रकृया में कहा सुख-दुःख मन का, भूख-प्यास प्राणों का, बुद्धि से तर्क-ज्ञान-निर्णय, चित्त से-चिन्तन-स्मरण, अहंकार से अभिमान होता है। इनसे असंग आत्मा तो द्रष्टा-ज्ञाता-चेतन अक्रिय, नित्य शुद्ध-बुद्ध मुक्त स्वभाव है।

नोटः-सांख्य दर्शन ज्ञान से मुक्ति प्रधान है, तो योग दर्शन अष्टांग योग-क्रियात्मक साधना प्रधान है।

(१) परमात्मा सत्ता से संसार चल रहा है।
(२) आत्म सत्ता सन्निधि से शरीर अंग प्रत्यंग चल रहे हैं।
(३) जैसे-बिजली की शक्ति से सारे उपकरण कार्यशील हैं।

उपेक्षित प्रताप

कवि तुलसी, तानसेन, रसखान, रहीम।
सूर, मीरा, केशव गावे, ईश भक्ति महिम।।
ईशभक्ति महिम साथ, हुई उपेक्षा एक।
समकालीन "प्रताप महान", दिखे न नेक।।
प्रताप गुण गाने में, हे धूमिल सी छवि।
अकबर निन्दा करने, से डरे सारे कवि।।

- भारतेन्द्र आर्य
खरसौद कलां, जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-०९४२४५५३८९६

दुःख ३ व ४ प्रकार के हैं -

३ दुःख

१. आध्यात्मिक दुःख- जो आत्मा-परमात्मा-प्रकृति को न जानने से, अज्ञान से होता है।

२. आधिभौतिक दुःख- भूत प्राणियों से जैसे मनुष्य साँप, बिच्छु, शेर आदि से दुःख होता है।

३. आधिदैविक दुःख- प्राकृतिक-प्रालब्ध-भूकम्प, ज्वालामुखी, आकाशीय, दैव-भाग्य से है।

अतः इन तीन दुःखों की शान्ति के लिये, तीन बार शान्ति-शान्ति-शान्ति की प्रार्थना करते हैं।

४ दुःख

योगी सुख में ४ प्रकार के दुःखों को देखते हैं ये ४ सुख-दुःख विवेकी के लिये त्याज्य हैं।

१) परिणाम दुःख, २) ताप दुःख, ३) संस्कार दुःख, ४) सत्वादि गुणों के वृत्ति विरोध जन्म दुःख है।

१. परिणामदुःख- विषय भोगों को भोगने के पश्चात् उनमें तृष्णा कम नहीं होती, बल्कि बढ़ जाती है। इससे व्यक्ति दुःख का अनुभव करता है। यह दुःख भोगों को भोगने के परिणाम स्वरूप होता है, इसलिये इसे परिणाम दुःख कहते हैं।

२. ताप दुःख- विषय भोगों से प्राप्त होने वाले सुखों में, अनेक प्रकार की बाधाएँ उपस्थित होती रहती हैं। इन बाधाओं से व्यक्ति दुःख का अनुभव करता, रहता है, इसे ताप दुःख कहते हैं।

३. संस्कार दुःख- सुख भोगने से सुख के संस्कार बनते हैं, उन संस्कारों से प्रेरित होकर, व्यक्ति पुनः उस सुख को प्राप्त करना चाहता है। किन्हीं कारणों से वह सुख उसे पुनः नहीं मिलता, थोड़ा मिलता है, देरी से मिलता है, अधिक मूल्य से मिलता है, प्राप्त होकर भी नष्ट हो जाता है, तब उसे दुःख होता है। यह दुःख संस्कारों के कारण होता है। इसलिये इसे संस्कार जन्य संस्कार दुःख कहते हैं।

(४) गुणवृत्ति विरोध दुःख- "**सात्विक प्रवृत्तियों**" (=दया-सेवा-परोपकार आदि) तथा राजसिक, तामसिक प्रवृत्तियों (चोरी-झूठ-छल-कपट आदि) में परस्पर विरूद्ध स्वभाव होने से टकराव होता है, इनके टकराव से व्यक्ति की मानसिक स्थिति अशान्त (=खिन्न) हो जाती है, जिससे व्यक्ति दुःख का अनुभव करता है। यह दुःख सत्व-रज-तम-गुणों के परस्पर विरूद्ध स्वभाव के कारण होता है, इसलिये इसे "**गुणवृत्ति विरोध दुःख**" कहते हैं। योग द. २/१५।

अतः "**हेयं दुःखमनागतम्**" यो. द. २/१६ आगे भविष्य में आने वाले दुःखों को ही दूर करना चाहिये, किया जा सकता है, भूतकाल के नहीं। वर्तमान को तो भुगत ही रहे हैं-भुगतना ही है।

अतः मुक्ति पाने के उपाय-साधन करें-वेद, दर्शन, उपनिषदे-ब्रह्मज्ञान पढ़े, सत्संग, स्वाध्याय करें। ज्ञान-कर्म-उपासना=योग साधना-भक्ति करें। ●

thearyasamaj.org

वयं राष्ट्र जागृयां पुरोहितः

-रामफल सिंह आर्य
महामन्त्री-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.)
चलभाष-०९४१८४७७७१४

ईश्वरीय वाणी वेद की यह सूक्ति पुकार-पुकार कर कह रही है कि पुरोहित लोग, विद्वान् लोग, प्रचारक लोग, ब्राह्मण लोग सदैव राष्ट्र को जानने का कार्य करें जिसमें कि किसी प्रकार की अव्यवस्था कभी पनपने न पाये और यदि कोई अव्यवस्था हो भी तो वह दूर हो जाये। वेद की यह सूक्ति राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है जो युगों-युगों से मानव का पथ प्रदर्शन करती आई है और आगे भी करती रहेंगी। इसमें बताया गया है कि विद्वान् तथा राष्ट्रहितैषी लोगों का क्या कर्तव्य है। राष्ट्र का हित किस प्रकार किया जा सकता है। अर्थात् वे सदैव राष्ट्र के मार्गदर्शक बनकर कार्य करें। ठीक वैसे जैसे यज्ञवेदी पर बैठा हुआ पुरोहित यजमान का मार्गदर्शन करता हुआ अपने सुन्दर एवं कल्याणकारी उपदेश के द्वारा सदैव उससे समुचित प्रकार से यज्ञ सम्पादन करवाता है जो कि यजमान एवं अन्यों के लिये अभिलाषित फलों का प्राप्त कराने वाला होता है। पुरोहित तो कहते ही उसे हैं जो कि दूसरों के हित के लिये कार्य करता हो, **पुरोहित रतः इति पुरोहितः। यज्ञवेदी पर जो कार्य पुरोहित करवाता है राष्ट्रवेदी पर वही कार्य ब्राह्मण द्वारा सम्पन्न होता है। ब्राह्मण कौन? जो पक्षपात रहित, वेद के सच्चे विद्वान्, धर्म कर्म को ठीक-ठीक जानने वाले, सबके हित की बात बोलने वाले एवं छल कपट रहित विद्वान् हैं उन्हीं को उपरोक्त सूक्ति में पुरोहित की या ब्राह्मण की संज्ञा दी गई है** अन्यों को नहीं। ऐसे योग्य व्यक्ति जब राष्ट्र को जगाने का कार्य करते हैं तो उस राष्ट्र का उत्थान कोई भी रोक नहीं सकता। **धुन के धनी सच्चे ब्राह्मण आचार्य प्रवर चाणक्य ने जिस समय इस मन्त्र से प्रेरणा पा कर राष्ट्र को जगाने का कार्य किया तो एक क्रान्ति आ गई और दुष्टों तथा अन्यायी शासकों को मुँह छिपा कर भागना पड़ा। आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द जी महाराज ने जब राष्ट्र का पतन देखा तो राष्ट्रवेदी के वे सच्चे पुरोहित बन गये और वह कर दिखाया जिसकी किसी ने कल्पना तक न की थी।** अपने परिवार के विपुल धन वैभव को, माता-पिता आदि के स्नेह बन्धनों को तोड़ते समय जिसके मन में तनिक-सा भी दु:ख या संशय न हुआ, जो ममता की मूर्ति माता को रोता बिलखता छोड़ कर घर से चला आया और कभी फिर उस घर की ओर दृष्टिपात भी न किया वही **देव दयानन्द जब एक माता को गंगा में अपने कलेजे के टुकड़े को प्रवाहित करके उसके ऊपर डाले हुए कफन के टुकड़े से अपनी लज्जा ढांपते हुए देखता है तो जार-जार रोता है। रात्री को उसे नींद नहीं आती और वह राष्ट्र के उत्थान हेतु विचार करता है कि क्या यह वही देश है जो कभी विश्व का गुरु और सोने की चिड़िया हुआ करता था।** वह राष्ट्रवेदी पर बैठ कर मानो प्रण करता है कि मैं इस देश में किसी को मूर्ख, अज्ञानी, अनपढ़, निर्बल, दरिद्र एवं असहाय नहीं रहने दूंगा, किसी के द्वारा भी अपने इन लोगों का शोषण न होने दूंगा चाहे इसके लिये मुझे कोई भी मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। प्रिय पाठकगण! यह है उपरोक्त सूक्ति की मूल भावना जिसका उपदेश वह कर रही है।

राष्ट्र को जगाने वाले योग्य व्यक्ति जब इस पवित्र भावना से कार्य करते हैं तो निश्चित रूप से वह राष्ट्र उन्नतिशील बनता है, जागता है। इसके विपरीत जब स्वार्थी, लोभी एवं क्षुद्राशय लोगों की बातों में आकर लोग पाखण्ड में फसते हैं तो महान् दु:ख एवं हानि भी उठानी पड़ती है। **खेद है कि आज लोग सच्चे ब्राह्मणों की न मानकर, अनेकों छल प्रपंच रच कर, गुरुडम फैलाकर, वाक् जाल के द्वारा जनता के धन पर गीद्ध दृष्टि जमाये हुए स्वार्थी, ढ़ोंगी और धूर्त लोग अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं** और मूर्ख एवं भोले लोग जिनके लिये महर्षि दयानन्द ने **'आँख के अन्धे गाँठ के पूरे'** विशेषण प्रयुक्त किया है, उनके जाल में इस प्रकार से फंसते जाते हैं कि उनका निकलना मुश्किल ही नहीं असम्भव सा हो गया है। कोई गुरुमन्त्र देकर उनका कल्याण करने की घोषणा करता है, कोई बीज मन्त्र देकर, कोई केवल प्याज, समोसा या टमाटर खिला कर ही लोगों का भाग्य परिवर्तन करने का दम्भ भर रहा है। कोई चिकने चुपड़े शब्दों द्वारा, कोई तथाकथित भक्ति में लीन होकर नाचने गाने के द्वारा, कोई चेलियों के संग रास रचा कर और कोई गुरुघर की सेवा में ही सब कुछ प्राप्त करने की बात करके लोगों का सर्वस्व हरण इस प्रेम से कर रहे हैं कि हरण करवाने वाले उसके विरूद्ध कुछ भो सुनना तक नहीं चाहते। **इससे किसी और का भले ही कोई कल्याण हो या न हो इन तथाकथित गुरुओं एवं बाबाओं की तो चांदी ही चांदी हो रही है।** यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि अन्धश्रद्धा के वशीभूत होकर अनेकों लोग दिन प्रतिदिन अपने समय और धन को लुटा करके इन धूर्तों के जाल में फंसते जाते हैं और जिनके पीछे कल सैकड़ों लोगों की भीड़ थी, आज लाखों की हो चुकी है। अज्ञान की पराकाष्ठा भला और क्या हो सकती है। **कहाँ पूर्ण बुद्धि पूर्वक परिश्रम द्वारा, जीवन में ऊपर उठने की बात और कहाँ केवल आँखें बन्द करके तथाकथित गुरुओं, बाबाओं एवं बापुओं के पीछे भेड़ की भांति चलने की यह प्रथा? क्या राष्ट्र का इससे कोई भला होने वाला है? कदापि नहीं।** उत्थान तो इससे क्या होना है उल्टा पतन, नहीं-नहीं घोर पतन हो रहा है। अनपढ़ अशिक्षितों की बात तो जाने दें आज पठित वर्ग में, जिन्हें हम बुद्धिजीवि कहते हैं, घोर पाखण्ड पग पसार चुका है। सस्ते साधनों द्वारा सुख प्राप्त करने की एक होड़ सी लग गई है। समय-समय पर इन पाखण्डियों के **'काले कारनामे'** जनता के सामने आते भी हैं परन्तु हमारे लोगों की आँखें नहीं खुलती, वे जागते

तुम्हारी शरण में.....

तू सर्वव्यापक विभु वधु नामी,
तुम्हारी शरण में आया स्वामी।
जीवों के खातिर रचा विश्व तूने,
तू तात है त्रिगुणी माया का स्वामी।
कर्मानुसार देह देता है पिता,
नहीं संभावित है कोई भी स्वामी।
हाँ, महती कृपा है तात तेरी,
न चिन्त हुआ मैं मेरे उर स्वामी।
दुविधा रही ना अब कोई मन में,
हाँ, विश्वास-श्रद्धा तुझ में है स्वामी।

-रमण नावलीकर
झण्डा चौक, नावली, जिला-आणंद (गुज.)

thearyasamaj.org

नहीं हैं। कितना घोर आश्चर्य है।

ऐसे अन्धकारपूर्ण समय में क्या हम आर्यों का यह पावन एवं प्रथम कर्तव्य नहीं है कि पूरी शक्ति के साथ, योजनाबद्ध ढंग से, एकजुट होकर पाखण्ड को मिटाने के लिये आगे आयें और समाज में जागृति का शंखनाद करें। देखो! समय चाहे कोई भी हो, प्राचीन हो या नवीन, विज्ञान का युग हो या कोई और **श्रेष्ठ सच्चे ब्राह्मण की आवश्यकता तो सदैव रहेगी। वास्तव में तो यही लोग हैं जो राष्ट्र को सुरक्षित, सुखी एवं समृद्ध किया करते हैं। अपने श्रेष्ठ उपदेशों द्वारा लोगों को सन्मार्ग पर प्रेरित किया करते हैं। राष्ट्र की अन्य शक्तियाँ या अन्य वर्ग तो सब इनकी ही प्रेरणा पाकर आगे बढ़ते हैं। क्षत्रिय की क्षात्र शक्ति पर यदि ब्रह्म शक्ति का अंकुश न हो तो वह भी राष्ट्र की रक्षा करने के स्थान पर राष्ट्र की विध्वंसक हो जाये। वैश्य के धन पर यदि ब्राह्मण के उपदेश का मार्गदर्शन न हो तो वह भी संग्रह की प्रवृत्ति वाला होकर केवलमात्र अपना हित ही देखने वाला हो जाये। शूद्र में भी सेवा भाव का आधान ब्राह्मण द्वारा ही किया जा सकता है।** इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि ब्राह्मण वर्ग को कैसा होना चाहिये। एक बात और स्पष्ट कर दें कि कोई हमारे इन वर्णों के वर्णन को पढ़कर आज के समाज में प्रचलित इस तथाकथित जाति पाति के द्वारा इन वर्णों का निर्णय न करे। हमारा अभिप्राय सभ्य वैदिक समाज में प्रचलित उस व्यवस्था से है जो जन्मगत न होकर कर्मों के आधार पर चलती थी और बहुधा जिसका निर्णय आचार्य के कुल में हुआ करता था। कहीं विषयान्तर न हो अतः हम पुनः अपने अभीष्ट विषय पर आते हुए कहते हैं कि पुरोहित द्वारा राष्ट्र को जगाने के साधन क्या हैं? वह किस आधार पर इतनी बड़ी घोषणा कर रहा है कि मैं राष्ट्र को जगाने के लिये बैठा हूँ। वह जगायेगा कैसे? इसका वर्णन अथर्ववेद के निम्नलिखित मन्त्र में आता है:-

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलगोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।।

अथर्व १९/४१/१

अर्थात् आत्मसुख प्राप्त किये हुए ऋषियों ने लोक कल्याण की इच्छा करते हुए तप का अनुष्ठान किया और दीक्षा को धारण किया। उस तप और दीक्षा से राष्ट्र उत्पन्न हुआ इसलिये इस राष्ट्र के सामने देव भी ठीक प्रकार से झुकें, सत्कार करें।

भाव यह कि **राष्ट्र को जन्म तो ऋषि लोग ही देते हैं, किसलिये देते हैं, सर्वसुखों की सिद्धि के लिये।** तप में सिद्धि प्राप्त करके वे दीक्षित हुए और राष्ट्र को जन्म दिया। अर्थात् राष्ट्र के लिये वे नियम, वे व्यवस्थाएँ दी कि सर्व सुखों की सिद्धि जन-जन के लिये सहज ही हो सके। **अर्थापत्ति से सिद्ध है कि जब अतपस्वी लोग और बिना दीक्षित हुए लोग नियम और व्यवस्था बनाने वाले होंगे तो सुखों के स्थान पर दुःखों का बढ़ना निश्चित है।** इसलिये दीक्षित हुए लोगों को राष्ट्र के लिये अर्पित करने हेतु ऋषियों ने जिस शिक्षा पद्धति को पूर्ण परीक्षा के उपरान्त लागू किया वह थी गुरु-शिष्य परम्परा की गुरुकुलीय प्रणाली, जहाँ पर वे दोनों तप करते थे। दोनों कौन? गुरु एवं शिष्य। आचार्य ही शिष्य को तपा कर उसे दीक्षा धारण करवाता था। उसे राष्ट्र को अर्पित करता था। कहना चाहिये कि राष्ट्र को जन्म देता था। आचार्य की उस कृति पर मोहित होकर देव लोग भी सम्मान से झुक कर उसे नमन करते थे। वह दीक्षित विद्या व्रत स्नातक राष्ट्र की वेदी में एक इष्टिका बन कर लगता था और समाज को आगे ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता था। कैसा दिव्य युग था वह। ऐसे आचार्य को यदि राष्ट्रवेदी का पुरोहित न कहें तो भला और क्या कहें? आचार्य चाणक्य जिस समय बालक चन्द्रगुप्त को उसकी माता से मांगने आये तो उसकी माता ममता के वशीभूत होकर बालक को आचार्य को सौंपने में आनाकानी करने लगी। कहने लगी कि मेरा तो एकमात्र यही सहारा है, मैं अपने बेटे को न दूंगी। आचार्य हस कर कहने लगे कि सत्य है माता, बेटा तो यह तेरा ही है परन्तु आज यह तेरा बेटा है कल पूरे राष्ट्र का होगा। पूरा राष्ट्र इसकी जय-जय कार करेगा। क्या तू चाहती है कि स्वार्थ में पड़कर तू इसे इसकी महान् पहचान से परे रखे। तू इसे मुझे दे मैं इसे राष्ट्र को अर्पित करूँगा। **इतिहास साक्षी है कि आचार्य ने चन्द्रगुप्त जो भेड़ बकरियाँ चराता था, को क्या से क्या बना दिया। मानों वेद की वह सूक्ति मूर्त रूप में आकर सामने खड़ी हो गई। जो इस लेख की शीर्षक हमने बनाई है। कौन जानता था कि मथुरा में ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर जो संन्यासी शिक्षा पा रहा है वह इस देश का एक दीपस्तम्भ बन जायेगा। गुरु ने शिष्य के अन्तर में स्थित वह विशाल ज्योति देख ली थी, वह क्रान्ति देख ली थी जो सदियों से जर्जरित इस देश का कायाकल्प करने की क्षमता रखती थी। वे जान गये थे कि यही सच्चा ब्राह्मण है, यही वास्तविक पुरोहित है।** दण्डी गुरु विरजानन्द की कुटिया में यदि राष्ट्र जन्म नहीं ले रहा था तो और भला क्या हो रहा था? अथर्ववेद के उपरोक्त मन्त्र में वर्णित तप के द्वारा दीक्षित बल और ओज के समक्ष क्या राष्ट्र सम्मान से नहीं झुका? उस पुरोहित की जागृति की भावना पर बार-बार बलिहारी। भविष्य में जब भी राष्ट्र जागेगा, उसका भाग्योदय होगा तो ऐसे ही किसी पुरोहित के पौरोहित्य में होगा। ऐसे ही किसी ब्राह्मण के ब्राह्मणत्व में होगा। भारत से बाहर दूसरे देशों में भी जब भी किसी राष्ट्र ने अंगड़ाई ली है वह किसी न किसी ब्राह्मण की शरण में ही ली है। उस देश में उसका नाम भले ही ब्राह्मण या पुरोहित न हो, उससे कोई विशेष अन्तर नहीं आता परन्तु कार्य उसने वही किया जो वेद की उपरोक्त सूक्ति तथा मन्त्र की मूल भावना है। **ईश्वरीय नियम तो भारत क्या और पाकिस्तान क्या, ईरान क्या और जर्मनी क्या, अमेरिका क्या और ऑस्ट्रेलिया क्या, सर्वत्र एक जैसे ही है। इसलिये वेद के उपदेश किसी एक स्थान, समाज या व्यक्ति के लिये न होकर पूरे भूमण्डल के लिये हैं। 'यत्र विश्वं भवत्येक नीड़म्'** अर्थात् जहाँ सारा संसार एक नीड़ अर्थात् घोंसला बन जाये यह क्षमता यदि किसी विचार में हो सकती है तो वह वेद मन्त्र ही हो सकते हैं। **हमारे भारतवर्ष का इतिहास ऐसे अनेक सच्चे ब्राह्मणों से भरा पड़ा है जो राष्ट्रहित अपना सर्वस्व लगा गये। उपरोक्त आचार्य चाणक्य और महर्षि दयानन्द के उदाहरण तो संकेत मात्र है,** परन्तु जब से हम वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर मानने लगे, परार्थ का स्थान स्वार्थ ने लिया और धर्म ब्राह्य आडम्बर बन गया, देश में सच्चे उपदेशकों की, सच्चे ब्राह्मणों की, सच्चे पुरोहितों की कमी हो गई तो हमारा विनाश भी हो गया। प्राचीन आर्यावर्त के राजा कभी भी निरंकुश नहीं होते थे। उनको अनुशासित रखने के लिये एक सभा होती थी जिसके अधिकारी उच्च कोटि के विद्वान् ब्राह्मण एवं पुरोहित हुआ करते थे। अपने श्रेष्ठ उपदेशों द्वारा ये लोग सदैव राजा को सत्परामर्श दिया करते थे जिससे कि राजकार्य अति उत्तमता के साथ चलता रहता था। आओ! हम राष्ट्रयज्ञ में समिधा बन कर लगें और अज्ञान तथा अन्धकार, पाखण्ड आदि को मिटाने के लिये श्रेष्ठ विद्वानों की शरण में बैठकर उनके दिये उपदेश द्वारा तन-मन-धन से राष्ट्रनिर्माण में जुट जायें कि जिससे यह राष्ट्र पुनः विश्व का गुरु बन सके। ●

thearyasamaj.org

वेदों में आधुनिक विज्ञान

- कृपालसिंह वर्मा
२५३, शिवलोक, कंकरखेड़ा
मेरठ (उ.प्र.)-९९२७८८७७८८

(उष्मा की तीन गतियाँ)

वेद विज्ञान की पुस्तक है। वेद मन्त्रों की अवैज्ञानिक व्याख्या के कारण वेद जनसामान्य से दूर हो गये।

उष्मा-चालन तीन प्रकार का होता है-

१. चालन, २. संवहन, ३. विकरण

लोह आदि ठोस पदाथो में उष्मा चालन (Conduction) द्वारा एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाती है। धातु के परमाणु अपना स्थान नहीं बदलते हैं। द्रव तथा वायु में जब उष्मा गति करती है तो परमाणु अपना स्थान बदलते हैं। इसे संवहन कहते हैं सूर्य किरणों से आने वाली उष्मा (Heat) बिना किसी माध्यम के पृथ्वी सतह पर आती है। उसे विकरण कहते हैं। यही वैज्ञानिक तथ्य यजुर्वेद ५/८ में इस प्रकार वर्णन किया गया है।

या तेऽग्नेऽयःशया तनू वर्षिष्ठा गहरेष्ठा।
उग्रं वचोऽअपावधीत् त्वेषं वचोऽअपोवधीत् स्वाहा।

अयः कहते हैं लोह आदि धातुओं को।

हे अग्ने! लोह आदि धातुओं के अन्दर निर्मित जो तुम्हारा शरीर है, वह अपनी विशेषताओं से युक्त होता है तथा वह उग्र व तीव्र ध्वनियों से धातु की रक्षा करता है।

रजः शब्द का प्रयोग जल तथा वायु के लिए होता है। रजः शया का अर्थ है जल तथा वायु में स्थित उष्मा। जल तथा वायु में स्थित उष्मा की अपनी विशेष विशेषताएं होती हैं। यह उग्र तथा तीव्र ध्वनियों के प्रभाव को समाप्त करती है।

या ते अग्ने हरिशया तनूर्वर्षिष्ठा गव्हरेष्ठा।
उग्रं वचोऽअपावधीत् त्वेषं वचोऽअपावधीत् स्वाहा।। (यजु. ५/८)

हरि कहते हैं सूर्यकिरणों को। सूर्यकिरणों में स्थित उष्मा विकरण द्वारा पृथ्वी सतह तक आती है। इसकी अपनी विशेषताएं होती हैं तथा यह उग्र व तीव्र ध्वनियों से रक्षा करता है।

इस प्रकार अग्नि के तीन रूप है:-

१. अयः शया - ठोस धातु में स्थित उष्मा
२. रजः शया - द्रव तथा वायु में स्थित उष्मा
३. हरिशया - सूर्यकिरणों में स्थित उष्मा

तीनों प्रकार की उष्माओं की अपनी अलग विशेषताएं हैं। इनमें एक बात सामान्य है कि ये तीव्र व उग्र ध्वनि प्रभाओं से अपने घरों की रक्षा करती है। ●

गतांक से आगे

स्वामी दयानन्द और विज्ञान

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

आइये अब हम स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य के आधार पर गुरूत्वाकर्षण विषय पर अध्ययन करें।

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः।। यजुर्वेद ३.६

पदार्थ-(आयम्) यह प्रत्यक्ष **(गौः)** गोल रूपी पृथिवी **(पितरम्)** पालन करने वाले **(स्वः)** सूर्य लोक के **(पुरः)** आगे-आगे **(असद)** चलती है वा **(मातरम्)** अपनी योनी रूप जलों के साथ सह वर्तमान **(प्रयन्)** अच्छी प्रकार चलती हुई **(पृश्निः)** आकाश में **(आक्रमीत्)** चारों तरफ घूमती है।

भावार्थ-मनुष्यों को जानना चाहिए कि जिससे यह भूगोल पृथिवी जल और अग्नि के निमित्त से उत्पन्न हुई अन्तरिक्ष वा अपनी कक्षा अर्थात् योनि रूप जल के सहित आकर्षणी रूपी गुणों से सबकी रक्षा करने वाले सूर्य के चारों तरफ क्षण-क्षण घूमती है। इसी से दिन-रात, शुक्ल-कृष्ण पक्ष ऋतु और अयन आदि काल विभाग क्रम से सम्भव होते हैं।

आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। यजु. ३३.४३

पदार्थ-हे मनुष्यों! जो ज्योति स्वरूप रमणीय स्वरूप से **(कृष्णेन)** आकर्षण से परस्पर सम्बद्ध **(रजसा)** लोक मात्र के साथ **(आवर्तमानः)** अपने भ्रमण की आवृति करता हुआ **(भुवनानि)** सब लोकों को **(पश्यम्)** दिखता हुआ **(देवः)** प्रकाशमान **(सविताः)** सूर्य देव **(अमृतम्)** जल वा अविनाशी आकाशादि **(च)** और **(मर्त्यम्)** मरणधर्मा प्राणिमात्र को **(निवेशयन्)** अपने अपने प्रदेश में स्थापित करता हुआ **(आयाति)** उदय अस्त समय में आता जाता है सो ईश्वर का बनाया हुआ सूर्य लोक है।

भावार्थ-हे मनुष्यों! जैसे इन भूगोल आदि लोकों के साथ सूर्य का आकर्षण है जो वृष्टि द्वारा अमृत रूप जल को बरसाता और जो मूर्त द्रव्यों को दिखाने वाला है वैसे ही सूर्य आदि लोक भी ईश्वर के आकर्षण से धारण किये हुए हैं। (वेदभाष्य)

यदा ये हर्य्यता हरी वावृधाते दिवे दिवे।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे।। ऋ. ८.१२.२८

भाषार्थ-(यदा ते.) हे इन्द्र परमेश्वर! आपके अनन्त बल और पराक्रम गुणों से सब संसार का धारण, आकर्षण और पालन होता है। आपके ही सब गुण सूर्य्यादि लोकों को धारण करते हैं। इस कारण सब लोक अपनी अपनी कक्षा और स्थान से इधर-उधर चलायमान नहीं होते हैं।

यदा ते मारुतीर्विशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे।। ऋ. ८.१२.२९

भाषार्थ- इस मन्त्र में भी आकर्षण विद्या है। हे परमेश्वर! आपकी जो प्रजा, उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय धर्मवाली और जिसमें वायु प्रधान है, वह आपके आकर्षण नियमों से, तथा सूर्य लोक के आकर्षण करके भी स्थिर हो रही है। जब इन प्रजाओं को आपके गुण नियम में रखते हैं तभी भुवन अर्थात् सब लोक अपनी अपनी कक्षा में घूमते और स्थान में बस रहे हैं।

thearyasamaj.org

यदा सूर्य्यममुं दिवि शुक्रं ज्योतिरधारयः।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे।। ऋ. ८.१२.३०

इस मन्त्र में भी आकर्षण विचार है। हे परमेश्वर! जब उन सूर्य्यादि लोकों को आपने रचा और आपके ही प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं और आप अपने अनन्त सामर्थ्य से उनका धारण कर रहे हो, इसी कारण सूर्य्य और पृथिवी आदि लोकों और अपने स्वरूप को धारण कर रहे हैं। इन सूर्य्यादि लोकों का सब लोकों के साथ आकर्षण से धारण होता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि परमेश्वर सब लोकों का आकर्षण और धारण कर रहा है।

व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो अद्भुतोऽन्तर्वावदकृणोज्ज्योतिषा तमः।
वि चर्मणीव धिषणे अवर्त्तयद्वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम्।।
ऋ. ६.८.३

भाषार्थ-इस मन्त्र में भी आकर्षण विचार है। हे परमेश्वर! आपके प्रकाश से ही वैश्वानर सूर्य आदि लोकों का धारण और प्रकाश होता है। इस हेतु से सूर्य आदि लोक भी अपने-अपने आकर्षण से अपना और पृथिवी आदि लोकों का भी धारण करने में समर्थ होते हैं। इस कारण से आप सब लोकों के परममित्र और स्थापन करने वाले हो और आपका सामर्थ्य अत्यन्त आश्चर्य रूप है। सो सविता आदि लोक अपने प्रकाश से अन्धकार को निवृत्त कर देते हैं तथा प्रकाश रूप और अप्रकाशरूप इन दोनों लोकों का समुदाय धारण और आकर्षण व्यवहार में वर्तते हैं। इस हेतु से इससे नाना प्रकार का व्यवहार सिद्ध होता है। वह आकर्षण किस प्रकार का है कि जैसे त्वचा में लोकों का आकर्षण हो रहा है वैसे ही सूर्य आदि लोकों के आकर्षण के साथ सब लोकों का आकर्षण हो रहा है और परमेश्वर भी इन सूर्य आदि लोकों का आकर्षण कर रहा है।

अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्।
आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः।।
ऋ. १.३५.४

पदार्थ- (**यजतः**) प्रकाश देने वाला (**चित्रभानुः**) चित्र विचित्र दीप्ति युक्त (**सविता**) सूर्य लोक, वायु (**कृशनैः**) तीक्ष्ण करने वाले किरण से (**बृहन्तम्**) बड़े (**हिरण्यशम्यम्**) ज्योति शान्त करने योग्य हो (**अभीवृतम्**) चारों ओर वर्तमान (**विश्वरूपम्**) जिसके प्रकाश में बहुत रूप है उस (**रथम्**) रमणीय रथ (**कृष्णा**) आकर्षण युक्त (**रजांसि**) पृथ्वी आदि लोकों और (**तविषीम्**) बल को (**दधानः**) धारण करता हुआ (**आस्थात्**) अच्छे प्रकार स्थित होता है।

भावार्थ-सूर्य आदि की उत्पत्ति का निमित्त सूर्य आदि लोकों का धारण करने वाला बलवान् सब लोकों और आकर्षण रूपी बल को धारण करता हुआ वायु विचरता है और सूर्य लोक अपने समीप स्थलों को धारण और सब रूप विषय को प्रकट करता हुआ आकर्षण शक्ति से सबको धारण करता है।

यत्तुदत् सुर एतशं वङ्कू वातस्य पर्णिना।
वहत् कुत्समार्जुनेयं शतक्रतुस्त्सरद् गन्धर्वमस्तृतम्। ऋ. ८.१.११

भावार्थ- गतिशील इस सूर्य आकर्षण और विकर्षण रूप दो शक्तियाँ पायी जाती हैं उनका धाता और निर्माता एक मात्र परमात्मा ही है और सूर्य जैसे कोटानुकोटि ब्रह्मण्ड उसके स्वरूप में ओत-प्रोत हो रहे हैं। इसलिये मन्त्र में उनको '**शतक्रतुः**' सैकड़ों क्रियाओं वाला कहा है। सूर्य को गन्धर्व इसलिये कहा है कि पृथ्वी आदि लोक उसी की आकर्षण शक्ति से ठहरे हुए हैं। वायु सम्बन्धी कहने का अभिप्राय यह है कि तेज की उत्पत्ति वायु से होती है। **क्रमशः**

'वैदिक संसार' प्रकाशन की आवश्यक सूचनाएं एवं रचनाकार महानुभावों से विशेष विनम्र अनुरोध

१. **वैदिक संसार** में प्रकाशित प्रकाशन सामग्री के लिए '**वैदिक संसार**' का सहमत होना आवश्यक नहीं है, यह लेखकों के अपने दृष्टिकोण एवं प्राप्त जानकारी अनुसार है।

२. '**वैदिक संसार**' से संबंधित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा।

३. '**वैदिक संसार**' आपका अपना समाचार पत्र है। विज्ञापन, सहयोग निधि (स्वैच्छिक दान) एवं प्रकाशन सामग्री से सहयोग करने की कृपा करें।

४. वैवाहिक आवश्यकताएँ, प्रतिभा समाचार, लेख, कविताएँ, अन्य समाचार, सूचनाएँ एवं शोक समाचार निःशुल्क प्रकाशित किए जाते हैं। कृपया प्रकाशन सामग्री स्पष्ट लिखी हुई, हस्ताक्षर युक्त, पूर्ण डाक पते एवं मोबाइल नं. सहित भेजें।

५. प्रकाशन सामग्री की श्रेष्ठ गुणवत्ता एवं समाचार पत्र में स्थान उपलब्धता पर ही प्रकाशन संभव हो सकेगा।

६. वेद विरुद्ध, सृष्टि नियम विरुद्ध, भूत-प्रेतादि, चमत्कारी, भविष्यफल आदि कपोल-कल्पित, कथा-कहानियों का प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

७. वेद सम्मत, ज्ञानवर्धक, मार्गदर्शक, प्रेरणास्पद, सत्य आधारित रचनाओं/समाचारों का स्वागत है। रचनाएँ संक्षिप्त (तीन पृष्ठों से अधिक नहीं) तथा मौलिक हों। दो मास में एक रचना के अनुपात से अधिक रचनाएँ न भेजें।

८. रचनाकार विद्वान्, महानुभाव प्रथम बार अपना चित्र भेजने का कष्ट अवश्य करें।

९. '**वैदिक संसार**' में प्रकाशित किसी सामग्री पर किसी महानुभाव को कोई शंका, जिज्ञासा, शिकायत होने पर संबंधित लेखक से सीधे सम्पर्क करें तथा हमें भी अवगत करवाये एवं कोई सुझाव हो तो हमें पत्र द्वारा अवश्य अवगत करवाएँ, हमें आपके पत्रों, रचनाओं एवं आर्थिक सहयोग की प्रतीक्षा है।

१०. पत्रों के अतिरिक्त अनेक स्नेहीजनों के द्वारा दूरभाष पर मौखिक समर्थन, बधाई तथा हर्ष के संदेश सतत् प्राप्त होते हैं, समस्त स्नेहीजनों का '**वैदिक संसार**' परिवार हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

११. '**वैदिक संसार**' स्वास्थ्य संबंधी एवं महिलाओं, बच्चों से संबंधित, स्वास्थ्य रक्षक-वर्धक, हितकारी, ज्ञानवर्धक, रुचिकर, उत्साहवर्धक, प्रेरणादायी सामग्री प्रकाशित करता है। अतः विद्वान् महानुभाव संबंधित सामग्री भेजने का कष्ट करें। प्रकाशन सामग्री के ऊपर निर्देशित करने का कष्ट करें कि सामग्री किस परिशिष्ट से संबंधित है।

१२. महापुरुषों की जन्मतिथि/पुण्यतिथि तथा वैदिक पर्वों से संबंधित आलेख कम से कम दो माह पूर्व भेजने का कष्ट करें।

१३. अस्वीकृत रचनाएं लौटाना संभव नहीं होगा। - **संपादक**

वेदों की ओर लौटो
-महर्षि दयानन्द सरस्वती

सत्य न्याय एवं वेद के आग्रही स्वामी दयानन्द सरस्वती

-प्रो. उमाकान्त उपाध्याय
पी-३०, कालिन्दी, कोलकाता
चलभाष-९४३२३०१६०२

स्वामी दयानन्द का जन्म फाल्गुनी कृष्णा दशमी सं १८८१ वि., सन् १८२५ को सौराष्ट्र (गुजरात) टंकारा, मोरवी में हुआ था, इनके पिताजी कर्षण जी तिवारी औदीच्य कुल के सामवेदी ब्राह्मण थे। वे निष्ठावान शिव भगवान् के भक्त थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम **''मूलशंकर''** रखा था। सो स्वामी दयानन्द का जन्म से नाम मूलशंकर था। सामवेदी ब्राह्मण होने पर भी पिता जी ने मूलशंकर को यजुर्वेद की रूद्राध्यायी कंठस्थ करा दी थी। कर्षण जी के पुत्र मूलशंकर ने १४ वर्ष की आयु में पूर्ण श्रद्धा-भक्ति के साथ शिवरात्रि का व्रत किया। दिनभर भगवान शिव की कथा वार्ता होती रही और मूलशंकर ने दृढ़ता से उपवास किया था। सायंकाल पिता जी मूलशंकर को साथ ले, शिव के पूजन की सामग्री लेकर गाँव के बाहर मंदिर में शिवरात्रि का पूजन करने के लिए गये। मूलशंकर के पिता जी बड़े धनाढ्य संपन्न ब्राह्मण थे। शिवरात्रि में शिव की पिंडी का पूजन चारों पहर में चार बार होता है। रात्रि जागरण का विशेष फलदायक महत्व है। प्रथम प्रहर का पूजन बड़े ठाट बाट घटाटोप से हुआ, दूसरे प्रहर का पूज़न भी हो गया। तीसरे प्रहर में निद्रा देवी ने सबको दबा लिया। मूलशंकर के पिता जी और मंदिर के पुजारी सभी निद्रा के वश में हो गए, सिर्फ मूलशंकर पूरी श्रद्धा-भक्ति से जागते रहे। मंदिर में पूर्ण नीरवता, शांति छाई हुयी थी। इतने में मंदिर के ईधर-उधर से दो-चार चूहें पिंडी पर अर्पित सामग्री को खाने के लिए शिव की पिण्डी पर उछल-कूद करने लगे। **मूलशंकर के हृदय में प्रभु-कृपा से सत्य का प्रकाश हुआ।** उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि यह पिण्डी कल्याणकारी भगवान शिव, कैलाशवासी, तांडवकारी भगवान शंकर नहीं हो सकता। यह सत्य के प्रति प्रथम आग्रह था। उन्होंने पिता जी को जगाया किन्तु पिता जी और पुजारी मूलशंकर को संतुष्ट नहीं कर सके और सत्य के प्रति आग्रही मूलशंकर घर आ गये। **सत्य के प्रति यह परम दुर्दान्त आग्रह स्वामी दयानन्द से संपूर्ण जीवन में बड़ी दृढ़ता से बना रहा और स्वामी दयानन्द ने यावत् जीवन सत्य का प्रचार किया और किन्हीं भी परिस्थितियों में सत्य के साथ कोई समझौता नहीं किया।**

स्वामी दयानन्द ने अपने युगान्तरकारी कालजयी ग्रन्थ **''सत्यार्थ प्रकाश''** की भूमिका में लिखा है **''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जाननेहारा है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य पर झुक जाता है''** स्वामी जी ने भूमिका में पुनः लिखा है-**''विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर देना, पश्चात् मनुष्य लोग स्वयं उसका हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।''** वहीं पुनः लिखते हैं-**''यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़कर सर्वतंत्र सिद्धांत अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे के विरूद्ध बातें हैं, उनका त्यागकर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे, क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विधि दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।''** यह उद्धरण किसी समीक्षा या व्याख्या की आकांक्षा नहीं करते।

स्वामी दयानन्द सत्य के प्रति इतने आग्रहवान थे कि उन्होंने आर्य समाज का चौथा नियम यह बनाया कि **''सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।''** स्वामी जी ने पुनः पाँचवे नियम में यह व्यवस्था दी है कि **''सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।''**

सत्य और न्याय एक-दूसरे के साथी हैं। जहाँ सत्य का पालन होगा वहाँ न्याय स्वयं होता रहेगा। **जिस युग में स्वामी जी ने अपना प्रचार कार्य आरम्भ किया उस समय कई प्रकार के अन्याय समाज में परिवारों में प्रचलित हो गए थे। सामाजिक रूप में छुआ-छूत भयानक रूप से चल रहा था। अछूतों को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। परिवारों में स्त्रियों की स्थिति बहुत दयनीय हो गयी थी। उनके साथ प्रायः दासियों जैसा व्यवहार होता था। स्त्रियाँ सब प्रकार से तिरस्कृत और पैर की जूतियाँ समझी जाती थीं। स्त्री और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। स्वामी दयानन्द ने बड़े क्षोभ और उग्रता से इस अन्याय का विरोध किया।** लड़कियों के लिए पाठशाला की व्यवस्था की और अछूतों के लिये छुआ-छूत के भेद भाव दूर कर दिए और उनके लिए भी पढ़ने की व्यवस्था की।

उस युग में बाल-विवाह बहुत प्रचलित था। **आठ-दस वर्ष की लड़कियाँ भी बुढ़ों और अधेड़ों को ब्याह दी जाती थीं। विधवाओं की संख्या बहुत अधिक थी और विधवा-विवाह धर्म विरूद्ध माना जाता था। ये बाल-विधवाएँ या तो वेश्या बन जाती थीं या देवदासियाँ बन जाती थीं।** स्वामी दयानन्द ने इन सभी अन्यायों का डटकर विरोध किया। आर्य समाज ने अपने मंदिरों से छुआ-छूत को हटाया और बाल-विवाह के विरूद्ध सामाजिक आन्दोलन किया। हिन्दू समाज में विधवा विवाह आरम्भ हो गया। प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में कन्याओं को पढ़ाने के लिए पाठशालाएँ खुल गयीं। अछूतों को आर्यसमाज के विद्यालयों और छात्रावासों में बिना किसी रोक-टोक के प्रवेश मिलने लगा। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को सामाजिक बहिष्कार का दण्ड भी भोगना पड़ा किन्तु स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं के फलस्वरूप ये सामाजिक आन्दोलन बढ़ता ही गया और छुआ-छूत मिटने लगा तथा स्त्रियों को भी पुरुषों की तरह सामाजिक अधिकार मिलने लगे। उन्हें सब प्रकार से उन्नति का अवसर सुलभ हो गया।

संस्कृत और हिंदी की शिक्षा की बड़ी उपेक्षा हो रही थी। संपन्न लोग उर्दू और फारसी पढ़ रहे थे। स्वामी दयानन्द ने अपने संगठन में सारे कामों को हिंदी में करने का अनिवार्य नियम बना दिया।

स्वामी दयानन्द के इस प्रचार का परिणाम यह हुआ कि अछूत कुलों के विद्यार्थी भी बड़े-बड़े विद्वान्, आचार्य, वेदपाठी, अध्यापक बनने लगे और बिना किसी भेद-भाव के पण्डितों की मण्डली में प्रतिष्ठित होने लगे।

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

स्त्रियाँ भी संस्कृत और वेद की उच्चकोटि की विदुषी बनने लगी और पुरुषों के सामान ही वेदों की पण्डिता भी होने लगी। इधर छुआ-छूत को दूर करने का प्रयास महात्मा गाँधी ने भी किया और राष्ट्र की आत्मघाती छुआ-छूत की प्रथा समाप्त होने लगी। छूत-अछूत, सवर्ण-असवर्ण, सब बिना किसी भेदभाव के चाय, नमकीन, समोसे, मिठाई आदि खाने पीने लगे। **इसी बीच मण्डल, कमण्डल, सच्चर आदि कमीशनों, कमेटियों की रिपोर्टों ने जातिगत भावना को भड़का दिया। राष्ट्र की एकता की इस आत्मघाती नीति को राजनीतिक दलों ने भी अपने निहित राजनीतिक स्वार्थों के कारण खूब बढ़ावा दिया। अब तो ऐसा लगने लगा है कि अछूत जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग सभी को राष्ट्र की एकता के विभाजन का राष्ट्रघाती पुरस्कार मिलने लगा है और स्वार्थी राजनीति इन्हें चिरस्थायी करने पर तुली हुई है। स्वामी दयानन्द और महात्मा गाँधी की राष्ट्र हितैषी छुआ-छूत को दूर करने की नीति को ही राजनीति ने निर्ममता से समाप्त कर दिया है।**

वेदों को अपनाने का सिद्धांत स्वामी दयानन्द का सुविचारित निश्चय था कि जब तक भारतवर्ष ने वेदों की शिक्षा को अपने राष्ट्रीय जीवन में अपना रखा था, तब तक देश की सर्वांगीण उन्नति हुई और देश संसार के सभी देशों का शिरोमणि बना रहा। स्वामी जी ने आर्य समाज का तीसरा नियम ही बना दिया-''**वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।**'' वेदों को अपनाने के अनेकों कारण थे। वेद पुरूषार्थ और कर्मण्यता का उपदेश देते हैं, भाग्य, नियति का विरोध करते हैं-''**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजिविषेत्**''-यावत् जीवन कर्म करते हुये जीने की इच्छा करो। परमेश्वर ने मानवयोनि को उन्नति करने तथा दक्षता प्राप्त करने के लिए बमाया है-''**उद्यानं ते नावयानं, जीवातुं ते दक्षतातुं कृणोमि**''-वेद कर्म न करने वालों को कामचोर, दस्यु कहता है, ऐसे परजीवियों (पैरासाइटों) को दण्ड देने का आदेश देता है-''**अकर्मा दस्युः बधीः दस्युः**''। परमेश्वर ने मनुष्य को उचित, अनुचित परखने की शक्ति दी है वेद कहते हैं-''**अश्रधां अनृते दधात्, श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः**''। वेदों में पाप क्षमा का सिद्धांत नहीं है। पाप या पुण्य, सबका फल मनुष्य को भोगना पड़ता है-''**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**''। वेदों में सांसारिक और पारमार्थिक उन्नति का परिपूर्ण उपदेश हुआ है। वेद में कृषि, वाणिज्य, उद्योग, सबकी शिक्षा है। वेद में सब विद्याओं का मूल पाया जाता है। वेदों में पृथ्वी से लेकर अंतरिक्ष और द्यौलोक पर्यन्त सब ज्ञान का परिपूर्ण वर्णन है। वेद में स्वराज्य की बड़ी महिमा है। अनेक मन्त्रों में ''**अर्चननु स्वराज्यम्**'' का सम्पुट हुआ है। वेद में प्रखर राष्ट्रवाद की महिमा का वर्णन है। प्रार्थना है कि हमारे राष्ट्र में सब प्रकार के विद्वान्, योद्धा, विदुषी स्त्रियाँ और बलवान गाय, घोड़े, पशु आदि हों। वेद में मातृभूमि की बड़ी उत्कृष्ट भावना विद्यमान है। अथर्ववेद में भूमिसूक्त में कहा गया है-''**माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः**'' मातृभूमि की यह प्राचीनतम प्रतिष्ठा है। वेद में विश्व-सरकार और विश्व-नागरिक का भी वर्णन है। वेद में विश्वनागरिक को ''**विश्वमानुष**'' कहा गया है। यह संयुक्त राष्ट्रसंघ से भी अधिक उत्कृष्ट व्यवस्था वेदों में पायी जाती है।

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए भी सत्य, न्याय और वेद का प्रचार किया। मानव जाति के कल्याण में ही उन्होंने अपना जीवन समाप्त कर दिया। सत्य की रक्षा के लिए ही उन्हें धोखे से विषपान कराया गया और १८८३ ई. में दिवाली की संध्या को उनका देहांत हो गया। **ऐसे महात्मा का पुण्य स्मरण भी सौभाग्य है।** ●

ऋषि दयानन्द की योग साधना

ब्रह्मचर्य के कठोर व्रत से, वज्र शरीर बनाया था।
वन उपवन हिम शृंगों पर, रहस्य योग का पाया था।।
मोहमाया और गृहस्थी में ऋषि का मन नहीं लागा,
सच्चे शिव की खोज में, माता पिता और घर से भागा।
थे पूर्व जन्म के संस्कार, सुख वैभव को त्यागा,
सत्य सनातन वैदिक धर्म को, ग्रहण था लागा।
दसवर्ष के अल्प समय में, अन्धकार का किया सफाया था। १।
वन उपवन ....

तड़प एक ही मन में थी, योग विद्या पाने की,
पर्वत घाटि वन छाने, नहीं परवाह की जमाने की।
सन्त महात्मा मुनियों से, करी विनती योग सिखाने की,
घोर संकट झेले नहीं की परवाह जीवन जाने की।
करबद्ध विनय अनुनय कर, स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यास पाया था। २।
वन उपवन ....

दण्ड कमण्डल लेकर ऋषि ने, आगे कदम बढ़ाया,
व्याकरण और वेदाध्ययन का दृढ़ संकल्प बनाया।
योग साधना तड़प मिटाने, चाणोद कर्णाली चला आया,
ज्वालानन्द, शिवानन्द गिरि से प्रसाद योग का पाया।
गूढ़ रहस्य यहाँ सीख योग के, निज जीवन सफल बनाया था। ३।
वन उपवन ....

योग विद्या को सीख ऋषि फिर आगे बढ़ जाते हैं,
चण्डी पहाड़ पर जाकर योग क्रियाओं को दोहराते हैं।
समस्त बारीकियाँ सीख योग की, पूर्ण योगी बन जाते हैं,
धारणा, ध्यान और समाधि में घन्टों रत हो जाते हैं।
योग विद्या से अनहोनी का, कई बार आभास कराया था। ४।
वन उपवन ....

पाखण्ड पर खण्डन का वार देख, बुतपरस्त घबराते हैं,
निर्भीक दयानन्द के सत्य उपदेश, सुन शत्रु बन जाते हैं।
वेद की सच्ची वाणी से, पोपों के हृदय थर्राते हैं,
शास्त्रार्थ के अमोघ शस्त्र, सम्मुख आने से कतराते हैं।
वैदिक परम्परा को पुनः धरा पर लाने को आर्य समाज बनाया था। ५।
वन उपवन ....

वन-उपवन हिम शृंगों पर, रहस्य योग का पाया था।।

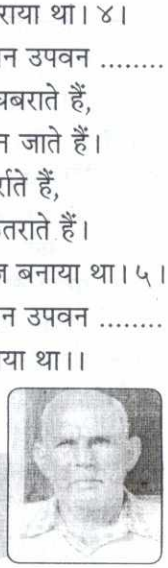

- देशराज आर्य, से.नि. प्रधानाचार्य
रेवाड़ी, हरि., चलभाष-०९४१६३३७६०९

thearyasamaj.org

मानव मात्र के लिए स्वामी दयानन्द जी की आदर्श शिक्षायें

-आचार्य भगवानदेव वेदालंकार
बुद्ध बाजार, विकास नगर, नई दिल्ली-५९
चलभाष-९२५०९०६२०१

इस आर्यावर्त देश में समय-समय पर ऋषियों का, योगियों का, त्यागी-तपस्वी महान् पुरुषों का अवतरण होता रहा है जैसे-सतयुग में सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र जी हुए, त्रेतायुग में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, द्वापर में योगीराज श्री कृष्ण जी का जीवन अनुकरणीय रहा, कलियुग में वेदों के विद्वान्, धर्मशास्त्रों के ज्ञाता, तर्क शिरोमणि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की आदर्श शिक्षायें, प्रेरणाप्रद विचार, उनका आदर्श जीवन त्याग-तप मानव-मात्र के लिये अनुकरणीय है। उनके कल्याणकारी आदर्शों पर चलने से ही मानवमात्र का कल्याण सम्भव है।

॥ 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने की शिक्षा ॥

स्वामी दयानन्द जी बड़े ही ज्ञानी पुरुष थे। उन्होंने पूरे अनुभव से वेद शास्त्रों के प्रमाण देकर शोध पूर्वक, ज्ञान का भण्डार, अनेक शिक्षाओं से परिपूर्ण, क्रान्तिकारी ग्रन्थ का प्रकाश किया, जिसको पढ़कर, स्वाध्याय करके न जाने कितने सपूतों ने अपने जीवन का कायाकल्प किया है। जीवन-जीने के वास्तविक उद्देश्य को जाना। उन महापुरुषों में उदाहरण स्वरूप कुछ नाम जैसे कि स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, स्वामी दर्शनानन्द जी, पं. लेखराम जी, गुरूदत्त विद्यार्थी, पं. अखिलानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, श्याम जी कृष्ण वर्मा, ब्रह्मचारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' आदि-आदि अनेकोनेक भारत-माता के वीर सपूतों ने **'सत्यार्थ प्रकाश'** को पढ़ा और उसके बाद जीवन-जीने का लक्ष्य प्राप्त किया। यह ग्रन्थ चौदह समुल्लासों में अर्थात् चौदह विभागों में रचा गया है।

॥ सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ का प्रयोजन ॥

''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। इसलिए विद्वान् आचार्यों का यही मुख्य काम है कि वे स्वयं अपना हित-अहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।''

॥ ईश्वर के 'ओम्' नाम का ध्यान करने की शिक्षा ॥

महर्षि स्वामी दयानन्द जी से पूर्व देश में लोग वेद के सच्चे मार्ग को भूल चुके थे। बहु देवतावाद का प्रचलन था। ईश्वर के स्थान पर लोग प्रकृति की, तुलसी, पीपल जैसे वृक्षों की पूजा करने लगे थे। कोई काली देवी, कोई दुर्गा, कोई लक्ष्मी, कोई गणेश, कोई शिवलिंग, कोई चतुर्भुज धारी विष्णु की, कोई सर्पधारी शिव की मूर्तियाँ बनाकर, गन्डे, ताबीज, तिलक, मालायें पहनकर, झांज-मंजीरा, बाजा बजा-बजा कर, नाच-नाचा, उछल-कूद कर पूजा करने की वेद-विरूद्ध परिपाटी जन्म ले चुकी थी। ऐसे समय में महर्षि ने हमें वेदों का, शास्त्रों का, उपनिषदों का प्रमाण देकर ईश्वर के सर्वरक्षक, सृष्टिकर्ता **'ओम्'** नाम का ध्यान करने की शिक्षा प्रदान की।

''एको ब्रह्म द्वितीयो न अस्ति'' ईश्वर जो **'ब्रह्म'** रूप है। सबसे बड़ा है। सबसे महान् है वह एक ही है। वह दो, तीन या उससे अधिक संख्या वाला नहीं है।

''ओं खम्ब्रह्म'' -यजुर्वेद ४०.१७

अर्थात् उस आकाश के समान व्यापक परमेश्वर का मुख्य और निज नाम **'ओम्'** ही है। हमें उसी एक परब्रहम परमेश्वर रूपी **'ओम्'** का ही ध्यान करना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या की गई है जैसे-सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम **'ब्रह्म'**, जो बहुत प्रकार से जगत् को प्रकाशित करे इससे ईश्वर का नाम **'विराट'**, जो ज्ञानस्वरूप, सर्वज्ञ, जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम **'अग्नि'** है। जो शिष्ट, मुमुक्षु मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है, जो सबसे श्रेष्ठ है इसलिए उसका नाम **'वरूण'** है। जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है, इससे उस परमात्मा का नाम **'इन्द्र'** है। जो चर और अचररूप जगत् में व्यापक होने से परमात्मा का नाम **'विष्णु'** है। जो सबका रक्षक जैसा पिता अपने सन्तानों पर सदा कृपालु होकर, उनकी उन्नति चाहता है इससे उसका नाम **'पिता'** है। जैसे पूर्ण कृपा युक्त जननी अपनी सन्तानों का सुख और उन्नति चाहती है वैसे परमेश्वर भी सब जीवों की बढ़ती चाहता है इससे परमेश्वर का नाम **'माता'** है। जो प्रकृति आदि जड़ और सब जीव प्रख्यात पदार्थों का स्वामी वा पालन करने हारा है, इससे उस ईश्वर का नाम **'गणेश'** वा **'गणपति'** है। जो समग्र ऐश्वर्य से युक्त वा भजने योग्य है इसीलिये उस ईश्वर का नाम **'भगवान'** है। जो कल्याण स्वरूप और कल्याण का करने हारा है इसलिये उस परमेश्वर का नाम **'शिव'** है। ये उपरोक्त सभी नाम परमेश्वर के ही हैं परन्तु इनसे भिन्न परमात्मा के असंख्य नाम हैं क्योंकि जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण-कर्म स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम हैं। ये सभी नाम **'ओम्'** के ही विशेषण हैं। इसीलिये परमेश्वर के इस छोटे से **'ओम्'** नाम का ही ध्यान, मनन एवं चिन्तन करना चाहिये। इससे जीवन में सुख, शान्ति और आनन्द की वृद्धि होगी। समस्याओं का सफल निदान होगा। किसी कवि का यह कथन कितना सार्थक है कि-

''ओम् नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय।
जो ओम् का सुमरन करे, तो दुःख काहे को होय।।''
स्वाँस-स्वाँस पर ओम् भज वृथा स्वाँस मत खोय।
ना जाने इस स्वाँस का, आवन होय न होय।।

॥ अन्धविश्वासों से बचने की शिक्षा ॥

स्वामी दयानन्द जी का जन्म जिस युग में हुआ, उस युग में चारों ओर देश में, समाज में तथा परिवारों में अविद्या, अन्धविश्वासों का अज्ञानान्धकार फैला हुआ था। उदाहरण के रूप में-

thearyasamaj.org

१. व्यक्ति अपने काम पर जा रहा होता और बिल्ली रास्ता काट जाती तो व्यक्ति डर जाता था कि अब काम नहीं बनेगा।

२. किसी को उसी समय छींक आ जाती, चाहे वह छींक जुकाम, नजला या बीमारी अवस्था में ही आयी हो।

३. कोई एकाक्षी (काणा) व्यक्ति सामने आ जाता, उसे भी अपशकुन मान लिया जाता था।

४. कोई गरीब व्यक्ति, जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होता था, या सफाई कर्मचारी, जन्मजात अपने को ब्राह्मण मानने वाले व्यक्ति से छू जाता था, तो अनर्थ हो जाता था।

५. इसी प्रकार उस समय स्त्रियों को पढ़ाना, अच्छा नहीं माना जाता था। नारी घर की चार दीवारी में पर्दे में कैद थी। गाँव, देहात, मुसलमान परिवारों में आज भी कन्यायें शिक्षा-ग्रहण नहीं कर पा रही हैं। इसके अतिरिक्त बाल-विवाह, अनमेल-विवाह, सती-प्रथा, विधवा-विवाह तथा बलि-प्रथा जैसी कुरीतियाँ, कुप्रथा, कुत्सित रीति-रिवाजों का स्वामी दयानन्द जी ने और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने उन अन्धविश्वासों के विनाश के लिए '**सत्यार्थ प्रकाश**' की रचना की, साहित्य लिखा। गुरुकुलों की स्थापना की। छुआछूत, भूत, प्रेत, फलित-ज्योतिष, तिलक, मालाओं का धारण करना, तान्त्रिकों के भ्रम जाल में फँसना इत्यादि बातों के बहकावे में न आना। जिनसे सन्तानें, बच्चे, बड़े-बूढ़े किसी धूर्त के माया-जाल में न फंस सके ऐसी शिक्षा का उपदेश किया।

(इन उपदेशों का लाभ जाति पंथ से उपर उठरि असंख्य मानवों ने उठाया तथा अनेक महापुरुषों ने इन शिक्षाओं को आगे बढ़ाया किंतु अत्यंत विडम्बना है कि आज का मानव इन शिक्षाओं को भूलाकर इनके विपरित कार्य व्यवहार कर पतनगामी बन रहा है - **संपादक**)

॥ माता-पिता एवं आचार्य की शिक्षा ॥

शास्त्रों में बच्चों के तीन उत्तम शिक्षक माने गये हैं अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य। महर्षि याज्ञवल्क्य का वचन है-

''**मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद**''-शतपथ ब्राह्मण

अर्थात् इन्ही तीनों की उत्तम शिक्षा से मनुष्य ज्ञानवान् होता है। वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान्! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हों। माता-पिता को अति उचित है कि वे शुद्ध शाकाहारी भोजन पर अधिक ध्यान दें। मद्य, नशीले पदार्थों, बुद्धि नाशक, रूक्ष पदार्थों का परित्याग कर, जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता को बढ़ाने वाले पदार्थ हैं जैसे-दूध, घृत, शहद, फल, सब्जी तथा उत्तमोत्तम अन्न पान की शिक्षा दें। किसी ने ठीक ही कहा है कि-

''**जैसा खाये अन्न वैसा बने मन, जैसा पीये पानी वैसी बने वाणी**''

माता की शिक्षा - बच्चे की पहली गुरु 'माता' को माना गया है। ''**माता निर्माता भवति**'' माता बच्चे को लोरियाँ सुना-सुना कर संस्कार देती है। बच्चे का निर्माण करती है। बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे, जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावे। छोटे-बड़े, मान्य, पिता, माता, गुरु, आचार्य आदि के साथ शिष्टाचार का व्यवहारिक ज्ञान, बातचीत करने का तरीका, उनके पास उठने-बैठने आदि की भी शिक्षा दिया करें जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न हो सके बल्कि सर्वत्र प्रतिष्ठा हो। सन्तान किसी धूर्त, ढोंगी, बेहरूपिया के बहकावे में न आवे। जिससे फलित ज्योतिष, भूत-प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न हो।

इस प्रकार पिता शिक्षा करे कि हमारी सन्तान चोरी, आलस्य, प्रमाद, नशीले मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या द्वेष, मोह, आदि दोषों को छोड़ने के लिए तैयार रहे। छल, कपट, धोखा देना, अभिमान करना, कृतघ्नता से अपना हृदय दुःखी होता है। दूसरों का तो कहना ही क्या? क्रोधादि दोष छोड़ और कटु-वचन को त्याग कर, शान्त और मधुर वचन ही बोलें। बड़ों का सम्मान करें, उन्हें ऊँचा आसन दें, विनम्रता से '**नमस्ते**' करें।

''**यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपस्यानि नो इतराणि**'' यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है। माता-पिता और आचार्य अपनी सन्तान और शिष्यों को सदा यह उपदेश करें कि जो-जो हमारे धर्म युक्त कर्म हैं, उन-उन का ग्रहण करें और यदि हमारे जीवन में भी यदि कोई दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार आदि दोष, कमजोरी है उनका त्याग करें। सज्जनों का संग और दुष्टों का त्याग करें। विधि पूर्वक ईश्वर की उपासना, प्रार्थना करें। मद्य, शराब, अण्डा, मांस आदि के सेवन से अलग रहें। जिस प्रकार आरोग्य, विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार के शुद्ध शाकाहारी भोजन करें।

इस प्रकार **सन्तानों को उत्तम शिक्षा, विद्या, गुण, कर्म और स्वभाव रूपी आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।** काश! आज के माता, पिता और शिक्षक अपनी नई पीढ़ी को सही दिशा-बोध देने में अहम भूमिका निभाते।

आज के युग में महर्षि दयानन्द जी की शिक्षा की और अधिक आवश्यकता है-

कहने की और अधिक आवश्यकता नहीं, आज की युवा पीढ़ी, नवयुवक और नवयुवतियाँ दिशा भ्रमित हैं। उनके दिशाहीन आदर्श टी.वी. चैनल या फिल्मों के नायक एवं नायिकायें हैं, जिनके द्वारा लगातार अश्लीलता, चरित्रहीनता, मॉडल के नाम पर अर्द्धनग्नता, पॉप डान्स आदि की अपसंस्कृति फैलाई जा रही है। जिससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। आज के इस अत्यन्त भौतिक युग में भी महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणाप्रद आदर्श शिक्षाओं की और अधिक आवश्यकता है जिसका एक संक्षिप्त सा उदाहरण लेख के माध्यम से प्रस्तुत किया है। ऋषि की आदर्श शिक्षायें और भी हैं जिसका उल्लेख आगामी लेख में किया जायेगा। ●

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू कश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सानिध्य में १४ से २१ सितम्बर तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, दिल्ली, पानीपत, सोनीपत, उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों से शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रातः काल श्रीरामभिक्षु एवं आश्रम के मन्त्री डॉ. सुरेश जी साधकों को योगासन एवं प्राणायामादि का अभ्यास कराते थे और फिर उसके बाद पूज्य महात्माजी क्रियात्मक योगाभ्यास करवाते थे। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण-यज्ञ भी हुआ। आचार्य संदीप आर्य जी योगदर्शन का अध्ययन करवाते थे और साधकों की शंकाओं का समाधान भी करते थे। वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी ने भी श्रोताओं को अपने प्रभावशाली प्रवचनों द्वारा उपकृत किया। उनके वैदिक सन्ध्या पर किए गए प्रवचन श्रोताओं को अत्यधिक हृदयाग्रही लगे। माता सत्यप्रियायति, माता आनन्दायति और श्रीमती चंचल तथा अन्य शिविरार्थियों के समय-समय पर भजन होते रहे। आश्रम के प्रधान श्री भारतभूषण आनन्द, कार्यकारी प्रधान श्री विजय भगोतरा, महामन्त्री श्री यादवेन्द्र शर्मा, माता रामप्यारी और श्रीमती सुदेश आदि अन्य महानुभावों के सहयोग से शिविर बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। -**भारतभूषण**, आनन्दधाम

thearyasamaj.org

महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्ग दर्शक है

– खुशहालचन्द्र आर्य
मार्फत–गोविन्दराम जी आर्य एण्ड सन्स
९२०, महात्मा गाधी रोड, (दो तल्ला) कोलकता–०७
चलभाष–९०३८४८५१५५

मैंने पहले एक लेख आदरणीय डॉ. महेश जी विद्यालंकार की पुस्तक **''ऋषि दयानन्द की अमर गाथा''** शीर्षक से लिखा था। उस लेख में एक लेख और इसी पुस्तक से लिखने का लिखा था, सो दूसरा लेख इसी भाँति है।

ऋषिवर दया, करूणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाइयाँ, जहर देने वाले को क्षमा दान तथा विरोधियों को सम्मान देते थे वे कभी अपने सुख-दुःख के लिये न चिन्तित हुए और न रोये, मगर देश, धर्म, जाति की दूर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फले हुए अंज्ञान, ढ़ोंग, पाखण्ड, गुरुडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिये संघर्ष करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किये रहती थी-भारत पुनः जगद्गुरु के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई-मनगढ़न्त पोपलीलाएँ कैसे दूर हों? इन झूठे पाखण्डी गुरुओं, महन्तों सन्तों आदि की इन भोली-भाली जनता को बहकाने, ठगने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे? देश सत्यज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रवाहित होकर, कैसे दुःख, दैन्य, निर्धनता, रोग-शोक, पशुता आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा यही रही है-

इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है।।

ऋषि सदा देश के दुर्भाग्य, दुर्गति, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोये। जो देश कभी शान्ति-सुख, मानवता और धन-धान्य का भण्डारी था। आज वह कितनी दीन-हीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें सदा बेचैन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा-एक माता मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाये हुए गंगा में प्रविष्ट हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया, रोते-बिलखते हुए बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया। ऋषि इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपनें को संभाल नहीं सके। करूण स्वर से बोले-हाय! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर को कफन भी नहीं जुटता? उनकी आँखों से आँसुओं की धारा अविरल बहनें लगी। कभी यह भारत धन-धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा-पूरा था। सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है। वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन-मनन करते रहे।

ऋषि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया, उन्होनें व्यक्तित्व, वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया। जिधर से निकले उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गये। अनेक राजे-महाराजे, धनी-मानी उनके शिष्य बन गये। बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शास्त्रार्थ हुए। सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित थे। उन्होंने दुनियाँ को झुकाया, पर स्वयं नहीं झुके। दूसरों को बदला, स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण शक्ति थी। घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। वे दिव्यगुणों के खान थे। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श, शिक्षाप्रद और नवजीवन दायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनो ने अपने जीवन संभाले और ऊपर उठे। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है। ऋषि का जीवन-दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है।

भोगी, विलासी, **दुर्व्यसनों में फँसे मुन्शीराम के जीवन को ऋषि के एक प्रवचन ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली की वे मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द बन गये।** स्वामी श्रद्धानन्द ने देश-धर्म-जाति के लिये जो प्रेरक कार्य किये हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश, धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहें तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन न मिलेगा।

मुन्शीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन भी बुराइयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया/भजन बड़ा ही मधुर था। लोगों ने अमीचन्द के बारे में ऋषिवर को बता रखा था। सहज ही **ऋषि जी की सत्यवाणी निकली-अमीचन्द! तुम हो तो हीरे मगर कीचड़ में फँसे हो।** इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन को पलट कर रख दिया बाद में अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज का बड़ा प्रचार व प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नजर में एक अद्भुत जादू था, जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था। मृत्यु का अन्तिम दृश्य-ऋषि की सहनशक्ति, आस्तिकता, प्रभुशक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर **नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गये। उनके विचार बदल गये। उन्होंने सारा जीवन ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया।**

प. लेखराम, ऋषि के जीवन और विचारों पर इतने दीवाने हुए कि सारा जीवन आर्य मुसाफिरी में गुजार दिया। ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्यजनों को सन्देश दे गये-तकरीर और तहरीर का काम बन्द न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरी में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जूनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में सम्भव नहीं है। उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि के जीवन की अनेक प्रेरक उदाहरण, घटनाएँ व बाते हैं, जो आज के जीवन और जगत् को संभालने, सुधारने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती है। स्वामी जी का जीवन खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी एक थी। उन्होंने जो कहा उसे कर दिखाया। **प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।**

महर्षि दयानन्द ने जीवन भर गलत बातों ढोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास आदि से कभी समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान् व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। **हम आर्यजन स्वार्थ, लोभ, पद आदि के लिए कदम-कदम पर सिद्धान्त-विरूद्ध बातों से समझौता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। असत्य बातों से आत्मा को पतित कर लेते हैं। हमें ऋषि के प्रेरक जीवन से शिक्षा व सत्य पालन का व्रत लेना चाहिये।** ●

thearyasamaj.org

"मैं" और "मेरा"

"मैं" और "मेरा" यह दो शब्द हमारे मन मस्तिष्क पर इतने हावी रहते हैं कि हमारा दिन-प्रतिदिन का हर कार्यकलाप इन से प्रभावित ही नहीं बल्कि पूरी तरह नियंत्रित होता है। हमारी सारी सोच इन्हीं पर आधारित होती है। इन्हीं के इर्द गिर्द घूमती है। हम "मैं" और "मेरा" से इतर कुछ सोच ही नहीं पाते। कभी भी कहीं भी किसी से भी अपनी साधारण बातचीत मात्र एक प्रयोग के तौर पर टेप कर लीजिए। फिर उसे सुनिये और देखिए कि उस जरा से वार्तालाप में आप ने इन दो शब्दों "मैं" और "मेरा" का प्रयोग कितनी बार किया है। विश्वास कीजिये आप स्वयं भी आश्चर्यचकित रह जाएंगे!

"मैं" और "मेरा" का पाठ हमें घुट्टी में ही पिला दिया जाता है। शैशव से ही हम "मैं" और "मेरा" की गरदान सुनते आते हैं और प्रात: से सायं तक पग-पग पर "मैं" और "मेरा" का ही प्रयोग होता देखते हैं। अत: "मैं" और "मेरा" हमारे अवचेतन में इतने गहरे तक पैठ जाता है, रच बस जाता है कि फिर जीवन भर चाहते हुए भी इस से छुटकारा नहीं पा पाते।

यह तो कोई कहने की बात ही नहीं है कि **निजी जीवन में, परिवार म, समाज में अधिकांश कठिनाइयों, परेशानियों, बुराइयों, झगड़ों, मनमुटाव के मूल में यही "मैं" और "मेरा" ही होते हैं।** यूँ हम बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं। त्याग, बलिदान, अपरिग्रह, भाईचारा से विश्वबंधुत्व तक के स्वप्न देखते हैं। ऊँची-ऊँची उड़ानें भरते हैं मगर वास्तविकता के धरातल पर उतरते ही पुन: "मैं" और "मेरा" की दल-दल में रपट जाते हैं। जरा सोच कर देखिये कि यदि "मैं" और "मेरा" का भूत **हम पर इस कद्र हावी न होता तो कितने झगड़े फसाद, लड़ाइयाँ, दुश्मनी, वैरभाव का अस्तित्व ही मिट जाता।**

बाहर वालों की बात जाने दीजिये। भाई-भाई में, बहन-भाई में, बाप-बेटे में मुकदमेबाजी, गाली-गलोच, मारपीट यहाँ तक कि कत्ल तक होते देखे जाते हैं मात्र इसी "मैं" और "मेरा" के चक्कर में, **गृहस्थ तो गृहस्थ है, दूसरों को बड़े अच्छे उपदेश देने वाले साधु महात्माओं को भी कई बार इस "मैं" और "मेरा" की फिसलन पर फिसलते देखा जा सकता है।** पति-पत्नि में अलगाव के पीछे भी अधिकतर इसी "मैं" और "मेरा" की मेहरबानी होती है। कहने को तो वे दो शरीर एक प्राण होते हैं किन्तु "मैं" से हम और "मेरा" से हमारा नहीं हो पाते।

सब जानते हैं कि सब कुछ यहीं छूट जाना है। मुट्ठी बांधे आए हैं और हाथ पसारे जाना है। किन्तु "मैं" और "मेरा" की जकड़ ऐसी मजबूत है कि वह सारा ज्ञान, समझबूझ, होश भुला देती है। कुछ ही दिन हुए एक वृद्धाश्रम में एक वृद्ध ने दूसरे वृद्ध की हत्या कर दी। भरपूर जीवन जी लेने के बाद, घर परिवार से अलग वृद्धाश्रम में रहते हुए जीवन संध्या की बेला में भी शयद इन बुजुर्गों के दिल-दिमाग से "मैं" और "मेरा" विलुप्त नहीं हो पाए!

अपने मन की शान्ति के लिए, अपने चारों ओर सुख और संतोष बांटने के लिए, समाज में भाईचारा लाने के लिए, विश्व-बंधुत्व हेतु सक्रिय योगदान के लिए, **इस संसार को कुछ बेहतर बनाने के लिए आवश्यक है कि इस "मैं" और "मेरा" से जहाँ तक बन पड़े छुटकारा पाया जाए। दूसरों को प्रेरित करने से पहले जरूरी है कि हम स्वयं इस पर अमल कर के एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें।**

-ओमप्रकाश बजाज
बी-२, गगन विहार, जबलपुर
चलभाष: ९८२६४९६९७५

मरना ही है तो मरो परन्तू किर्ती रूप से शेष रहो

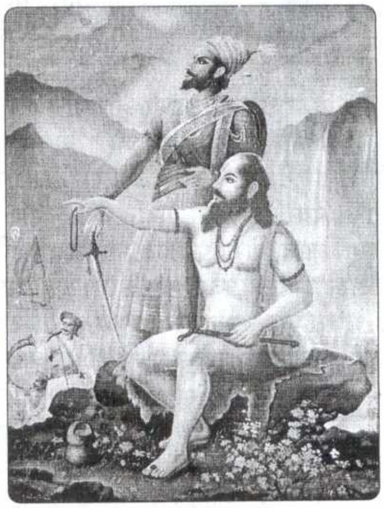

हिन्दवी स्वराज्य साम्राज्य संस्थापक छत्रपति शिवाजी के राष्ट्रगुरु समर्थ स्वामी रामदास स्वामी जी ने मानव मात्राओं को संदेश दिया था कि '**किसको मरना नहीं है मरना ही है तो मर जावो परन्तु मृत्यु के पश्चात् किर्तीरूप से शेष रहो**' यह कितना सुन्दर उपदेश जगत् को दिया।

प्रत्येक मनुष्यों को मरना है इसलिए मनुष्यों को विवेकरूपी बुद्धि से सद्धर्म रूपी सद्कर्म कर के यज्ञरूपी जीवन व्यतित कर किर्तीरूप से शेष रह कर अमर हो जाने हेतु प्रयत्नशील बनना चाहिये।

वास्तविक आत्मा अजर अमर है परन्तु यह शरीर इंद्रियों को धारण कर दु:ख को पाता है यह दु:ख उसके लिए मृत्यु समान है। इस दु:ख-शोक से बचकर आनन्द-परमानन्द प्राप्त करना जीवात्मा का मुख्य लक्ष्य है। इसलिए पुरूषार्थ के साथ परमार्थ को प्राप्त करने के लिए जीवात्मा को मानवीय जीवन (जन्म) मिला है।

मानव प्राणी को जीवन में यज्ञ करना है अर्थात् श्रेष्ठ उत्तम कर्म करने हैं यह ईश्वर की आज्ञा है। उत्तम कर्मों से उत्तम गती अर्थात् सद्गति जीवों को मिलती है।

मानव देह धारण होने पर प्रथम प्राप्त शरीर के प्राण को आयाम देना प्राणों की गति उत्तम होने पर शरीर स्वस्थ रहता है। स्वस्थ शरीर में मन बुद्धि-चित्त-अहंकार उत्तम रहते हैं।

जब मानव आत्मरूपी भावों से विचरता है तब वह सद्प्रवृत्त विचरता हुआ उसका अहंकार सात्विक रहता है तब चित्त शुद्ध बुद्धि पवित्र तथा मन निर्मल रहता है ऐसा होने का मुख्य कारण मानव जब ईश्वर उपासक होता हुआ वेदों का स्वाध्यायी होता है तब वह निरंतर सद्भावों में विचरता है।

सद्भावों में विचरने वाला मानव जब श्रेय मार्गो पर गतिशील रहता है तो वह किर्तीरूप में शेष रहने योग्य कर्म में प्रवृत्त होकर पुरूषार्थ परमार्थ करता है।

देव दयानन्द जी कहते थे **सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए**, तब मानव श्रेय मार्ग पर गमन कर पाता है।

-अमरजा टोपे शेकदार
मंत्री- आर्य संस्कृति संस्कार प्रतिष्ठान
शैलगी, सोलापुर, महाराष्ट्र
चलभाष-८०५५४४५८४७

thearyasamaj.org

गतांक का शेष भाग

विश्व शांति का स्रोत वैदिक धर्म

-साध्वी डॉ. उत्तमा यति
दिव्य वैदिक ज्योति आश्रम, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर (राज.)
चलभाष-०९८२८७०३९९३

३) मज़हब या सम्प्रदाय का फल मनुष्य को एक आदर्श नागरिक नहीं, अपितु कट्टरपंथी, सम्प्रदायी तथा अंधविश्वासी बनाता है। यही कारण है कि एक कट्टरपंथी के अन्दर मज़हबी जोश, साम्प्रदायी कट्टरपन तथा अन्धविश्वास तो है, किन्तु आदर्श मानवता नहीं। इसीलिए एक कट्टरपंथी जब अपने क्षणिक जोश या साम्प्रदायिक कट्टरपन में आ जाता है, तब वह अपने मनुष्यत्व को भी भूल जाता है। वह अपने साम्प्रदायिक जोश में इतना अन्धा हो जाता है कि निरपराध बच्चों तथा निर्दोष अबलाओं की हत्या करने में भी शर्म-संकोच नहीं करता।

दूसरी ओर धर्म मनुष्य को एक आदर्श मानव बनाता है। वास्तविक धर्म का उद्देश्य है कि मनुष्य को धर्मपरायण तथा आदर्श मानव बनाना है, इस सम्बंध में वेद का भी यही आदेश है-''**मनुर्भव जनया दैव्यं जन**''

हे मानव! तू आदर्श मानव बन और अपने जीवन को दिव्य जीवन बना। वेद की कैसी सुन्दर शिक्षा है। यही कारण है कि एक वेदानुयायी का जहां अपने धर्म पर अटूट तथा दृढ़ विश्वास है। जहां वह वेद और वैदिक क्रियाओं पर पूर्ण श्रद्धा रखता है। वहां वह एक आदर्श मनुष्यता का भी सजीव नमूना है। वह धर्म के क्षणिक जोश में अन्य कोई ऐसा कार्य नहीं करता जो मानवता से कोसों दूर हो क्योंकि उसके धर्म ने उसे आदर्श मानव बनने की शिक्षा दी है।

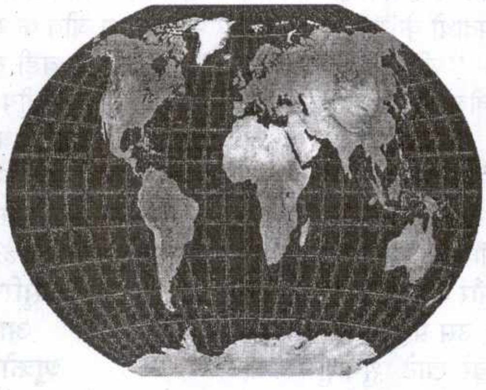

मज़हब या सम्प्रदाय बिना इस बात का विचार किये कि अमुक प्राणी निरपराध है या सापराध, संसार के लिए उपयोगी है या अनुपयोगी, उसके विचारानुसार कुछ विशेष प्रकार के प्राणियों को छोड़कर अन्य किसी भी प्राणी की हत्या में अपराध नहीं समझता। यहां तक कि किसी विशेष अवसर पर तो उनकी निरपराध हत्या को कुर्बानी या बलिदान तक का दर्जा देते हैं। धर्म निरपराध प्राणियों की हत्या महापाप तथा घोर अपराध समझता है। वेद का आदेश है कि हे हिंसक प्राणी! निरपराधी की हत्या निश्चय पूर्वक अति दुखदायी तथा भयंकर इसलिये है, कि हे हिंसक प्राणी! तू किसी को भी निरपराध घोड़े, गाय तथा मनुष्य आदि प्राणी को मत मार। अत: अब आप देखें कि वेद निरपराध प्राणियों की हत्या का कितने जोरदार शब्दों में निषेध करता है। वेद यदि किसी आतताई व अत्याचारी को दण्ड देने का आदेश भी देता है, वह भी इतर निरपराध प्राणियों कि रक्षा के लिये। इसीलिए तो कहा है कि - ''**वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति**''

मज़हब या सम्प्रदाय केवल अपने ही अनुयायियों का हित चिंतन करना सिखाता है, यहां तक कि दूसरे धर्मावलम्बियों को मारना तथा असंख्य कष्ट देने को पुण्य अर्थात् सबाब तक समझतें है।

४) वहीं धर्म विश्व प्रेम का पाठ पढ़ाता है। धर्म की दृष्टि में प्राणी मात्र एक समान है, क्योंकि वे एक ही परमपिता की अमृत सन्तान है। अत: धर्म का यह आदेश है कि परस्पर मतैक्य या विचार साम्य न होने पर भी प्राणी मात्र को अपना मित्र या बन्धु समझकर परस्पर प्रेम तथा मित्रता ही करनी चाहिए, परस्पर द्वेष या वैरभाव कदापि नहीं। जैसा कि यजुर्वेद का वचन है- ''**मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।**

हे प्रिय मनुष्यों! तुम प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखों। प्रत्येक मनुष्य की बुद्धि तथा विचार एक दूसरे से भिन्न है, अत: परस्पर भिन्न विचारों का होना भी स्वाभाविक ही है। विचारों के न मिलने से परस्पर मतभेद हो सकता है, किन्तु मतभेद के सिद्धान्त के कारण हम एक दूसरे के शत्रु बन जायें यहां तक की एक दूसरे पर अमानुषिक अत्याचार करें। यह धर्म नहीं सिखाता। धर्म तो वेद के शब्दों में कहता है कि इस पृथ्वी पर निवास करने वाले, अनेक भाषाओं के बोलने वालों, परस्पर भिन्न-भिन्न विचारों को रखने वाले मनुष्यों को भी परस्पर इस प्रकार प्रेम से रहना चाहिए जैसे की एक ही परिवार में भिन्न- भिन्न विचार वाले प्राणी मिल कर रहते हैं। यह तभी हो सकता है जब कि विचारों में भिन्नता होने पर भी सब के हृदय एक हों, सब अपने को एक प्रभु का अमृत पुत्र समझें। इसीलियें तो वेद कहता है कि-

''**सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।**
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।'' अथर्व. ३.३०.१

हे मनुष्यों! मैं तुमकों समान हृदय वाला, एक मन वाला बनाता हूँ। तुम आपस में एक दूसरे के साथ इस तरह प्रेम करो, जैसे कि गाय अपने नवजात वत्स के साथ करती है। वेद में कितना सुन्दर आदर्श प्रेम को हमारे सम्मुख रखा है। नव प्रसूता गाय अपने नवजात बछड़े से जैसा व्यवहार करती है, यदि वैसा ही पावन प्रेम हम एक दूसरे के साथ करना सीख जायें तों मानव समाज से द्वेष भाव सर्वथा लुप्त हो जायें और विश्व में सुख और शांति का साम्राज्य छा जाये। यही सच्चे धर्म की दूसरे शब्दों में वेद की शिक्षा है। यदि वेद किसी आतताई, अत्याचारी या बदमाश को भी दण्ड का विधान करता है तो वह भी उसके हित तथा प्रजा के कल्याण के लिए।

धर्म तो पावन प्रेम की पुनीत डोरी को और भी लम्बी तथा मजबुत बनाता है। धर्म का कहना है कि हे मनुष्यों! तुम केवल एक दूसरे को परस्पर मित्र तथा बन्धु ही ना समझो प्रत्युत सब प्राणियों को अपना ही रूप समझो, क्योंकि सब जीव, शरीर तथा संख्या में भिन्न-भिन्न होते हुए भी आत्मा स्वरूप एक ही तत्व हैं। अत: तुम प्राणी मात्र से प्रेम तथा सद्व्यवहार करो, जैसा कि तुम स्वयं अपने साथ करते हो। इसी भावना को यजुर्वेद में व्यक्त किया है:-

''**यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति।**
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति।।

thearyasamaj.org

जो सब प्राणियों को अपने ही अन्दर देखता है और अपने को सब प्राणियों के अन्दर, वह कभी भी किसी के प्रति द्वेष आदि निन्दित कर्म नहीं करता। कैसा वेद का विश्व प्रेम का सुन्दर उपदेश है।

५) धर्म प्रत्येक पदार्थ के यर्थाथ स्वरूप को दर्शाता है - मानव जीवन का चरम उद्देश्य प्रत्येक पदार्थ के यथार्थ स्वरूप को जान लेना है। अत: धर्म का उद्देश्य भी वस्तु मात्र के यथार्थ स्वरूप को दर्शाता है जो धर्म ऐसा नहीं करता वह उलटा जिज्ञासु के मन में सन्देह और भ्रांति उत्पन्न कर देता है। अत: वह धर्म नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक मनुष्य को संसार में मुख्यतया चार वस्तुओं के यर्थाथ स्वरूप को जान लेना परम आवश्यक है।

प्रथम में क्या हूँ अर्थात् मेरा क्या स्वरूप है? द्वितीय मेरे आराध्य देव भगवान क्या हैं? तृतीय मेरे आराध्य देव भगवान ने मेरे कल्याण के लिए किस वस्तु से इस विश्व को रचा है? उसका यथार्थ स्वरूप क्या है? चतुर्थ इस जीवन का चरम लक्ष्य क्या है? दूसरे शब्दों में- जीव, ईश्वर, प्रकृति और मोक्ष इन चारों के यथार्थ स्वरूप को जान लेना ही मानवीय जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। वेद में इन चारों पदाथों के स्वरूप को बड़े ही मार्मिक शब्दों में दर्शाया गया है। सर्वप्रथम- ''जीव'' के ही स्वरूप को लीजिए, यजुर्वेद के ४० वें अध्याय में जीव के स्वरूप को बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। वेद कहता है कि-

''वायुरनिलममृतथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ओं क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतं स्मर।।''

हे जीव! तू वायु, अनिल और अमृत है और यह तेरा पार्थिव शरीर एक दिन भस्म होने वाला है, अर्थात् नाशवान और क्षणिक है। इसलिए हे पुरूषार्थ मय जीव! तू अपने कल्याण के लिए उस प्रभु के परम पावन पवित्र ओम् नाम का स्मरण कर और अपने खरे खोटे, शुभाशुभ कमों को स्मरण कर। इस मंत्र मे जीव के तीन विशेषण दिये गये हैं। १- वायु २-अनिल और ३- अमृत। वेद में केवल इन तीन शब्दों से ही जीव के इस यथार्थ स्वरूप को बड़ी ही सुन्दरता से दर्शा दिया है।

वायु शब्द संस्कृत की ''वा'' धातु से बना है। वा का अर्थ है गति। निरूक्त के कथनानुसार गति शब्द के तीन अर्थ हैं, ज्ञान,गमन, और प्राप्ती अर्थात् आत्मा ज्ञान स्वरूप प्रयत्नशील अर्थात् अपने कर्मानुसार संसार के सुख दुख प्राप्त अर्थात् भोग करने वाला तीक्ष्ण आत्म स्वरूप को दर्शाने वाला शब्द है।

अनिल शब्द दो शब्दों के मेल से बना है, न इलम्- अनिलम्। वैदिक भाषा में इला नाम है प्रकृति का अर्थात् जीव प्रकृति अर्थात् जड़ पदार्थ नहीं, जीव न तो स्वयं प्रकृति है और न ही प्रकृति के पदाथों से बना है। प्रकृति जहां जड़ है अर्थात् ज्ञान शुन्य है, वहां आत्मा चेतन स्वरूप है, तथा सुख का भण्डार है, वेद में आत्मा की तीसरी विशेषता अमृत है। अर्थात् आत्मा अमर है, जन्म-मरण से रहित सदा अविनाशी है, अर्थात् वेद ने केवल वायु, अनिल, और अमृत इन तीन शब्दों में कैसी सुन्दरता से दर्शाया है फिर भी वेद आत्मा को चेतावनी देता है- हे प्रिय आत्मन्! तुम कहीं भुल कर इस शरीर को ही अपना न समझ लेना। देख जहां तू अविनाशी तथा अजर-अमर है। वहां यह शरीर तो नाश्वान् और क्षणभंगुर है। एक दिन भस्म होने वाला है।

प्रकृति के स्वरूप को भी बड़ी सुन्दरता से दर्शाया गया है। मंत्र में प्रकृति को स्वधा नाम से कहा गया है और प्रकृति के कार्य शरीर को **'मर्त्य'** अर्थात् मरण धर्मा जड़ शरीर स्वधा शब्द का अर्थ है। **स्व रूपं सत्ता वा धारयति या सा स्वधा।** अर्थात् जो सदा अपने स्वरूप को धारण कर रही है तथा जिसका स्वरूप कभी नष्ट नहीं होता, प्रलय काल में भी जो सब पदाथों को अपने अन्दर ही धारण कर लेती है,वह है- स्वधा वेद में अन्यत्र भी कहा गया है- **''आनीद वातं स्वधया तदेकम्''**

सृष्टि के उत्पन्न होने से पहले परमात्मा स्वधया अर्थात् प्रकृति के साथ मौजूद था। वेद के उपर्युक्त मंत्र में प्रकृति को स्वधा कह कर यह भली प्रकार दर्शा दिया गया है कि प्रकृति सदा अपने स्वरूप को धारण किये रहने के कारण वह अनादि और अनन्त है। न ही प्रकृति का कोई आदि है ना अन्त। किन्तु इसके साथ वेद ने यह भी कहा है कि जहां प्रकृति स्वरूप से अनादि है वहां उसके कार्य रूप विकृति शरीर आदि मर्त्य अर्थात् मरण धर्म से युक्त और नाशवान् है। तात्पर्य यह है कि प्रकृति स्वरूप अनादि होते हुए भी बनती और बिगड़ती रहती है। परमात्मा और जीव की अनादि सत्ता एक रस रहने वाली है। हमने देखा कि इस छोटे से मंत्र में जहां जीव के स्वरूप को प्रकट कर दिया- वहां प्रकृति के यथार्थ स्वरूप को भी बड़ी सुन्दरता से दर्शा दिया गया है।

अथर्ववेद द्वितीय काण्ड के ११वें सूक्त में जीव के स्वरूप को दर्शाने वाले ५ मंत्र एक साथ आते हैं। उनमें से हम केवल दो मत्रों को आपके लाभार्थ यहां उद्धृत करते हैं। इन मंत्रों में स्वयं वेदमाता अपने अमृत पुत्र- पुत्रियों को आकर के लोरियों के रूप में उपदेश देती है अर्थात् बोध करवाते हुए कहती है:-

सूरिरसि वर्चोधा असि तनूपानोसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम।।
शुक्रोसि भ्राजोसि स्वरसि ज्योतिरसि।
आप्नुहि श्रेयांसमति समं क्राम।।

हे अमृत पुत्र जीव! तू **(सूरिः असि)** ज्ञान स्वरूप है। **वर्चोधाः असि**- वर्चस्वी है, **तनुपानः असि**- तू यह नश्वर शरीर नहीं अपितु इस शरीर का रक्षक और पालन करने वाला अमर आत्मा है।

शुक्रः असि- तू शुद्ध पवित्र तथा बल और शक्ति का भण्डार है, तू **भ्राजः असि**- तेजस्वी है। **स्वः असि**- तू सुख और शांति का भण्डार है, **ज्योतिः असि**- तू अविद्या अंधकार से दूर स्वयं साक्षात् परम ज्योति है। इसीलिए हे प्रिय जीव! तू अपनी वर्तमान दीन-हीन दशा का परित्याग कर और अपने कल्याणमय वास्तविक स्वरूप को पहचान। वेद ने कितने सरल तथा स्पष्ट शब्दों में आत्मा के स्वरूप को हमारे सम्मुख रखा।

संसार का अन्य कोई भी मज़हब या सम्प्रदाय नहीं जो इस प्रकार आत्मा के यथार्थ स्वरूप को हमारे सम्मुख रख सके। यदि मनुष्य अपने इन वेदोक्त दिव्य गुणों को अपने जीवन में चरितार्थ कर ले और अपने यथार्थ स्वरूप को पहचाने, वह कितना महान् व उच्च बन सकता है। सारे ऋषि मुनी महात्माजन अपने अन्दर इन वेदोक्त दिव्य गुणों को धारण करने से ही उच्च तथा महान् बने है। अत: आत्मा के यथार्थ स्वरूप को दर्शाकर यदि उससे सुख और शांति पहुँचा सकता है तो वह केवल एक मात्र वैदिक धर्म ही है, मज़हब या सम्प्रदाय नहीं। अब आप- ईश्वर के स्वरूप को लीजिये जहाँ मज़हब और सम्प्रदाय ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को दर्शाने में असमर्थ है, वहाँ धर्म ईश्वर के यथार्थ को बड़ी सुन्दरता से हमारे सम्मुख रखता है।

thearyasamaj.org

यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का ८वाँ मंत्र प्रभु के यथार्थ तथा दिव्य स्वरूप को हमारे सम्मुख रखता है। मंत्र इस प्रकार है:-

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनिषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।

अर्थात् वह प्रभु सब दिशाओं में रमा हुआ, सर्वशक्तिमान, काया अर्थात् शरीर से रहित, नस-नाड़ियों के बन्धन से अलग, शुद्ध, पवित्र, पाप कर्म तथा पाप वासनाओं से रहित, पूर्णज्ञानी, सब के मनोभावों को जानने वाला, सब में रमा हुआ, स्वयं प्रकाश स्वरूप और अपनी अनादि जीव रूप प्रजा को उसके क्रमों का यथार्थ रूप में फल देने वाला है। इसी प्रकार अथर्ववेद में भी प्रभु के स्वरूप का निम्न शब्दों में बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है-

''अकामो धीरा अमृतः स्वयं भू रसेन तृप्तो न कुलश्चनोवः।
तमेव विद्वान् व विभाय मृत्योरात्मानं धीरमजरं युवानम्।।''

प्रभु सर्व प्रकार की कामनाओं से रहित, सकल जगत् का धारण करने वाला, जन्म-मरण के बन्धन से दूर, निराधार, आनन्द का भण्डार, सर्वव्यापक तथा सर्वगुणों का आगार अर्थात् जिसमें किसी प्रकार की भी कमी नहीं। ऐसे पूर्ण निश्चल प्रभु को जान कर ही मनुष्य मृत्यु के भय से पार हो जाता है। इस मंत्र में जहां प्रभु के यथार्थ स्वरूप को दर्शाया गया है। वहां यह भी स्पष्ट बता दिया गया है कि मनुष्य प्रभु के इस दिव्य स्वरूप को जानकर ही जन्म-मरण के बन्धन से छूट कर मृत्यु के भय से पार हो जाता है। प्रभु के यथार्थ स्वरूप को जानने तथा उसे प्राप्त करने का मुख्य साधन **''प्रभु भक्ति''** ही है। अतः मानव धर्म का यह भी कर्तव्य है कि जहां वह प्रभु के यथार्थ स्वरूप को दर्शाता है वहां वह प्रभु भक्ति के वास्तविक स्वरूप को भी दर्शाए। अर्थात् यह बताया कि प्रभु के किन गुणों का चिंतन करना चाहिये। जिससे कि वह उपासना द्वारा प्रभु के यथार्थ स्वरूप का चिंतन करता हुआ, अपने प्रियतम के दर्शन कर सके। जहां मज़हब या सम्प्रदाय प्रभु भक्ति के यथार्थ स्वरूप को दर्शाने में असमर्थ है, वहां हमारे सम्मुख उपासना के यथार्थ स्वरूप को बहुत ही सुन्दरता से उपस्थित करता है। इस संबंध में अथर्ववेद के एक मंत्र का भाव इस प्रकार है कि-

हे भक्त! तू उस एक भक्त की ही स्तुति कर अर्थात भक्ति कर, जो कि इस संसार के सागर रूपी सागर में रम रहा है। जो अपने उपासकों अर्थात् भक्तों को इस संसार भँवर से पार करने वाला है। जो अपने भक्तों को सदा सत्य की प्रेरणा करता है। आदम और हौवा की तरह कभी किसी को गुमराह नहीं करता। जिसकी वेदवाणी में किसी के प्रति द्रोह अर्थात बेर भाव नहीं करता। जो सम्पूर्ण बलों तथा शक्तियों का भण्डार है, तथा सुख और शांति का आधार है। प्रभुभक्ति के द्वारा प्रभु के कैसे दिव्य स्वरूप का चिंतन करने का आदेश दिया है। वास्तव में यदि भक्त भक्ति द्वारा प्रभु के इस दिव्य स्वरूप का चिंतन करें तो वह कितना उच्च तथा महान् बन जाये। इस मंत्र में भक्त को यह भी निर्देश दिया है कि हे भक्त! तू उस एक प्रभु की भक्ति कर, नाना प्रकार की स्वयं कल्पित जड़ देवी-देवताओं या पीर-पेगम्बरों की शरण में मत जा। अतः इससे यह भी सिद्ध होता है की सच्चा मानव धर्म मनुष्य को उस एक ही प्रभु की पूजा करना सिखाता है। इसीलिये एकेश्वर उपासना पर जितना बल वेद देता है उतना अन्य कोई धर्म ग्रंथ नहीं।

उपरोक्त समस्त कथनों से तथा उदाहणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि विश्व शांति का एक मात्र स्रोत वैदिक धर्म ही है। अन्य कोई भी मज़हब या सम्प्रदाय उसका स्थान नहीं ले सकता। ●

नव भारतोदय को किरणांजलि देता सूर्योदय

- देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००२(उ.प्र.)
दूरभाष - ०५७१-२७४२०६१

भारत और सूरज तुल्यार्थक शब्द हैं। भा (प्रकाश) में रत (संलग्न) जो रहता है, वही तो सूरज है और वही भारत है। सूरज आकाश में रहता है, किन्तु उसका प्रकाश सर्वत्र भूलोक में भी रहता है। भारत भूलोक में रहता है, किन्तु इसके यश का प्रकाश आकाश तक व्याप्त रहता है। भारत में के इस भूभाग का सनातन नाम आर्यावर्त है। आर्यावर्त भी भारत का समानार्थक है, क्योंकि इसकी परिभाषा में जो तत्व निहित हैं-वह है **''आर्याज्योतिरग्राः''** (ऋ. ७, ३३, ७) अर्थात् इस भूमि पर उत्पन्न पुरुष या स्त्री आर्य है, क्योंकि जिस ओर वे चलते हैं, उनके आगे-आगे ज्योति चलती है। सृष्टि सृजन के बाद लगभग दो अरब वर्ष तक भारत भू की ज्योति जगमगा तो रही, किन्तु महाभारत काल के कुछ सहस्त्र वर्ष पूर्व इस ज्योति पर धुन्ध छाई तो छाती ही चली गयी। बीच-बीच में कतिपय वर्चस्वी विद्वान् ब्राह्मण और तेजस्वी राजन्य आये, उन्होंने सूरज पर छाये बादलों को छाँट तो दिया, किन्तु उनके हटते ही आततायी शक्तियों के प्रबल षड्यन्त्रों के वशीभूत होकर यह भारत भूमि (भारतमाता) परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ती चली गयी। फिर से भारत माता के वीर सपूतों ने बलिदान किये और १५ अगस्त, १९४७ को इसकी बेड़िया कटी तो, किन्तु शरीर विकलांग हो गया और पुत्रों ने यथा स्थिति से समझौता करना ही उचित समझा। अब तक इस भारत भूमि को आर्यावर्त भारतवर्ष के प्रभा मण्डल से हटकर एक और संज्ञा प्राप्त हो गई थी-वह है इन्डिया।

भौतिक रूप से अंग्रेजी संज्ञा से संग्राम तो रूक गया था, किन्तु इन्डिया और भारत एक नया संघर्ष चल पड़ा था। भारतीय प्रजा के मतों से जीतकर आने

thearyasamaj.org

वाले राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री इन्डिया के पक्षधर बनकर अंग्रेजों के पद-चिन्हों पर चलकर ही शासन करने लगे थे। इस अवधि में भारतीय मनीषा के कतिपय राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री भी आये, किन्तु उनके चारों ओर इन्डिया भक्तों का ही घेरा बना रहा। इसी ऊहापोह में ६६ वर्ष यों ही निकल गये। सन् २०१४ के लोकसभा के सामान्य निर्वाचन में सम्पूर्ण भारत की जनता ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा गोधरा से गोहाटी तक भूमिपुत्रों को विजय श्री प्रदान कर दी और दयानन्द, पं. श्याम जी कृष्ण वर्मा, महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल और मोरारजी भाई देसाई की गुजरात भूमि के प्रतिनिधि नरेन्द्र भाई दामोदर दास मोदी को देश के प्रधानमंत्री के रूप में पदासीन कर दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने हिन्दू (आर्य) होने और कहलाने पर गर्व है। मोदी प्रथम राजनेता है, जिन्होंने जीतने के बाद काशी में गंगा की आरती की। संसद के केन्द्रीय कक्ष में जब मोदी के सम्मान में आडवाणी जी ने कहा-उन्होंने कृपा करके संगठन को विजय दिलाई है। मोदी का उत्तर सदैव स्मरणीय रहेगा, उन्होंने कहा-मेरे लिए यह कृपा शब्द कभी भी उचित नहीं है। मैं भारत माँ की सन्तान हूँ, कोई सन्तान माँ पर कृपा नहीं कर सकती, वह तो केवल समर्पित होकर सेवा कर सकती है जैसे भारत मेरी माँ है, वैसे ही भा.ज.पा. भी मेरी माँ है, मैं उस पर कृपा नहीं-उसकी सेवा कर रहा हूँ, आज ऊँचा हूँ तो अपने बड़ों के कन्धों के सहारे ऊँचा हुआ हूँ, यह उनकी कृपा है।

मोदी जी ने संसद में प्रवेश करते समय सदन के द्वार पर मस्तक झुका कर प्रणाम किया। मानो संसद में भारतीयता की आत्मा ने प्रवेश किया हो। नरेन्द्र मोदी इस देश की १२५ करोड़ की जनता के हितों की बात करते हुये कहते हैं कि मैं अपने धर्म का आचरण करता हूँ और सभी धर्मों का आदर करता हूँ, किसी भी प्रलोभन के लिए पक्षपात नहीं करूँगा और दूसरे विचारों को मानने वालों के साथ अन्याय नहीं होने दूँगा। यदि यह चुनाव मोदी नहीं जीतते तो इन्डियामुखी परधर्मी जीतते और अगले पाँच वर्ष में यह देश भारत की विचारधारा का देश नहीं रह पाता और इन्डिया इस पर छायी रहती। हम पूर्व के सूर्योदय की उपेक्षाकर पश्चिम के अस्ताचल के गर्त में गिर जाते। मोदी जी की बड़ी चुनौती यह रहेगी कि वे जनता की अकूत आकांक्षाओं की उड़ान के बल पर उच्चासन पर पहुँचे हैं, इसलिये पारदर्शिता पूर्वक उसकी अभिलाषाओं की पूर्ति का लक्ष्य बनाये रखें। इसका भरोसा उनके इन वाक्यों से लगता है **''सबका साथ सबका विकास''** यह सरकार सवा सौ करोड़ देशवासियों की है। मोदी ने अपने प्रधानमंत्री पद के शपथ ग्रहण समारोह को न केवल ऐतिहासिक बना दिया, प्रत्युत भारत के चक्रवर्ती गणराज्य की भूमिका का प्रदर्शन भी कर दिया। उन्होंने दक्षेस के शासक राजनेताओं को न केवल बुलाया ही, प्रत्यत प्रत्येक के अतिथि निवास में जाकर राष्ट्रभाषा में बात की। अल्पकालिक प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर जी मालदीव में आयोजित दक्षेस शिखर सम्मेलन में अपना मौलिक हिन्दी भाषण करके सभी उच्च प्रतिनिधियों की न केवल सराहना अर्जित कर चुके थे, प्रत्युत यह मोदी जी के लिए उनका सफल मार्ग-दर्शन था। अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेशमंत्री के रूप में भी संयुक्त राष्ट्र संघ में यद्यपि हिन्दी भाषण दिया था, किन्तु यह मूल अंग्रेजी का हिन्दी अनुवाद मात्र था।

विदेशी शासनाध्यक्ष अपने देश या भारत में अपनी राष्ट्रभाषा में बात करते हैं, हमारे देश के शासनाध्यक्ष उसे तात्कालिक अंग्रेजी अनुवाद से समझते हैं। यह कार्य कोई दुभाषिया ही करता है। विदेशी राजनेताओं के मध्य हिन्दी में संवाद करते समय दुभाषिया द्वारा यह अनुवाद द्वारा सम्बन्धित भाषाओं में भी कराया जा सकता है। पड़ोसी धर्म निभाते हुए जो मोदी ने पहल की, वह विशेष श्लाघनीय है। उन्होंने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को, उनकी माँ के लिए एक सुन्दर शाल भेंट की, तो उन्होंने अपने देश जाकर मोदी की माँ के लिए एक श्वेत साड़ी का उपहार भेजा। पड़ोसियों से स्नेह सम्बन्धों का इससे बड़ा संकेत क्या होगा? कि अल्पकाल में ही समय निकालकर मोदी ने भूटान की और विदेशमंत्री सुषमा स्वराज ने बांग्लादेश की यात्रायें की। जो अमेरिका गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए, उन्हें अमेरिका में प्रवेश की अनुमति नहीं दे रहा था, वहाँ के ही सांसद अपनी उच्च प्रतिनिधि सभाओं में मोदी के सम्बोधन हेतु आतुर हो उठे हैं। रेलभाड़ा तथा अन्य वस्तुओं की मूल्यवृद्धि जनता के लिए चिन्ताजनक होती है, इससे यथा संभव बचने की चेष्टा होनी चाहिए। मन्त्रिमण्डल ने सर्वप्रथम प्रस्ताव पारित करके विदेश में जमा कालेधन को भारत लाने का निर्णय तो कर दिया है, किन्तु इसके लिए विश्राम नहीं, निरन्तर होने वाली प्रक्रिया का प्रदर्शन भी होना चाहिए। परतन्त्रता काल में विदेशियों द्वारा लूट और स्वतन्त्रता काल में ६६ वर्षों तक भ्रष्टाचार की छूट से भारत माता के शरीर में चुभे हुए काँटों को निकालने में पीड़ा तो होती है, किन्तु इन घावों पर निष्पक्षता, नैतिकता एवं स्नेह सौहार्द का मलहम लगने से कुछ राहत भी मिलती है। लेखक का सुझाव है कि प्रत्येक माह की एक निश्चित तिथि व समय पर प्रधानमंत्री मोदी का सहानुभूतिपूर्ण दस मिनट का नियमित सम्बोधन दूरदर्शन पर होना चाहिए।

हमारे वे वयस्वी-वयधनी वरिष्ठ व अतिवरिष्ठ नागरिक देश में चरित्र-हनन की पीड़ाओं को सहते व देखते हुए इस संसार से विदा हो गये, उनके लिये अमर बलिदानी सरदार करतार सिंह का न्यायालय में दिया गया बयान आश्वास्तकारी है। वे बोले-मैंने सभी जुर्मों को स्वीकार कर लिया है और मैं यह भी जानता हूँ, कि इनके दो ही दण्ड मिल सकते हैं- एक काला पानी और दूसरा मृत्यु दण्ड। मैं मृत्यु दण्ड को ही पसन्द करूँगा, क्योंकि इससे शीघ्र ही मुझे दूसरा जन्म मिल जायेगा और मैं अपनी मातृभूमि की सेवा अगले जन्म में भी कर सकूँगा। ऐसी दिवंगत आत्माओं को बाल या किशोर अवस्था से ही-वेद माता भी अपना मनोहर उपहार पूर्ण वरदान देते हुए बोल पड़ेगी-**''भारतीळे सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे। ता नश्चोदयत श्रिये।।''** (ऋ. १.१८८.८) अर्थात् भारत सूर्य का नाम है, उसकी सम्बन्धिनी 'भारती' प्रभालोक की देवी है, 'इला' भूदेवी है और सरस्वती अन्तरिक्ष की देवी है।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि हमारे देशवासियों के मस्तिष्क सूर्य-प्रकाश से चमकें, शरीर दृढ़ता व शक्ति से दमकें, और हृदय वायु की भांति क्रियाशीलता के संकल्प से उमगें। देशवासी मातृभूमि, मातृसंस्कृति एवं मातृभाषा की गरिमा को बढ़ाकर **''विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा''** ध्वज गान को ध्येय गान अवदान बनाके चरितार्थ करते रहें। **जय भारत वन्दे मातरम्** ●

जो मनुष्य दुष्टों का आचरण और संग छोड़ कर परमेश्वर और आप्त सत्यवादी विद्वान् की सेवा करते हैं, वे धन-धान्य से युक्त हो दीर्घ अवस्था वाले होते हैं। -यजु. ३५/१६

thearyasamaj.org

आर्यों के नाम दूर देश से चिंतन हेतु पत्र

- आचार्य ज्ञानेश्वरार्य
वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़,
जिला-सांबरकाठा (गुजरात)
चलभाष - ०९०९९७००३८५

समादरणीय श्रीयुत, सादर नमस्ते।
ईश्वरकृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

अनेक आर्य सज्जनों के आमन्त्रण पर जून १९/१४ को यहाँ पहुँचा खाड़ी देशों की यह मेरी दूसरी यात्रा है। यहाँ मैं आर्य परिवारों को सांख्य दर्शन का अध्यापन, ध्यान, प्रवचन, शंका-समाधान करता हूँ। जब भी अवकाश मिलता है, आस-पास के देशों में भ्रमणार्थ जाता हूँ। दुबई देश में रहते हुए मैंने आबु धाबी, शारजाह, अजमान, फुजैराह, रस् अल् खैमाह आदि सात देशों की यात्रा की है। मुझे बहुत कुछ नया ज्ञान-विज्ञान, प्रत्यक्ष देखने, सुनने-पढ़ने को मिला, यह मेरी १९वीं विदेश में वैदिक धर्म प्रचार यात्रा है।

बीसवीं शताब्दी के मध्य तक इन खाड़ी देशों में खारे समुद्र, रेत के टीलों, गर्म धुल भरी हवाओं के कुछ भी नहीं था। अत्यन्त प्रतिकूल प्राकृतिक विपन्न जलवायु के ये कैसे जीतें थे, यह कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लेकिन आज वहीं पर अत्याधुनिक तथा विशाल, ५०-८०-१०० मंजिले आकर्षक भवनों को देखते हैं तो बड़ा आश्चर्य होता है, मन में विचार होता है कि कहीं स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं, कोई जादू तो नहीं है!!! वास्तविकता यह है कि यह सब मन में किसी उद्देश्य को बनाकर उसको पूरा करने हेतु प्रबल भावना, दृढ़ संकल्प, परम पुरूषार्थ तथा घोर तपस्या का परिणाम है।

मैंने सुना कि यहाँ के (शेख) राजा, जब अमेरिका, यूरोप आदि देशों की यात्रा करते हुए वहाँ की भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, सब प्रकार की उन्नति देखते थे तो उनके मन में यह विचार उत्पन्न होते थे कि क्या मेरे देश में ऐसे भवन, चौड़ी सड़कें, यातायात के साधन, होटल, रिसोर्ट, क्लब, बाग, बगीचे, मनोरंजन के साधन, व्यापार मण्डी, सुख-सुविधाएँ बनायी जा सकती हैं। जिनके कारण लोग आकर्षित होकर आवें, रहें?

बस एक दिन संकल्प कर लिया, योजनाएँ बनायी गईं, अमेरिका यूरोप, एशिया के देशों से सम्पर्क किया, मंत्रणा हुई, अनुबन्ध हुए, लोहा, सीमेंट, पत्थर, लकड़ी, इंजीनियर, श्रमिक, आदि जिन-जिन साधनों की अपेक्षा थी, प्राप्त किये गये। कार्य प्रारंभ हो गया, शेख के मन में एक ही भावना कि कोई भी निर्माण हो, अद्भुत, अद्वितीय आकर्षक होना चाहिए। समुद्र में मीलों तक पत्थर, कंकर, रेत डालकर पहाड़ बनाकर उन पर आकाश को छूने वाली, ऊँची, भव्य इमारतें बनायी गयी और सुन्दर नगर बसाया गया।

दूसरी तरफ भूमि में गहरी खाईयाँ खोदकर समुद्र के पानी को नहरों के रूप में फैला दिया गया। अन्य देशों से जहाजों में उपजाऊ मिट्टी मंगाकर, रेत के मैदानों में बिछाकर, बड़े-बड़े, उद्यान, खेत, बगीचे, उपवन, वाटिकाएँ बना दी। जहाँ घास का एक तिनका भी नहीं उगता था वहाँ पर रंग-बिरंगे, फूल-फल, घास के मैदान बना दिये गये। बसों, रेलों, ट्रामों, भण्डारों आदि की समुचित व्यवस्था करके सर्वत्र आवागमन को सरल बना दिया गया।

कृत्रिम रूप से बने सभी साधन सुविधाओं से युक्त उत्तम व्यवस्था, कुशल प्रबन्ध, अनुशासन, दण्ड व्यवस्था के कारण विश्व के १०० से भी अधिक देशों के नागरिक यहाँ अनेक प्रकार के व्यवसायों में लगे हुए हैं। अमीरता का देश विश्व का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक एवं पर्यटन का केंद्र बन गया है। इन देशों के मुख्य नगरों में घूमते हैं तो यह भ्रम हो जाता है कि कहीं हम लंदन पेरिस, टोक्यो, सिंगापुर में तो नहीं है?

इन देशों के वैभव, सम्पदा, विकास, उन्नति को देखकर, वही प्रश्न मन में उपस्थित होता है कि ये देश अत्यन्त प्रतिकुल वातावरण, जल-वायु तथा विपन्नता के होते हुए कुछ ही वर्षों में देश को स्वर्ग के समान सम्पन्न सुन्दर बना सकते हैं तो हम क्यों नहीं? जहाँ पर हर प्रकार की प्राकृतिक सम्पदा, साधन, अनुकूलता हो। जिस देश में शिल्प, कला, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, वेशभूषा, धर्म, आचार, विचार, व्यवहार, सिद्धान्त तथा श्रेष्ठ गौरवमयी आदर्श परम्पराएँ हजारों-लाखों वर्षों से चली आ रही हो, वह उन्नत क्यों नहीं हो रहा है, इन देशों के समक्ष हमारे इस आर्यावर्त की ऐसी दुर्दशा क्यों है? हमारे देश के अधिकांश लोग और उनका जीवन दयनीय, निकृष्ट, विपन्न, घृणित तुच्छ, हेय क्यों है? हम चाहते ही नहीं है, चाहे तो हो सकता है।

विश्व का भ्रमण करने के पश्चात् मेरी समझ में यही आया है कि हमने उन्नति की सीमा व्यक्ति या परिवार तक बना ली है। हमारे नगर, राज्य, राष्ट्र का नाम विश्व में हो, हमसे लोग प्रेरणा लें, सीखें, अनुकरण करें, यहाँ आवें, हमारा सम्मान करें, ये विचार कभी भी मन में उठते नहीं हैं तो कार्य क्या होगा। हे देव! हमारे देशवासियों की दयनीय, दशा से उबार कर, सम्पन्न बनने की प्रेरणा आप ही प्रदान करो। हम अपनी लुप्त हुई गरिमा को पुनः जीवित करके, विश्वगुरु बनकर, **''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''** के आप के वेद उद्घोष को साकार करें, यही प्रार्थना है स्वीकार करें। ●

thearyasamaj.org

वेदमाता

भारतीय संस्कृति में कई माताएँ मानी जाती हैं जैसे-भारतमाता, गंगामाता, गोमाता, गीतामाता। इसी तरह एक माता और भी है-वेदमाता। वेद आर्य संस्कृति का सबसे बड़ा ग्रंथ है इसीलिये इसको माता बताया गया है। '**भारतमाता**' शब्द में भारत शब्द पुल्लिंग है किन्तु भारत को माता मानकर '**भारतमाता**' कहा जाता है। उसी प्रकार वेद शब्द पुल्लिंग है किन्तु संसार में माता से बड़ा कोई रिश्ता नहीं होता है उसी प्रकार वेद से बड़ा कोई ग्रंथ नहीं है अतः इसे '**वेदमाता**' कहा जाता है।

वेदमाता का अर्थ है-वेद एवं माता, वेद ही माता है। कुछ वेदमाता शब्द का अर्थ '**वेदानां माता**' (वेदों की माता) करते हैं। यह सही नहीं है क्योंकि वेदों की कोई माता नहीं होती है। कुछ लोग वेदों की माता '**गायत्री**' बताते हैं। एक गायत्री मंत्र को वे माता मानते हैं। चारों वेदों के २०३७६ मंत्रों में से एक मंत्र सम्पूर्ण वेदों की माता नहीं हो सकता है। वह तो वेद का एक छोटा सा अंश है।

अथर्ववेद के १९वें काण्ड के सूक्त ७१ के प्रथम मंत्र में '**वेदमाता**' (वेदवाणी) का वर्णन इस प्रकार किया गया है-

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् आयुः
प्राण प्रजां पशुं कीर्ति द्रविण ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

अर्थ - मेरे द्वारा वेदमाता की स्तुति की गई है। मेरी स्तुति से प्रसन्न होकर वेदमाता हम द्विजों को पवित्र करे, प्रेरित करे तथा वह हमें आयु, आत्मबल, सन्तान, पशु, यश, धन तथा ब्रह्मतेज देकर ब्रह्मलोक (ज्ञान लोक) में पहुँचाये।

- आचार्य रामगोपाल सैनी
प्राचार्य - पी. जी. कॉलेज
फतेहपुर (सीकर), राज.
चलभाष-०९८८७३९३७१३

अतिथि यज्ञ-कर्त्ता

त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं वर्मेव स्यूतं परि पासि विश्वतः।
स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृज्जीवयाजं यजते सोमपा दिवः।।

ऋ. १/३१/१५

त्वम् अग्ने = तुम हे अग्ने! **प्रयतदक्षिणम्** =पवित्र दक्षिणा देने वाले
नरम् = नर को, **वर्मे व स्यूतम्** = कवच की भांति
परिपानि विश्वतः = सब ओर से रक्षण देता है।
स्वादुक्षद्मा = स्वादु भक्ष और पेय वाला, **यः वसतौ** = जो घर में,
स्योनकृत् = सुख दाता, **जीवयाजंयजते** = अतिथि यज्ञ करना है।
सः दिवः उपमा = वह द्यु लोक सदृश्य

भावार्थः- हे अग्ने! तू पवित्र दक्षिणा देने वाले को सिले-सिलाये कवच की भांति रक्षण प्रदान करता है। जो अतिथि यज्ञकर्ता अतिथि को स्वादिष्ट भोजन और पेय प्रदान करता है। ऐसा अतिथि यज्ञकर्ता **''द्युलोक के समान यशस्वी हो जाता है।''**

काव्यानुवाद

पवित्र दक्षिणा जो देना, सिला कवच हो प्राप्त।
तेजस्वी प्रभु रक्षण करते, सर्व ओर जो व्याप्त।।
अतिथि का सत्कार करे जो, स्वादु भक्ष्य दे पेय।
अतिथि यज्ञ करता घर में, पात द्युलोकी श्रेय।।

- बाबूलाल जोशी
बी-६२, एम.आई.जी. कॉलोनी
रविशंकर शुक्ल नगर, इन्दौर (म.प्र.)
चलभाष-०७३१-२४३२२८५

भारत का प्रथम राज्य - आन्ध्र प्रदेश

प्रस्तोता-इन्द्रदेव एवं लक्ष्मेन्द्र गुप्त

१. यह दक्षिण भारत का सबसे बड़ा राज्य था।

२. इसमें २३ जिले थे और हैदराबाद राजधानी थी।

३. तिरूपति का सर्वाधिक प्रसिद्ध और धनी मन्दिर इसी राज्य में है।

४. इसकी सरकारी भाषा तेलगू है किन्तु हैदराबाद आदि में उर्दू प्रिय है।

५. हिन्दुओं का प्रतिशत ८८, मुस्लिमों का प्रतिशत ९ तथा ईसाई-सिख-बौद्ध-जैन आदि का प्रतिशत ३ था।

६. इसमें ४२ सांसद और २९४ विधायक होते थे।

७. कांग्रेस का जबर्दस्त प्रभाव व कार्य था।

८. बाद में तेलगूदेशम, भाजपा, तेलंगाना राष्ट्र समिति, जगन मोहन की कांग्रेस आदि का भी प्रभाव बढ़ा।

९. जनता की अति उदारता के कारण एक ईसाई नेता कांग्रेस सरकार का मुख्यमंत्री रहा। उसने रोम जाने वाले ईसाइयों को कई प्रकार की सुविधाएँ दिलवाईं।

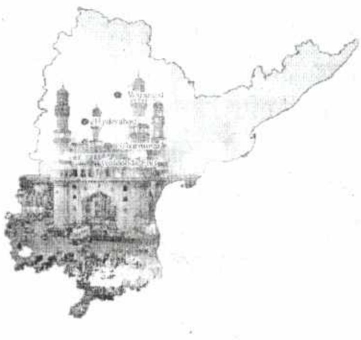

१०. कांग्रेस ने मुस्लिमों को साढ़े चार प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा की किन्तु उच्च न्यायालय ने उसे रद्द कर दिया किन्तु कांग्रेस अभी भी आरक्षण देने का रास्ता खोजती रहती है।

०२/०६/२०१४

११. कई वर्षों से १० जिलों का अलग तेलंगाना राज्य की मांग का आंदोलन चलता रहा। सीमांध्र के १३ जिले प्रबल विरोध करते रहे। हड़ताल, बाजारबंद, रेल रोको, धरना-प्रदर्शन, भुख हड़ताल आदि दिल्ली में भी की गई। अन्त में कांग्रेस ने घोषणा कर दी कि २ जून २०१४ को राज्य विभाजित किया जाएगा।

शेष पृष्ठ ३४ पर....

thearyasamaj.org

श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष में रावतभाटा आर्य समाज द्वारा
वैदिक चर्चाओं का आयोजन

महोदय, वैदिक चर्चाओं के क्रम में दिनांक ३०.०८.२०१४ **शनिवार को श्री ओम प्रकाश आर्य के आवास पर** वैदिक चर्चा का आयोजन किया गया। चर्चा में बताया गया की वैदिक साहित्य में सम्मिलित होने वाले ग्रंथ है - **१. वेद मंत्र संहिताएँ**-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। **२. प्रत्येक मंत्र संहिता के ब्राह्मण** (एतरेय, शतपथ, साम व गोपथ)। **३. आरण्यक**-एतरेय, शाखायन, तेतिरीय (ऋ.), बृहदारण्यक (यजुः), तवलकार (सामः)। **४. उपनिषद्** (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, मांडूक्य, तैतिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य बृहदारण्यक व श्वेताश्वतर)। **५. उपवेद** (प्रत्येक मंत्र संहिता का एक उपवेद-आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद व अर्थवेद)।

इनमें से केवल मंत्र संहिताएँ ही वेद हैं, अन्य पुस्तकें जैसे ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, ६ दर्शन (योग, वैशेषिक, न्याय, सांख्य, वेदांत व मीमांसा) व गीता इत्यादि ऋषियों द्वारा लिखी गई हैं। यह सब मनुष्यों की रचनाएँ हैं, परमात्मा की नहीं, अतः जहाँ तक यह सब वेद के अनुकूल हो, वहीं तक समझना और अपनाना चाहिए। प्रश्न **''वेदों का ज्ञान केवल भारत में ही क्यों''** के जवाब में बताया गया कि सृष्टि उत्पत्ति के बाद मानव जीवनोपयोगी सामग्री व वातावरण तैयार हो जाने के उपरान्त युवा मानवों का अवतरण तिब्बत क्षेत्र में हुआ। उन्हीं मानवों में श्रेष्ठ ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा में ईश्वर ने वेद ज्ञान का प्रकाश किया जो की सम्पूर्ण मानवजाति के लिए था। उस समय पूरा विश्व एक ही था, अलग-अलग देश नहीं थे। महाभारत युद्ध में सम्पूर्ण विश्व के राजाओं के शामिल होने का वर्णन है। डा. देवेन्द्र ने बताया की मैक्समुलर आदि पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों का अध्ययन कर उन्हें पश्चिम जगत् में पहुँचाया। ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीनतम् ग्रन्थ है जिसकी प्रति को संयुक्तराष्ट्रसंघ में रखा गया है।

दिनांक ०६.०९.२०१४ शनिवार को श्री योगेश जी आर्य के आवास पर ''धर्म का स्वरूप'' विषय पर चर्चा रखी गई। चर्चा का सार यह रहा कि धर्म के सही स्वरूप का ज्ञान न होने से धर्म के नाम पर बहुत से मत, पंथ, संप्रदाय, अंधविश्वास और पाखंड फैले हुए हैं। मत, पंथ व संप्रदाय अलग-अलग विचारधाराएँ हैं धर्म नहीं। धर्म उस सत्य को कहते हैं जिससे प्राणीमात्र का कल्याण हो। धर्म का शाब्दिक अर्थ है धारण करने योग्य इसलिये हम मानवों का एकमात्र धर्म है मानवता।

धर्म के दस लक्षण-धैर्य, क्षमा, मन को वश में करना, चोरी न करना, शरीर व अन्तःकरण की शुद्धता, इन्द्रियों पर नियंत्रण, आत्मज्ञान, विद्या, सत्य और क्रोध न करना। इन गुणों को धारण करने से ही हमें सुख-शान्ति व आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।

धर्म की विकृतियाँ- कुछ मत, पंथ व संप्रदायों ने ऐसी धारणा फैला रखी है कि... - अपनी कमाई का कुछ हिस्सा धार्मिक स्थलों में दान देने से मुक्ति मिल जाती है।

-कुछ भगवानों के नाम स्मरण करने मात्र से ही पाप से मुक्ति मिल जायेगी और अंत समय में स्वर्ग प्राप्त होगा।

-कुछ विशेष मुहर्त पर किसी विशेष नदी, तालाब या कुंड में डुबकी लगा लेने से सारे पाप धुल जाते हैं।

-शरीर पर कुछ विशेष चिन्ह जैसे तिलक, टीका आदि बना लेने से ही उद्धार हो जायेगा।

-भगवान ही तो सृष्टि को चला रहा है, वही हमसे सभी कर्म यानि पाप व पुण्य करवा रहा है तो हमारा क्या दोष।

सभी आर्यों का परम कर्तव्य है कि हम स्वयं आचरण की शुद्धता को अपनाकर युवाओं के सामने उदाहरण पेश करें व उन्हें धर्म के सही स्वरूप का ज्ञान दें जिस से वह सही राह पर चल सकें।

दिनांक १३.०९.२०१४ शनिवार को श्री पुरूषोत्तम जी सोनी के आवास पर ''कर्म फल व भोग'' विषय पर चर्चा रखी गई। श्रोताओं की संख्या उत्साहजनक थी। वेदमंत्रों व दर्शनों के आधार पर रावतभाटा आर्य समाज के प्रचारकों ने सरलता से इस विषय पर प्रकाश डाला। चर्चा के सम्पादित अंश इस प्रकार हैं-वैशेषिक दर्शन (प्रवर्तक ऋषि कणाद) के अनुसार संसार में जितनी वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं सभी उत्पन्न हुए जीवों के भोग के लिए ही है। अपने पूर्वजन्म के कर्मों के प्रभाव से जीव संसार में उत्पन्न होता है। उसी प्रकार भोग के अनुकूल उसके शरीर, योनि, कुल, देश आदि सभी होते हैं। जब वह भोग विशेष समाप्त हो जाता है, तब उसकी मृत्यु होती है। इसी प्रकार अपने-अपने भोग के समाप्त होने पर सभी जीवों की मृत्यु होती है। जैमिनि ने अपने मीमांसा दर्शन में कहा है-**''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''** इस मंत्र के अनुसार मुमुक्षुजनों को भी कर्म करना चाहिए। वेदविहित कर्म करने से कर्मबंधन स्वतः समाप्त हो जाता है। **''कर्मणा त्यज्यते ह्यसौ। तस्मान्मुमुक्षुभिः कार्यनित्यं नैमितिकं तथा''**॥ उत्तरमीमांसा के अनुसार शरीर, इंद्रिय और विषय को बंधन कहा गया है जो अज्ञान का कारण है, उसकी निवृति ही मोक्ष है। **''निवृतिरात्मा मोहस्य ज्ञातत्वेनोपलक्षितः''।**

वेदों का अध्ययन कर ऋषि दयानंद ने सत्यार्थप्रकाश में बताया है कि... -जीव कर्म करने में स्वतंत्र है परन्तु फल भोगने में ईश्वर कि व्यवस्था के अधीन है। ईश्वर यदि पापों को क्षमा करे तो उसका न्याय नष्ट होकर सभी मनुष्य पापी हो जाएगें।

-यदि परमेश्वर जीवों से कर्म कराता तो कोई भी जीव कभी पाप नहीं करता।

-अच्छे कार्य करते हुए भी यदि हमें कष्ट हो रहे हैं इसका कारण पूर्व जन्मों के दुष्कर्मों के भोग का पूर्ण होना है।

अप्स्वग्ने सधिष्ट्व सौषधीरनु रुध्यसे।
गर्भे सन् जायसे पुनः।। यजु. (१२/३६)
गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतिनाम्।
गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भो अपामसि।। यजु. (१२/३७)
प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
संसृज्य मातृ भिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः।। यजु. (१२/३८)

भावार्थ-जीव अपने कर्मों के फलानुसार ५ भूतों के साथ मरणोपरांत वायु और औषधियों आदि पदार्थों में भ्रमण करते-करते गर्भाशय को प्राप्त कर नियत समय पर शरीर धारण करता है। जीव पाप-पुण्य के आधार पर अगले जन्म में मनुष्य या पशु आदि बनते हैं।

परि सोम ऋतं बृहदाशुः पवित्रे अर्षति।
विघ्नन् रक्षांसि रेवयुः।। ऋ. ९.५६.१

thearyasamaj.org

भावार्थ- परमात्मा कर्मों का यथायोग्य फल प्रदाता है इसलिये उसके उपासक को चाहिये कि वह सत्कर्म करता हुआं उसका उपासक बना रहे, ताकि उसे परमात्मा के दण्ड का फल ना भोगना पड़े। तात्पर्य यह है कि उपासना से केवल हृदय की शुद्धि होती है पापों की क्षमा नहीं होती है।

दिनांक २०.०९.२०१४, शनिवार को श्री विजय सिंह के आवास पर चर्चा रखी गई। श्रोताओं में वैज्ञानिक अधिकारियों की संख्या उत्साहजनक थी। रिटायरमेंट के बाद श्री मोहन लाल जी का रावतभाटा में प्रथम आगमन हुआ। वेद मंत्रों व दर्शनों के आधार पर रावतभाटा आर्य समाज के प्रचारकों ने **''ईश्वर-वैज्ञानिक दृष्टिकोण में''** विषय पर प्रकाश डाला। चर्चा में बताया की **संसार में सब कुछ नियम से चल रहा है। सुबह-शाम, ऋतु परिवर्तन, सृष्टि-प्रलय आदि। सम्पूर्ण सृष्टि को नियमानुसार कौन चला रहा है?** यह प्रश्न कइयों के मन में उठता है और वह धर्म के नाम पर फैले पाखंड को देखता है तो कइयों का विश्वास ईश्वर पर से उठ जाता है। कुछ चार्वाक बन जाते हैं, कुछ बौद्ध, जैन व कम्युनिस्ट बन जाते हैं। **वैदिक ज्ञान तर्क पर आधारित है, सृष्टि नियमों के विपरीत किसी बात को स्वीकार नहीं करता है, प्रमाण देकर हर बात को सिद्ध करता है इसलिये वेदों का दृष्टिकोण वैज्ञानिक होता है।** ईश्वर के विषय में कुछ वेद मन्त्र इस प्रकार है-

ऋ. १०-८६-१ - **वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत।**

यत्रामदद् वृषाकपिरर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः।।

भावार्थ-जगत् के कर्ता भगवान् के द्वारा ही सभी प्राणी उत्पन्न किये जाते हैं परन्तु उसको सभी मानते और जानते नहीं हैं। वह परमेश्वर जिसमें आत्मा आनंद से तृप्त होता है वह सभी पदार्थों में विद्यमान उनका स्वामी है। वह परम परमैश्वर्यवान् प्रभु समस्त पदार्थों से सूक्ष्म और उत्कृष्ट है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में बताया है कि गुणों के आधार पर ईश्वर के अनेक नाम हैं। ईश्वर एक है गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार उसके अनेक नाम हैं, उसके नामों को न समझ पाने के कारण तरह-तरह कि भ्रांतियाँ फैली और लोगों ने कई भगवानों कि कल्पना कर ली। जैसे एक व्यक्ति को अलग-अलग लोग अपने-अपने सम्बन्ध के आधार पर अलग-अलग नामों से पुकारते हैं वैसे ही हम भी ईश्वर को उसके भिन्न-भिन्न गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं। केवल्य उपनिषद्-पृष्ठ ७-८ **स ब्रह्मा स विष्णुः स रूद्रस्स शिवस्सो-अक्षरस्स परमः स्वराट। स इन्द्रस्स कालाग्निसम चन्द्रमा।।**

भावार्थ-सब जगत् को बनाने के कारण उसका नाम ब्रह्मा है, सर्वत्रव्यापक होने से विष्णु, दुष्टों को दण्ड देकर रूलाने से रूद्र और सबका कल्याणकारी होने से शिव है। यह सभी नाम अपने प्रवृति-निमित के अनुसार परमेश्वर की किसी एक विशेषता को अभिव्यक्त करते हैं। राम, कृष्ण, ऋषि-मुनि उसी की उपासना करते थे उसी एक ईश्वर की उपासना करनी चाहिये। परमात्मा का मुख्य नाम **''ओम्''** है जो लिखने में छोटा है पर अर्थ में उसके पूर्ण स्वरूप को अभिव्यक्त करता है। **अ**-आनन्द स्वरूप परमात्मा, **उ**-चैतन स्वरूप जीवात्मा व परमात्मा, **म**-ईश्वर, जीव व प्रकृति इन तीनों के सत् रूप का बोध कराता है। परिपूर्ण प्रभु परमेश जो सम्पूर्ण जगत् का नियन्ता है, मायारहित होने से अदृश्य है, सूक्ष्मतर होने से कण-कण में व्याप्त है व न्यायकारी होने के कारण जीव को उसके कर्मों का फल अवश्य देता है।

दिनांक २७.०९.२०१४ शनिवार को श्री एस.पी. मोर्य के आवास पर ''वाल्मीकि रामायण'' विषय पर चर्चा रखी गई बच्चे महिलाएँ काफी संख्या में उपस्थित थी। चर्चा में बताया की आर्य जगत् में वैदिक संस्कृति के आदर्श महापुरुषों में मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम का बड़ा महत्व है। इनका प्रादुर्भाव त्रेतायुग में हुआ। द्वापरयुग के ८,६४,००० वर्ष के वर्तमान कलयुग के ५११६ वर्ष मिलाकर यह न्यूनतम ८,६९,११६ वर्ष होता है। वर्तमान में राम के चरित्र पर आधारित जितने भी ग्रन्थ हैं उन सभी का मूल महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण ही है। वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है। वाल्मीकि रामायण अनुष्टुप छंद में लिखी गई है। अनुष्टुप छंद में ३२ वर्ण होते हैं। इसमें छः कांड हैं (बालकांड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड व लंकाकाण्ड) बाद में किसी ने एक उत्तरकाण्ड और मिला दिया जिसमें कुछ असम्भव और मिथ्या कथाएँ जोड़ दी गई हैं। इसकी सत्य कि पहचान इस प्रकार है कि ग्रंथकर्ता अपनी पुस्तक की समाप्ति सूचक महात्म्य अंत में लिखता है और रामायण का महात्म्य छठे काण्ड के अंत में लिखा है। अतः स्पष्ट है कि उत्तरकाण्ड बाद में जोड़ा गया है। वह ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक नहीं है। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य में अनेक घटनाओं के घटने के समय सूर्य, चंद्र तथा अन्य नक्षत्र की स्थितियों का वर्णन किया है। वाल्मीकि रामायण में दर्शन, राजनीति, नैतिकता, शासन कुशलता, ज्योतिष एवं खगोलशास्त्र व मनोविज्ञान का विशद वर्णन होना सिद्ध करता है कि महर्षि वाल्मीकि विविध विषयों के ज्ञाता तथा प्रकाण्ड पण्डित थे।

राम जी ने रावण का वध चैत्र मास में किया था और रावण का वध करने के तुरंत बाद सीता जी, लक्ष्मण जी व कुछ वानरों के साथ अयोध्या लौट आये थे। **''पूर्ण चतुर्दशं वर्षे पंचम्यां लक्ष्मणाग्रजः। भरद्वाजाश्रमं प्राप्य ववन्दे नियतो मुनिम्।।''** (युद्ध. ७०/१) चौदह वर्ष पूर्ण हो जाने पर श्री राम पंचमी को भरद्वाज ऋषि के आश्रम पहुँचे और ऋषि को प्रणाम किया। यहाँ यह शंका हो सकती है कि कौन से मास कि पंचमी? इसका सीधा समाधान यह है कि मास बताये बिना तिथि कही जाय तो प्रथम मास यानि चैत्र मास की तिथि जानी जाती है। **चैतः श्रीमानयं मासः पुण्यः पुष्पित्काननः। यौवराज्याय रामस्य सर्वमेवोपकल्प्यताम्।।** (अयो. ३/४) चैत्र मास में भी श्री राम का राज्याभिषेक होना था व इसी मास में वनवास हुआ इसलिये चौदह वर्ष भी चैत्र मास में ही पूरे हो जाते हैं। इसलिये दीपावली को राम के अयोध्या आगमन से जोड़ना असंगत है।

''आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः'' अर्थात् आचार शुन्य व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। रावण ऋषि पुलस्त्य का पौत्र व विश्वश्रवा जैसे ऋषि का पुत्र वेदों का धुरंधर पण्डित था। किन्तु सद् आचरण के बिना वह घोर पतन को प्राप्त हुआ। घोर अहंकारी व दुराचारी होने के कारण वह श्रेष्ठ कुल का वेद पण्डित होने पर भी राक्षस कहलाया और अंत में अपने बन्धु बांधवों के साथ मारा गया।

रामायण के चरित्रों से सीख लेकर मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का चरित्र उच्च कोटी का था जो मानव मात्र के लिए अनुकरणीय है सिर्फ उनके चित्र व मूर्ति की पूजा करना नहीं वरन् उनके आदर्शों को जीवन में अपनाना ही उनकी सच्ची भक्ती होगी।

उपरोक्त चर्चाओं का संचालन ओमप्रकाश जी आर्य ने किया। अन्य मुख्य वक्ता रेशमपाल सिंह, रमेश चन्द्र भाट, योगेश आर्य, विनोद कुमार त्यागी, नरदेव आर्य, मोहन लाल जी। चर्चाओं के मध्य सुधा सिंह, मोहनी देवी व शैलेष कुमार ने ईश्वर स्तुति के सुमधुर भजन प्रस्तुत किये। अन्य प्रतिभागी गायत्री देवी, उपमा त्यागी, मंजू सिंह, पी.एल. शर्मा। चर्चाओं के अंत में श्रोताओं की शंकाओं का समाधान किया गया।

-रमेश चन्द्र भाट, कोषाध्यक्ष-आर्यसमाज रावतभाटा,
वाया-कोटा (राज.), चलभाष-०९४१३३५६७२८

thearyasamaj.org

विदेशी गुलामी के प्रतीक १ जनवरी नए साल का परित्याग करें

-डॉ. गंगाशरण आर्य
सैनी मौहल्ला, ग्राम-शाहबाद
मोहम्मद पुर, नई दिल्ली-६१
चलभाष-९८७१६४४१९५

विश्व में मानव जीवन के इतिहास की कालगणना में प्राचीन परम्परा ही वैज्ञानिक नजर आती है। संवत् चाहे किसी नाम से तथा कहीं भी आरम्भ किए गए हों किन्तु इन सबका आरम्भ करने की परम्परा एक ही दिन चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से की जाती रही है। नए कार्यों का आरम्भ भी नववर्ष की प्रतिपदा से ही करने की परम्परा आज भी बनी हुई है। नव संवत् के साथ ही भारत का प्रत्येक कार्यक्षेत्र चैत्र (अप्रैल) माह के प्रथम दिन से प्रारम्भ होता है। विद्यालयों में बच्चों की नई कक्षाओं का प्रारम्भ भी तो चैत्र माह से ही होता है, इसे ही वित्तीय वर्ष भी कहते हैं लेकिन नववर्ष मनाया जाता है १ जनवरी को। दरअसल हमारे देशवासियों की गुलामी की मानसिकता की जड़े इतनी गहरी हो गई हैं कि उनको उखाड़ फैंकना इतना आसान नहीं। बड़ी हैरानी की बात तो यह कि गुलामी के दौर में स्वराज्य की लड़ाई के दिनों में भी सब कुछ स्वदेशी था, लेकिन स्वतन्त्र भारत में अब सब कुछ विदेशी हो गया। आर्यावर्त भारत देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि इस पवित्र दिन को हम अप्रैल फूल अर्थात् मूर्ख दिवस बनाने का दिन बताते हैं। **भारतीय संवत्सर (नव वर्ष) को जो कि दुनियाँ का सर्वप्रथम एवं नैसर्गिक संवत्सर है,** झुठलाकर १ जनवरी (विदेशी नववर्ष) को हर्षोल्लास के साथ मनाने में हम ही अग्रणीय नहीं है बल्कि ये राजनेता भी जनता की इस बेवकूफी में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते हैं व उन्हें मूर्ख बताते हैं। राजनेताओं को स्पष्ट रूप से पता है कि देश की वित्तीय व्यवस्था को संचालित करने वाले वित्तीय वर्ष का प्रथम दिन १ अप्रैल का दिन होता है फिर भी अंग्रेजियत का भूत इतना चढ़ा है कि १ जनवरी पर ही नववर्ष की शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ बड़े-बड़े फ्लैक्स बोर्ड लगाकर देते हैं। एक माह पूर्व ही विदेशी नववर्ष की तैयारियाँ भारत में शुरू कर दी जाती हैं। करोड़ों रूपये का खर्चा इस उत्सव के लिए व्यय किया जाता है। होटल रेस्तरां इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियाँ करने लगते हैं पोस्टर व कार्डो की भरमार के साथ दारू की दुकानों की भी चाँदी होती है। ३१ दिसम्बर की आधी रात तक नववर्ष के स्वागत में बच्चे-बूढ़े और नौजवान पलके बिछाए १२ बजने का इंतजार करते हैं। इस दिन शराब और शबाब पूरे यौवन पर होता है, विलासिता का नंगा नाँच होता है, घड़ी की सुइयाँ १२ पर आते ही फोन की घंटियाँ बजनी शुरू हो जाती हैं, आतिशबाजी व पटाखे छुडाए जाते हैं, लड़के ही नहीं लड़कियाँ भी जाम को एक नए अंदाज में होठों से लगाने में तनिक भी नहीं हिचकिचाती और बहुत बड़े हादसों को न्यौता दे बैठती हैं। **क्या यही हमारी संस्कृति आजादी से पूर्व थी ? आज हमारी वेशभूषा, भाषा, खान-पान, आचार-विचार या यूँ कह लो कि भारतीय संस्कृति के नाम पर हमारे देश के नवयुवक-युवतियों को कामुक नाच गानों का मौका देखने के सिवाय कुछ भी शेष नहीं रहा।**

आज हमें स्वाधीन हुए १०० वर्ष भी नहीं हुए हैं और अपनी संस्कृति सभ्यता की घोर उपेक्षा कर रहे हैं, अभी भी राजनैतिक गुलामी सिर पर सवार है। प्राचीन वैदिक संस्कृति के जवाब में विश्व के किसी भी कोने में इतनी आदर्श संस्कृति का उदाहरण मिलना बड़ा मुश्किल है। नया वर्ष ईसाइयों के यहाँ जिसे **'न्यू इयर्स डे'** कहते हैं, वही १ जनवरी को होता है। भारत में स्वाधीनता से पूर्व इसका कोई महत्व ही नहीं था। आज तो इसके पीछे गाँव से लेकर शहर के बच्चे, बड़े, माताओं, बहनों के दिमागों में पागलपन सवार है **पश्चिमी सभ्यता की धूल हमारे ऊपर छाई हुई है।** विशेष बात यह है कि ये धूल ऐसे ही नहीं छाई इसके पीछे भारतीय संस्कृति व सभ्यता का सत्यानाश करने के लिए पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अंग्रेजियत को बरकरार रखने की शर्त को सत्ता हस्तांतरण में स्वीकार किया था जिसका दुष्परिणाम आज तक भोग रहे हैं।

यह २१वीं शताब्दी जो है वह ईस्वी संवत् के अनुसार होती है यदि सृष्टि संवत् की दृष्टि से देखेंगे तो सृष्टि को बने हुए १ अरब ९७ करोड़ २९ लाख ४९ हजार ११५ वर्ष हो चुके हैं और ११६वाँ वर्ष प्रारम्भ हो गया है। इससे यह सिद्ध हुआ कि **करोड़ों शताब्दियाँ हमने बिताई और लाखों शताब्दी आने वाली हैं। इतने लम्बे इतिहास को झुठलाकर संसार को केवल मात्र २० गिनी चुनी शताब्दी पुराना कहना अपने आप में बड़ी भारी भूल है और ईश्वर की व्यवस्थाओं को नकारने का प्रयास है।** सृष्टि के रचयिता परमपिता परमात्मा ने वनस्पति एवं सम्पूर्ण जीव-जगत् की रचना करने के उपरान्त यहाँ तक कि छहों ऋतुओं को उत्पन्न कर पृथ्वी माता को दुल्हन की तरह सजाकर तत्पश्चात् मनुष्य को उत्पन्न किया, क्योंकि ईश्वर की सारी ही कृतियों में मानव सर्वश्रेष्ठ कृति है, पृथ्वी माता के आँचल में मनुष्य ने सर्वप्रथम अपने लोचन खोले, उस समय दिसम्बर ही कड़कती ठण्ड नहीं बल्कि वसन्त ऋतु अपनी सुन्दरतम् आभा बिखेर रही थी। **समझने की बात यह है कि कोई भी इन्जीनियर जब इंजन या किसी मशीन का निर्माण करता है तो साथ में जानकारी के लिए एक परिचय-पुस्तिका भी देता है, जिसमें उसकी सम्पूर्ण जानकारी होती है। इसी प्रकार उस सर्वशक्तिमान इन्जीनियर ने सृष्टि रूपी मशीन का निर्माण किया, तब 'वेद' रूपी ज्ञान उन प्रथम महामानवों (अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा) के अन्तःकरण में दिया। वेद सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान के भण्डार हैं।** वेद ज्ञान के आधार पर हमारे प्राचीन महा-मनीषियों, ऋषि-मुनियों ने आदि सृष्टि मे लेकर आज तक हर पदार्थ का विवरण रखा है। **आदि सृष्टि से ही आर्यों में चैत्र मास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को ही नव वर्ष दिवस के रूप में मनाने की प्रथा प्रचलित है,** मुस्लिम राज्य में आर्यों की संस्थाएँ अस्त-व्यस्त होने पर भी यह परम्परा बनी हुई थी। वस्तुतः यही भारत वर्ष का नवसंवत्सर आरम्भ दिवस है। सृष्टि संवत के संबंध में एक और अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत है जब इस देश के इतिहास को विदेशी आक्रान्त नष्ट करने लगे तो आर्यो ने इतिहास सुरक्षित करने के लिए सृष्टि के गणित का इतिहास का संकल्प के रूप में कण्ठस्थ कर लिया था जो आज भी व्यवहार में प्रचलित है, जिसे नित्यप्रति किसी भी कार्य विवाह संस्कार आदि करने से पूर्व यज्ञ के समय पुरोहित अपने यजमान से संकल्प कराते समय बुलवाता है:-

ओम् तत् सत् श्री ब्रह्मणो, द्वितीय प्रहरार्द्धे, वैवस्वते मन्वन्तरे, अष्टाविशंतितमे कलियुगे, कलिप्रथमचरणे, ...सृष्टि-सम्वत्सरे, ...विक्रमाब्दे, ...श्रीमद्दयानन्दाब्दे, ...अयने, ...ऋतौ, ...मासे, ...पक्षे, ...शुभ तिथौ, ...नक्षत्रे, ...वासरे, ...शुभ मुहूर्ते, ...जम्बूद्वीपे, आर्यावर्ते भारतवर्ष-देशान्तर्गते पुण्यभुमौ, ...प्रान्ते, ...जनपदान्तर्गते, ...नगरे/ग्रामे, ...गोत्रोत्पन्नः श्रीमतः .....पितुः पुत्रः श्रीमत्याः .....मातुः आत्मजः

thearyasamaj.org

.....नाम अहम् अद्य सर्वकल्याणार्थम्.....यज्ञकर्म-करणाय भवन्तं वृणे।।

इस प्रकार सृष्टि के आदि से लेकर मन्वन्तर, युग-युगान्तर, वर्ष, माह, पक्ष, तिथि, दिन-वार, नक्षत्र, मुहूर्त, लग्न, घड़ी, पल, विपल तक का हिसाब आज तक मौजूद है। हमारे विद्वान् गणित ज्योतिष शास्त्रियों ने ब्रह्माण्ड के ग्रह नक्षत्रों का, उनकी गति तक का ब्यौरा रखा है। सूर्य चन्द्र ग्रहण उसके स्पष्ट उदाहरण हैं। इस धरातल पर मानव उत्पत्ति के साथ ही सृष्टि संवत्सर प्रारम्भ हुआ। इस दिन देशी महीने में चैत्र की एक तिथि होती है। यह वही दिन है जिस दिन सृष्टि के रचयिता उस प्रभु का स्मरण कर विश्व के लोग इसे धन्यवाद देते हैं। जिस प्रभु ने इसकी रचना कर, यहाँ पर हमें सुखमय जीवन यापन करने का शुभ अवसर दिया है। यह सृष्टि का वह दिन था जिसे सौर सम्वत् या सृष्टि संवत् भी कहा जाता है जैसा की पूर्व में कह आए हैं 'आज तक इसकी गणना एक अरब सत्तानवे करोड़ उनतीस लाख उनपचास हजार एक सौ सोलहवाँ वर्ष चल रहा है। **ऋतुराज वसन्त में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही हमारा प्राचीन आर्यावर्तीय (भारतीय) सम्वत्सर प्रारम्भ हुआ,** दुनियाँ के महान् गणितज्ञ भास्कराचार्य जी ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीना और वर्ष की गणना करते हुए पंचांग की रचना की थी। **इसी दिन ही मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का राजतिलक भी हुआ था। इतना ही नहीं महाराज युधिष्ठिर का राजतिलक भी इसी दिन हुआ था। इसी प्रकार अन्य भी अनेक यादें इस दिन के साथ जुड़ी हैं। यही कलियुग के प्रथम सम्राट परीक्षित के सिंहासनारूढ़ होने का भी दिन है। इसी दिन महाराजा विक्रमादित्य का विक्रमी संवत् ईस्वी सन् से ५७ वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था जो इस समय २०७१वाँ प्रारम्भ हो चुका है।** इसी दिन नववर्ष पर विक्रमी संवत् के अनुसार नववर्ष मनाते आ रहे हैं। वैसे भी घरों में बुजुर्ग महिलाओं को होली के उत्सव पर चर्चा करते देखा जाता है कि होली वर्ष का अन्तिम त्यौहार है और उसके बाद चैत्र प्रतिपदा से नववर्ष प्रारम्भ होकर नए त्यौहारों के संग जीवन से जुड़ी नई आशाओं को मन में लिए आगे बढ़ने का प्रयास हम करते हैं। और भी हम अपने परिवारों में अपने बच्चों के जन्मदिन उसी तिथि को मनाते हैं जिस दिन उनका अवतरण इस धरा पर हुआ होता है। ठीक उसी प्रकार इस सृष्टि की रचना करके परमपिता परमात्मा ने मानव की उत्पत्ति के साथ प्राणी मात्र का अवतरण किया तभी से नववर्ष मनाने की प्रथा मानव समाज ने अपनाई है जिसे-वास्तविक शुद्ध नववर्ष दिवस, नववर्ष शुभारम्भ कहा जाता है जो चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को होता है।

अन्त में पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि विदेशी गुलामी के प्रतीक १ जनवरी बनावटी नववर्ष का परित्याग करें और अपनी स्वतन्त्रता, स्वाभिमान और स्वावलम्बन को ध्यान में रखकर इस अवैज्ञानिक तर्कहीन तथ्यों पर आधारित ईस्वी सन् को छोड़कर अपने भारतीय संवत् विक्रम संवत् को ही अपनाएँ जो वैज्ञानिक और प्राकृतिक तथ्यों पर आधारित है। इस विषय में यही कहना चाहूँगा कि -

''दास्ताँ की निशानी को नयी-पीढ़ी पर उठाना है।
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (प्रथमा) को ही नव वर्ष हमें मनाना है।।''

अत: हमें अंग्रेजी दास्ताँ वाले १ जनवरी को नववर्ष के रूप में नहीं मनाना चाहिए बल्कि भारतीय नव संवत्सर मनाते हुए स्वाभिमान पूर्वक एक दूसरे को बधाई देनी चाहिए। आगामी नव संवत्सर अवसर पर मेरी ओर से आप सबको बहुत-बहुत बधाई हो एवं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप आगामी वर्ष में फले-फूलें, हर प्रकार से सुख समृद्धि को प्राप्त होवें। इस विषय में विस्तृत जानकारी के लिए मेरे द्वारा लिखी लघु पुस्तिका जिसका शीर्षक है **''अंग्रेजी शासन की गुलामी का दुष्परिणाम १ जनवरी बनावटी नया साल''** पढ़ें। ●

पृ. ३० का शेष **भारत का प्रथम राज्य.....**

१२. रायल सीमा और आन्ध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों के १३ जिलों के राज्य का नाम सीमांध्र रखे जाने की आशा थी लेकिन नाम आन्ध्र प्रदेश ही रहा। अब २५ सांसद और १७५ विधायक चुने जाते हैं।

१३. अब विभाजित आन्ध्र प्रदेश में १३ जिले हैं जिसकी स्थायी राजधानी विजयवाड़ा भी हो सकती है। अस्थायी रूप से १० वर्ष तक हैदराबाद ही राजधानी रहेगी।

१४. कांग्रेस को विभाजन से कोई लाभ नहीं मिला। वह दोनों राज्यों में विपक्षी दल है।

१५. आन्ध्र प्रदेश का आम बाजार में सबसे पहले आता है जिसका प्रयोग मैंगो शेक में खूब किया जाता है।

१६. बालाजी और देवी पद्मावती के निवास स्थान तिरूपति के मंदिर नगर में अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी अध्ययन केन्द्र की ६ मंजिल की बिल्डिंग बनकर तैयार हो गई है।

१७. इस विशाल बिल्डिंग का निर्माण सदियों पुराने मंदिर की भूमि पर हुआ है। यह बालाजी मंदिर से केवल १० किलो मीटर की दूरी पर है।

१८. विश्व हिन्दू परिषद की पाक्षिक पत्रिका हिन्दू विश्व के २०१३ के किसी अंक में इस्लामी अध्ययन केन्द्र की फोटो भी छपी थी।

१९. २५०० संतों ने एक प्रस्ताव पारित करके अविभाजित आन्ध्र प्रदेश की कांग्रेस सरकार से मांग की थी कि इस बिल्डिंग को ध्वस्त किया जाए।

२०. अब विभाजित आन्ध्र प्रदेश की संयुक्त सरकार में भाजपा भी है। हम संतो से कहते हैं कि वे भाजपा के मंत्रियों से मिलकर बिल्डिंग को ध्वस्त करावें। हम तो इतना कह सकते हैं कि संत या भाजपा उस इस्लामी अध्ययन केन्द्र की एक ईंट भी नहीं उखाड़ सकते हैं बल्कि इस खिचड़ी देश में इस्लामी अध्ययन केन्द्र चालू भी हो जाएगा और हम देखते रह जाएंगे। हम में एकता और ताकत नहीं है। ●

गुरुकुल आर्यनगर, हिसार का स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं वार्षिक उत्सव

दिनांक ३० से ०७/११/२०१४ तक

गुरुकुल आर्यनगर, हिसार (हरियाणा) जिसकी स्थापना स्वामी देवानन्द जी सरस्वती द्वारा की गई थी। वर्ष २०१४ में अपने पचास वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में एक भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह एवं वार्षिक उत्सव का आयोजन गुरुकुल प्रांगण में आयोजित कर रहा है। **गुरुकुल के यशस्वी प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती** (सांसद, सीकर लोकसभा) के पावन सानिध्य में ३० नवम्बर से अथर्ववेद के मन्त्रों से यज्ञ प्रारम्भ होगा तथा दिनांक ६ एवं ७ दिसम्बर को विशेष उत्सव आयोजित किया जायेगा। समस्त आर्यजनों से सादर विनम्र अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर लाभ प्राप्त करें।

सम्पर्क-मानसिंह पाठक, प्राचार्य-गुरुकुल आर्यनगर हिसार
९४६६४०३२२२, ८५०५८९०३५९

thearyasamaj.org

राजस्व प्राप्ति से अधिक बिमारियों एवं अपराध नियंत्रण पर व्यय

नेशनल इंस्टीट्यूट आफ मेन्टल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइन्स बंगलौर के अनुसार निम्न तथ्य प्रकाश में आये हैं-

१. सरकार द्वारा भारत वर्ष में प्रति लाख व्यक्ति सर्वाधिक शराब की दुकानें खोल दी गई हैं।
२. ८० प्रतिशत उच्च शिक्षित युवा भी शराबी हो गये हैं।
३. १५ से १७ वर्ष के किशोर भी शराब पीने लगे हैं।
४. ९.७ प्रतिशत शराबी परिवार अपने बच्चों को बाल मजदूरी के लिए भेज रहे हैं।
५. शराब से प्राप्त राजस्व से अधिक पैसा बीमारियों एवं अपराध नियंत्रण पर व्यय करना पड़ रहा है।
६. शराब के नशे में महिलाओं से मारपीट और उत्पीड़न के अलावा आये दिन बलात्कार की हतप्रभ करने वाली घटनाएँ सामने आ रही हैं।
७. शराबियों द्वारा सगी सम्बन्धी महिलाओं एवं ५ से ६ वर्ष की मासूम बच्चियों को भी हवस का शिकार बनाया जा रहा है।

इन परिस्थितियों में राष्ट्रीय स्तर पर शराब बन्दी अति आवश्यक है। इसके लिए सभी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक संगठनों, शैक्षणिक संस्थाओं एवं जागरूक नागरिकों का सहयोग अपेक्षित है। यदि आप इस आन्दोलन में शामिल होना चाहते हो तो दिये गये नम्बरों पर सम्पर्क करें या इस मोबाइल नं. ९४१२७८३९११ पर मिस्ड कॉल करें।

राष्ट्रीय स्तर पर शराब बन्दी हेतु सहयोग करें तथा पूर्ण जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

इ. विक्रम सिंह	**इ.सत्यवीर सिंह**	**अमर सिंह चौहान**
अध्यक्ष ट्रैप ग्रुप	**अध्यक्ष समदर्शी मंच**	**मंत्री-आर्यसमाज विद्युत गृह कासिमपुर**
०९७५६७०२४५६	**०९४१२७८३९११**	**०९७१९१०६१११**

हिमाचल प्रदेश में न्यायालय द्वारा पशुबलि प्रतिबंधित

हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट ने राज्य के मंदिरों में होने वाली पशुबलि पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। कोर्ट ने अपने अंतरिम आदेश में कहा कि हजारों पशुओं को बलि के नाम पर प्रतिवर्ष मौत के घाट उतारा जाता है। इसके कारण पशुओं को असहनीय पीड़ा झेलनी पड़ती है। यह एक कुरीति है। इसे समाप्त करना बहुत जरूरी है।

जज राजीव शर्मा और सुरेश्वर ठाकुर की खंडपीठ ने स्पष्ट किया कि निर्दोष पशुओं को देवता प्रसन्न करने के लिए भयानक मौत देना सही नहीं है। आधुनिक समय में आस्था, धार्मिक पूजा और चली आ रही कुरीति के नाम पर पशुओं को मारना गलत है।

कोर्ट ने आदेश दिया कि अब कोई व्यक्ति पशुओं की बलि नहीं देगा। यह भी कहा कोई भी बलि देने के लिए प्रलोभन नहीं देगा और न ही ऐसे कार्य में संलिप्त होगा। कोर्ट ने सभी संबंधित अधिकारियों को इन आदेशों को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी दी है। ●

thearyasamaj.org

आध्यात्मिक जिज्ञासा/प्रश्न आपके, समाधान वैदिक विद्वानों के

समादरणीय श्री दिलीप भाटिया जी एवँ श्री रूपकिशोर जाकर जी

सादर नमस्ते।

वैदिक संसार पत्रिका में आप भाइयों की जिज्ञासाएँ पढ़ने को मिली तथा श्री सुखदेव जी शर्मा के आग्रह पर आपकी जिज्ञासाओं का समाधान करने का प्रयत्न करता हूँ।

जिज्ञासा-(१) ईश्वर की प्राप्ति के लिए क्या गुरु बनाना/दीक्षा लेना आवश्यक है?

समाधान - ईश्वर की प्राप्ति के लिए वास्तव में कोई न कोई गुरु बनाना ही चाहिये और वो गुरु एक भी हो सकता है और अनेक भी हो सकते हैं किन्तु जब भी किसी चेतन व्यक्ति को गुरु बनाना हो पहले उसकी अच्छी प्रकार परीक्षा कर लेनी चाहिये कि वह गुरु बनने के पात्र (योग्य) है भी या नहीं। गुरु के हेतु जिन आवश्यक गुणों (लक्षणों) का होना चाहिये वे गुण जिस व्यक्ति में हो उसे ही गुरु बनाना चाहिये। बगैर परीक्षा के किसी भी व्यक्ति को गुरु बनाना उचित नहीं है।

किन्तु यदि किसी को कोई चेतन देहधारी गुरु नहीं मिल रहा हो तो वह वैदिक ग्रन्थों से भी ज्ञान प्राप्त कर सकता है और उन ग्रन्थों के आधार आचरण करते हुए ईश्वर की ओर बढ़ सकता है किन्तु ध्यान रहे इन ग्रन्थों में योग दर्शन, उपनिषद् आदि योग के सम्बन्धित ज्ञान-विज्ञान से युक्त ग्रन्थ ही होना चाहिये।

इतना अवश्य ध्यान रखें कि यदि कोई देहधारी व्यक्ति को गुरु बना रहे हैं तो उसमें निम्नलिखित लक्षण अवश्य होना चाहिये..

यहाँ एक जिज्ञासा होती है कि मोक्ष प्राप्ति के लिये शरीरधारी गुरु की आवश्यकता है वा नहीं? **जिसका उत्तर है**-आवश्यकता है।

प्रश्न - वैदिक धर्म में गुरु बनाने की परम्परा है वा नहीं?

उत्तर - वैदिक धर्म में गुरु बनाने की परम्परा है।

प्रश्न - गुरु किसको बनाया जाये?

उत्तर - जिसको गुरु के रूप में स्वीकार किया जाये वह वास्तविक गुरु हो।

वास्तविक गुरु के लक्षण -

१. वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों के पठन-पाठन को मुक्ति का साधन मानने वाला हो।

२. सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी हो।

३. पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा का त्यागी हो।

४. ईश्वर, जीव और प्रकृति को पृथक्-पृथक् मानने वाला हो।

५. स्वयं अष्टाङ्गयोग का अनुष्ठान करने वाला हो।

६. सकाम कर्मों को छोड़कर निष्काम कर्म करने वाला हो।

७. अपनी उन्नति के तुल्य प्राणिमात्र की उन्नति चाहने वाला हो।

८. पक्षपातरहित न्यायकारी हो।

९. मद्य, मांसादि अभक्ष्य खान-पान करने वाला न हो।

१०. मोक्ष की प्राप्ति करने-करवाने को मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य मानने वाला है।

११. वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि ग्रंथों में वर्णित योग विद्या का प्रचार-प्रसार करने वाला हो, इत्यादि।

किसी व्यक्ति में लम्बे काल तक इन गुणों का परीक्षण करना चाहिये। लम्बे परीक्षण के पश्चात् यदि उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण उपलब्ध हों, तभी उसे गुरु बनाना चाहिये।

जिज्ञासा-(२) आर्य समाज में प्रति रविवार को यज्ञ करने का क्या औचित्य है?

समाधान - यज्ञ से तीन कार्य सिद्ध होते हैं यथा देवपूजा, संगतीकरण और दान। समाज में या घर परिवारों में संगठन एवं परस्पर सहयोग सेवा व प्रेम की भावना को बनाये रहते हुए सबके अन्दर धार्मिकता, आस्तिकता का संचार करने के लिए सप्ताह में कम से कम एक बार सामूहिक रूप से यज्ञ का अनुष्ठान करना ही चाहिये। चूँकि रविवार को शासकीय अवकाश रहता है इसलिए परिवार के छोटे-छोटे बच्चे भी जो अन्य दिनों में विद्यालय पढ़ने जाते हैं या सरकारी कर्मचारीगण अपने-अपने कार्यालय जाते हैं वे सभी आज के दिन यज्ञ में भाग लेने के लिए आसानी से समय निकाल सकते हैं। आर्यसमाज वेदों के ज्ञान प्रचार-प्रसार हेतु बनाया गया संगठन है, इस कारण वह वैदिक चर्चाओं का उपयुक्त माध्यम है। आर्यसमाज में पहुँचकर परस्पर एक-दूसरे से परिचय तथा आपसी सम्बन्धों में प्रगाढता करते हुए समाज के विकास एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए विचार विमर्श भी कर सकते हैं। इस प्रकार यज्ञ के तीनों आयाम सिद्ध होते हैं। अत: रविवार को आर्यसमाज में यज्ञ करना व्यक्ति की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति की दृष्टि से हितकर तथा अति उत्तम है।

जिज्ञासा-(३) सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में उल्लेख है कि

१. मूर्तिपूजा का चलन जैनियों से प्रारम्भ हुआ।

२. पश्चात् वैष्णवादियों ने श्रृंगारित मूर्तिपूजा का चलन प्रारम्भ किया। इस कथन का ऐतिहासिक आधार क्या? क्योंकि प्राप्त ऐतिहासिक तथ्य संकेत देते हैं कि भारत में मूर्तिपूजा का चलन आर्य द्रविड संस्कृति की देन है, जैनियों की नहीं विद्वान् समाधान करें क्या ये सही हैं?

समाधान - वास्तव में वैदिक काल रामायण काल, महाभारत काल तथा किसी भी काल तक मूर्तिपूजा का प्रचलन नहीं था। विशुद्ध आर्य संस्कृति में तो मूर्तिपूजा का कोई विधान ही नहीं है। मूर्तिपूजा का चलन तो लगभग २५०० वर्ष पहले आरम्भ हुआ था। इसके पूर्व कोई मूर्तिपूजा के आरम्भ होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।

जैनमत २५०० वर्ष पुराना है, यहूदीमत ४००० वर्ष पुराना है, पारसीमत ४५०० वर्ष पुराना है, महाभारत काल लगभग ५२०० वर्ष पुराना है, रामायण काल लगभग १० लाख वर्ष पुराना है। इस क्रम में जैनमत काल के पूर्व तक मूर्तिपूजा को कोई उल्लेख नहीं मिलता है। महर्षि दयानन्द ने खोज पूर्वक सिद्ध किया है कि मूर्तिपूजा का चलन जैनियों से प्रारम्भ हुआ है। इसलिए यह मान्य है जब कि आर्य संस्कृति में मूर्तिपूजा का चलन था इसके कोई वैदिक प्रमाण नहीं मिलते इसलिए आर्य संस्कृति में मूर्तिपूजा का चलन था कहना गलत है।

समाधान कर्ता- शांतानन्द सरस्वती, भवानीपुर (कच्छ)
चलभाष-९९९८५९४८१०

ईश्वर, प्रकृति, जीवात्मा तथा अध्यात्म (धर्म) से संबंधित आपकी कोई जिज्ञासा अथवा प्रश्न हो तो उठाइये कलम और वैदिक संसार को लिखिए पत्र, उत्तर वैदिक विद्वान् महानुभावों से प्राप्त कर प्रकाशित किये जावेंगे। - सम्पादक

thearyasamaj.org

आर्य जगत् की विलक्षण चित्ताकर्षक, सम्पूर्ण पेज बहुरंगी चित्रों के साथ प्रेरणा प्रदान करने वाली अनूठी पुस्तक, मात्र १५०/- में ज्ञान का असीम भंडार

सफलता का संसार- कामयाबी के मूल मंत्र

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित, दर्शन योग महाविद्यालय के द्वारा इस वर्ष से, साहित्य प्रकाशन कार्य और नीति में विशेष बदलाव किया गया है। इस बदलाव की प्रथम कड़ी में दर्शन योग महाविद्यालय के निर्देशक **स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** और **आचार्य स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती** के मार्गदर्शन में विद्यालय के सेवा और **साहित्य प्रचार प्रमुख, डॉ. राधावल्लभ जी चौधरी** के द्वारा लिखित पुस्तक **सफलता का संसार-"कामयाबी के मूलमंत्र"** प्रकाशित की गई है। पूरी पुस्तक को दर्शन योग महाविद्यालय की वेबसाइट Safalata ka sansar link (www.darshanyog.org) से भी नि:शुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

यहाँ उल्लेखनीय है कि दर्शन योग महाविद्यालय के विद्वानों के मार्गदर्शन में लेखक ने सफलता विज्ञान श्रृंखला के अंतर्गत सफलता विषयक २० पुस्तकों और अष्टांग योग विषयक १६ पुस्तकों का लेखन किया है, जिनमें से **"सफलता का संसार"** प्रथम प्रकाशित संग्रहणीय-पठनीय कृति है।

लेखक डॉ. राधावल्लभ जी चौधरी को सफलता और जीवन निर्माण के विषय में दर्शन योग महाविद्यालय के विद्वानों से जो विशेष ज्ञान प्राप्त हुआ है, उसे बेहद सरल, सुबोध, आकर्षक, रोचक-दिलचस्प भाषा में ७०० से अधिक रंगीन चित्रों और महाविद्यालय के अनुभवी मार्गदर्शकों के ३५ से अधिक अनमोल वचनों (कोटेशन) के साथ प्रस्तुत किया गया है। विद्यालय की नई प्रकाशन नीति के अनुकूल, पुस्तक का कवर और बैक-कवर बेहद आकर्षक है। पुस्तक को हाथ में पकड़ते ही पुस्तक के आसान-सुविधाजनक आकार (हैंडी-पाकेट बुक साइज) के स्पर्श का सुखद अनुभव होता है। आप इस तथ्य को महसूस करेंगे कि लेखक व प्रकाशक ने पूरे मन से इस पुस्तक की रचना और मुद्रण का काम किया है। नई प्रकाशन नीति के अनुसार, इस पुस्तक में लेखक के द्वारा आधुनिक तकनीक का भरपूर प्रयोग किया गया है। जैसे कि बेहतर रूपरेखा और प्रारूप प्रस्तुति (ले-आउट व डिजाइनिंग) और कीमती दृश्य (विजुअल वैल्यू) की कसौटी पर यह पुस्तक विलक्षणता व आश्चर्य का अनुभव कराने वाली है। पुस्तक में संवेदनशीलता, कारूणिकता, कोमल-हृदयता, परिपक्वता, मित्र-भाव व अपनत्व की भावना समाई हुई है, जो कि पदे-पदे अनुभव की जा सकती है।

खास बात यह कि इस तरह की कोई भी पुस्तक हमें देखने को नहीं मिली। अत: हमारे मत में, यह पुस्तक आर्यजगत् की पहली ऐसी बहुरंगी पुस्तक है, जिसमें जीवन के लिए अनिवार्य विषयों को संपूर्णता के साथ प्रासंगिक चित्रों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। पुस्तक पढ़ते ही लगने लगता है कि ज्ञान के साथ पूरा मनोरंजन, इस मुख्य लक्ष्य (थीम) को सामने रखकर, लेखक ने अपनी कलम चलाई है।

कह सकते हैं कि, राह दिखाने वाली सैंकड़ों-हजारों प्रेरक (मोटीवेशनल) पुस्तकों की कड़ी में यह पुस्तक **"सफलता का संसार"** बिल्कुल ताजी हवा के झोंके जैसी है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसका आधार वह वैदिक ज्ञान है, जिसे सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार ऋषियों को दिया। इसी वांगमय के अनुपम सोपान योगदर्शन के अति महत्वपूर्ण सूत्रों के अर्थों को प्रस्तुत किया गया है। इस दृष्टि से पुस्तक का महत्व सहज रूप से कई गुना बढ़ गया है।

एक बार पुस्तक को पढ़ना शुरू किया तो ताजे-नरम भुट्टे की तरह, उसके साथ पाठक ऐसा बंध जाता है कि जब तक पुस्तक खत्म न हो जाए, पुस्तक छोड़ने का मन ही नहीं होता।

पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह सफलता प्राप्ति के मूलभूत उपायों के साथ-साथ, सफलता से मिलने वाली उपलब्धियों की सीमाओं के यथार्थ को उद्घाटित करती है। यह पुस्तक भौतिक उपलब्धियों से जीवन में प्राप्त होने वाली स्थिरता-अस्थिरता, लाभ-हानि, सुख-दु:ख, अपनत्व-परायापन की मौलिक वास्तविकता का साक्षात्कार कराती है। धीरे-धीरे हमें लगने लगता है कि पुस्तक में जैसा लिखा है, वैसा ही तो घटित हो रहा है। **पुस्तक से जब नई दृष्टि मिलती है, तो हम संतुलित-सुव्यवस्थित-सुखद-स्थायी-विकसित जीवन जीने की तरफ उन्मुख हो जाते हैं।**

सफलता के ऊँचे शिखर पर पहुँचने, जीवन को पूरी तरह समझने की इच्छा रखने और जीवन से तनावों व उलझनों को दूर रखने के लिए यह प्रेरक पुस्तक अवश्य पढ़ने योग्य है। यह हर आयु के व्यक्ति के लिए उपयोगी होने से पास में रखने योग्य पुस्तक है।

आदरणीय धर्मनिष्ठ प्रिय आत्मन, सादर नमस्ते,

ईश्वर की कृपा से हम कुशलतापूर्वक है और आपकी कुशलता की कामना करते हैं। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार कार्य में विद्यालय को पर्याप्त समर्थ बनाने के लिए, आपसे सहयोग, प्रोत्साहन व शुभकामनाएँ सदा मिलती रही हैं। आप जैसे करूणाशील, उदार, कर्तव्यपरायण सज्जनों के नियमित-निरन्तर सहयोग से वैदिक धर्म की रक्षा के कर्तव्य पालन में हम, समर्थ हो पा रहे हैं और आगे भी होंगे, ऐसा हमें विश्वास है, तदर्थ हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं। वैदिक धर्म-संस्कृति की रक्षा के कार्य में, आपने सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त किया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। यह भी प्रार्थना है कि हमारी नई प्रकाशन नीति और पुस्तक के संबंध में अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएँ ताकि अगले संस्करण में उसे और परिष्कृत किया जा सके।

भवदीय-व्यवस्थापक, दर्शन योग महाविद्यालय

पुस्तक को १६ अध्यायों में विभक्त किया गया है। लेखक ने पुस्तक को अनिवार्य पाठ्यपुस्तक घोषित किया है। इससे साफ है कि लेखक के मत में उसकी कृति उपन्यास की तरह पढ़कर भूल जाने वाली सामान्य कृति नहीं है।

कुल मिलाकर, अनमोल ज्ञान को हृदय में संजोकर लेखक ने गहन अध्ययन-चिंतन-मनन और निदिध्यासन के जरिए सरल प्रस्तुतिकरण के माध्यम से पथप्रशस्त करने वाली बेहद रोचक पुस्तक का स्वरूप दे दिया है। इस बहुरंगी पुस्तक की पृष्ठ संख्या ३२० है और सजिल्द संस्करण का लागत व्यय १५० रूपये आया है। पुस्तक प्राप्ति हेतु विद्यालय से संपर्क किया जा सकता है अथवा विद्यालय की वेबसाईट से नि:शुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

अत: आपसे विनम्र प्रार्थना है कि कृपया इस पुस्तक को स्वयं पढ़ें तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम् की दिशा में एक कदम बढ़ाते हुए अपने समस्त स्नेहीजनों एवं परिवारजनों को पुस्तक पढ़ने हेतु प्रेरित करें।

निवेदक - सुखदेव शर्मा, प्रकाशक-वैदिक संसार

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन दिनांक १ से २ नवम्बर को सींगापुर में तथा दिनांक ८ से ९ नवम्बर को बैंकाक में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। बैंकाक में आर्यसमाज की स्थापना १९२० में की गई थी।

उपरोक्त अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों में भाग लेने विश्व के कोने-कोने से आर्यजगत् के उच्चकोटी के विद्वान्, संन्यासी एवं वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार के हेतु समर्पित संस्थाओं के पदाधिकारी पधारे। भारत से भी लगभग २५० सदस्यों ने उक्त आयोजनों में उपस्थिति दर्ज करवाई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आयोजन सफल, सान्द सम्पन्न हुआ।

thearyasamaj.org

विश्व हिन्दू परिषद के तत्वावधान में आयोजित

पाँच दिवसीय वेद कथा का माधापुर, भुज (कच्छ) में समापन

भारतीय संस्कृति का मूल आधार अर्थात् स्तम्भ चार वेद हैं, ये सनातन वैदिक धर्म के सभी ग्रन्थों के मूल हैं। वेद ईश्वर की वाणी है तथा यह आज समाज में व्याप्त सभी सत्य विद्याओं का मूल है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना मानव मात्र का परम् कर्तव्य है, वेद का ज्ञान अनादि है तथा अनन्त काल तक रहने वाला है इस प्रकार वेद के ज्ञान का विस्तार करने के लिए '**विश्व हिन्दू परिषद**' कच्छ विभाग, '**गायत्री परिवार**' माधापुर तथा '**वेद प्रचार समिति**' कच्छ द्वारा वेद कथा का आयोजन भुज के निकट माधापुर गाँव में **संत ओधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर के आचार्य स्वामी शांतानन्द जी सरस्वती के मुखारविन्द द्वारा दिनांक ०६ से १०/११/२०१४ तक सम्पन्न किया गया। इस कथा के मुख्य यजमान श्रीमती हंसाबेन भट्ट तथा संयोजक श्री शशीकान्त भाई पटेल 'विश्व हिन्दू परिषद' सौराष्ट्र के मन्त्री रहे।** आपके परिवार जनों ने भी महत्वपूर्ण सहयोग किया। गायत्री परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री वालजी भाई, श्री एन.के. मोदी, श्री शशीकान्त भाई के सुपुत्र सार्थक जी तथा आप भाइयों के सहयोगी कार्यकर्ताओं ने कथा कार्य निमित्त अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

कथा के दौरान पाँचों दिन दैनिक यज्ञ का प्रशिक्षण **पं. श्री योगेश शर्मा जी** द्वारा दिया गया तथा कथा के दौरान यज्ञ के लाभ, परिणाम और प्रभाव के संबंध में विस्तार पूर्वक स्वामी शांतानन्द जी द्वारा वेदमंत्रों और विज्ञान के प्रमाणों द्वारा अनेक दृष्टान्तों के माध्यम से सुन्दर व्याख्यान दिया गया। **इससे प्रेरित होकर ५० परिवारों ने यज्ञ करने का संकल्प लिया** और साथ ही उनकों यज्ञ करने के लिए ५० कुण्डों का सेट श्री भरतभाई गौर के सौजन्य से निःशुल्क भेंट किया गया। इस कथा में **छत्तीसगढ़ से पधारे हुए श्री वल्लभ प्रसाद जी ने गुरुकुल के ब्र. बैकुण्ठ सत्यार्थी जी के सहयोग से भक्तिमय भजनों से कथा को आनन्दमय बना दिया,** श्री विपुल राजगौर (ऑक्टोपैड वादक) एवं अक्षय जी (तबला वादक) ने कुशलता पूर्वक आपका साथ निभाया। इस कथा में भुज, माधापुर, नखत्राणा, मुन्द्रा, अंजार, गांधीधाम आदि कच्छ के अनेक स्थानों से पधारे हुए एक हजार से भी अधिक श्रद्धालु श्रोतागणों ने लाभ उठाया। कथा के पूर्णाहुति दिवस में विश्वहिन्दू परिषद के अग्रणी राजकोट से पधारे हुए श्री कामेन्दु प्रसाद ने सपरिवार उपस्थित होकर वेदामृत रसपान किया।

अब तक समाज में रामकथा, कृष्णकथा, श्रीमद्भागवतकथा, सत्यनारायणकथा तथा विभिन्न पुराणों की कथा प्रचलित थी किन्तु अब सत्य सनातन वेदज्ञान की कथा का आरम्भ प्रभावी शैली में स्वामी शांतानन्द जी द्वारा अपनी ओजस्वी वाणी में किया गया है। इसके माध्यम से जन-जन को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए तथा आपस के मतभेद को दूर करने के लिए स्वामी जी द्वारा विशेष प्रेरणा दी गई।

कथा के दौरान निम्न विषयों पर मुख्यतः व्याख्यान हुआ

वेद के अनुसार यह संसार कब बना? किसने बनाया? किससे बनाया? कैसे बनाया? क्यों बनाया? कब तक बना रहेगा? कब प्रलय होगा? कैसे प्रलय होगा और कौन प्रलय करेगा? वेद के अनुसार ईश्वर एक है या अनेक? एक है तो उसके नाम अनेक क्यों और कैसे? वास्तव में उसका निवास स्थान कहाँ है?, वेद का क्या महत्व है? उसकी विशेषताएँ क्या हैं? वेद में नारी का क्या महत्व है? वेद में गोमाता का क्या महत्व है? और गौ हत्यारे के लिए वेद में क्या दण्ड विधान है? वेदानुसार राष्ट्र की रक्षा और उन्नति प्रगति के लिए क्या संदेश है? वेदानुसार राष्ट्र का राजा कैसा होना चाहिए? आज समाज में फैल रही अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान क्या वेद में है? जीवन को महान् बनाने के लिए वेदों में क्या-क्या उपाय बताएँ गये हैं? जीवन में स्वाध्याय, सत्संग और यज्ञ का क्या महत्व है? पंचमहायज्ञ किसे कहते हैं? वैदिक सोलह संस्कारों का क्या महत्व है? वेदानुसार गृहस्थ जीवन को सुखमय कैसे बनाएँ? वेदानुसार संतान को ईश्वरभक्त, देशभक्त, मातृपितृभक्त और संस्कारवान कैसे बनाएँ? जप, तप, व्रत, तीर्थ का वास्तविक अर्थ वेदानुसार क्या है? वेदानुसार मानव जीवन का लक्ष्य क्या है और यह जीवन हमें क्यों मिला है? गृहस्थ में रहते हुए मोक्ष कैसे प्राप्त करें या अगला जन्म मानव का ही कैसे प्राप्त करें? सच्चे ईश्वर की सच्ची भक्ति कैसे करें? समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के पाखण्ड अंधविश्वास में न फँसते हुए घर-परिवार-समाज में परस्पर प्रेम को बढ़ाते हुए राष्ट्र की उन्नति कैसे करें एवं पर्यावरण प्रदूषण को दूर कैसे करें आदि विभिन्न विषयों पर सुन्दर प्रवचन अनेक दृष्टान्तों के माध्यम से स्वामी जी द्वारा प्रस्तुत किये गये जिन्हें उपस्थित श्रोताओं ने दत्तचित्त होकर दोपहर २:३० से सायं ६:३० तक की सभा में श्रवण किया।

वेदकथा मण्डप में वेद प्रचार समिति के अग्रणी श्री कान्तिभाई पटेल (भुज) द्वारा चारों वेद, वाल्मीकि रामायण, सत्यार्थप्रकाश, वेदमंत्रों के व्याख्या परक ग्रन्थ आदि वैदिक साहित्य तथा रोजड़ एवं गुरुकुल भवानीपुर द्वारा प्रकाशित साहित्यों का स्टॉल भी लगाया गया। इस अवसर पर आचार्य वीरेन्द्र जी द्वारा शिक्षाप्रद बैनर भी लगाये गये। इसी प्रकार गायत्री परिवार ने भी अपने सुवाक्यों के बैनर लगाये, विश्व हिन्दू परिषद की ओर से गो उत्पादों की वस्तुएँ रखी गईं, साथ ही इन्दौर से पधारे '**वैदिक संसार**' के प्रकाशक श्री सुखदेव शर्मा ने अपनी पत्रिका की सदस्यता सुलभ करवाई। आयोजकों की ओर से वैदिक संसार प्रकाशक का आत्मीय सम्मान शशीकान्त भाई द्वारा किया गया। इस प्रकार वेदकथा के माध्यम से परस्पर प्रेम और भाईचारे को बढ़ाते हुए आपसी मतभेद को समाप्त करने के लिए स्वामी जी द्वारा एवं विश्व हिन्दू परिषद, गायत्री परिवार, आर्यसमाज, वेदप्रचार समिति गुरुकुल भवानीपुर के ट्रस्टी श्री शंकरभाई, श्री खीम जी भाई भानुशाली आदि कार्यकर्ताओं द्वारा समाज में व्याप्त अज्ञान के नाश एवं वैदिक ज्ञान के प्रकाश के लिए सार्थक प्रयास किया गया।

इस कथा से प्रेरित होकर अनेक गोभक्त सज्जनों ने गुरुकुल की गोशाला के लिए अपना महत्वपूर्ण सहयोग गोदान कर तथा प्रतिमास गोग्रास निमित्त सहयोग राशि देने का संकल्प लिया। भुज के भूतपूर्व कलेक्टर श्री मोरारदान गढ़वी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विद्याबेन जी ने स्वामी जी के प्रचार कार्यों में प्रतिवर्ष सहयोग करने का वचन दिया। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व भुज जिला मुख्यालय पर दिनांक १२ से १४ सितम्बर तक वेदकथा का आयोजन श्री शशीकान्त भाई विश्व हिन्दू परिषद के सौराष्ट्र प्रखण्ड के मन्त्री के सद्प्रभावों से सफलता पूर्वक सम्पन्न हो चुका है। इन वेदकथाओं के सकारात्मक परिणामों से उत्साहित होकर कच्छ क्षेत्र की समस्त तहसील मुख्यालयों पर वेदकथाओं के आयोजन का संकल्प लिया गया है।

इस कथा में मंच संचालन श्री शशीकांत भाई द्वारा सुन्दर ढंग से सम्पादित किया गया तथा अंत में सबका धन्यवाद किया गया।

तमसो मा ज्योतिर्गमय की कामना के साथ दीपावली के पावन प्रकाश पर्व पर अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज "**वैदिक संसार**" परिवार के समस्त सदस्यों (प्रकाशक मण्डल, प्रतिनिधियों एवं पाठकों) को आत्मीय मंगल कामना के साथ ढ़ेर सारी बधाइयाँ। साथ ही "**वैदिक संसार**" दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता हुआ, अपने नाम को सार्थक करता हुआ आर्यजगत् में सिरमौर बने। यही शुभ कामनाएँ

आशीर्वाद आकांक्षी

सत्यपाल शर्मा आर्य
युवा भजनोपदेशक
वैदिक हवन एवं संस्कार कर्ता

मंगल कामना का महाकांक्षी

नानालाल शर्मा आर्य
महर्षि आर्य समाज देहरी (मंदसौर)
०९००९८१६८११

thearyasamaj.org

मध्यप्रदेश के अनेक स्थलों पर वैदिक सत्संगों की धूम

आर्य जगत् की प्रखर वक्त्रि सुश्री अंजलि आर्या-करनाल तथा आर्य जगत् के उद्भट विद्वानों के मुखारविन्द से प्रवाहित होगी वेदवाणी

✸ विदिशा जिला मुख्यालय पर
दिनांक १२ से १४ दिसम्बर २०१४ तक सम्पन्न होगा आयोजन

✸ आर्य समाज खरसौद कलां द्वारा पुनः प्रारंभ की गई श्रृंखला में द्वितीय वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में **खरसौद कलां, जिला-उज्जैन (म.प्र.)** में गत वर्ष की भांति उन्हीं तिथियों **दिनांक १ से २० दिसम्बर २०१४ तक** पाटीदार धर्मशाला में आयोजन सम्पन्न होगा।

यज्ञ ब्रह्मा **सुश्री अंजलि आर्या, डॉ. शिवनारायण जी पाण्डेय** - आचार्य-गुरुकुल सुल्तानपुर (उ.प्र.), **पं. कमलकिशोर जी शास्त्री**-भोपाल तथा अन्य विद्वान् एवं गणमान्य महानुभाव पधारेंगे।

इस अवसर पर सप्त दिवसीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान तथा उज्जैन संभाग के प्रभारी **श्री लक्ष्मीनारायण जी आर्य** के मार्ग दर्शन में प्रांतिय प्रशिक्षक **श्री कृपाल आर्य** द्वारा संचालित किया जावेगा।

निवेदक - आर्य समाज, खरसौद कलां

सम्पर्क सूत्र - खेमराज लाईनमेन (**प्रधान**) ९७५४०४८२०५, बाबूलाल पाटीदार (**पूर्व प्रधान**) ९८२६०७२४५७, उच्छवलाल पाटीदार ९६१७६००६७८

✸ आर्य समाज पिपलिया मण्डी जिला-मन्दसौर द्वारा
वेद प्रचार-प्रसार सप्ताह मनाया जावेगा

इसके अंतर्गत **यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक सत्संग दिनांक २९ दिसम्बर से १ जनवरी तक** समीप के ग्रामीण क्षेत्रों में तथा **दिनांक २ से ४ जनवरी २०१५ तक** ५१ कुण्डीय यज्ञ वेदी पर आहूतियों द्वारा सम्पन्न होगी।

यज्ञ ब्रह्मा **सुश्री अंजलि आर्या, पं. सत्यपाल सरल** (देहरादून) - भजनोपदेशक, **पं. कमलकिशोर जी शास्त्री** (भोपाल) - भजनोपदेशक तथा अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित होंगे।

निवेदक - आर्य समाज पिपलिया मण्डी,

सम्पर्क - पं. सत्येन्द्र आर्य, ९४०६६७५४२३

✸ जावरा, जिला-रतलाम (म.प्र.) में दिनांक १५ से १९ जनवरी २०१५ तक सुश्री अंजलि आर्या के मुख्य आतिथ्य में वैदिक सत्संग सम्पन्न होगा

✸ आर्य समाज धार (म.प्र.) के तत्वावधान में निकटवर्ती **ग्राम-दिलावरा** म गत् वर्ष की भांति इस वर्ष भी गायत्री महायज्ञ का आयोजन **दिनांक २० से २२ जनवरी २०१५ तक सुश्री अंजलि आर्या** एवं पं. भिष्म जी आर्य बिजनौर की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न होगा।

निवेदक - आर्य समाज धार

सम्पर्क - लाखनसिंह ठाकुर (प्रधान) ९९९३१७४८३२

महेश आर्य (मंत्री) ९७५५७७७८१६

✸ आर्य समाज बड़नगर जिला-उज्जैन (म.प्र.)

अपनी स्थापना के १०० वर्ष पूर्ण होने पर **शताब्दी समारोह** के रूप में वैदिक सत्संग का आयोजन भव्य रूप में दिनांक २६ जनवरी से ३० जनवरी २०१५ तक बड़नगर में आयोजित करने जा रहा है।

इस गरिमामयी अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व निर्वहन करेंगे आर्य जगत् के वयोवृद्ध विद्वान् **पं. कमलेश जी अग्निहोत्री,** अहमदाबाद तथा भजनों एवं उपदेश की सुमधुर वैदिक ज्ञान गंगा **सुश्री अंजलि आर्या**-करनाल व **पं. कमल किशोर शास्त्री**-बैरसिया (भोपाल) के मुखारविन्द से प्रवाहित होगी।

आर्य समाज बड़नगर के वयोवृद्ध, सेवाभावी विद्वान् **पं. नाथुलाल जी शमा** अपनी ओजस्वी वाणी में कार्यक्रम का संचालन करेंगे।

निवेदक - आर्यसमाज बड़नगर

सम्पर्क सूत्र - राजेन्द्र यादव (**प्रधान**) - ९७७०३१५११७, अरुण भावसार (**मंत्री**) - ९९९३४१४०१०मनोज आर्य (**वरिष्ठ कार्यकर्ता**) - ९९२६९६०८६२

उपरोक्त समस्त आयोजनों में **'वैदिक संसार'** द्वारा वेद प्रचार वाहन के साथ उपस्थित रहकर पर्याप्त मात्रा में **दर्शन योग महाविद्यालय**-रोजड़, **वानप्रस्थ साधक आश्रम**-रोजड़, **सन्त औधवराम वैदिक गुरुकुल**-भवानीपुर (कच्छ), **अमर स्वामी प्रकाशन**-गाजियाबाद, **राममुनि प्रकाशन**-रोहतक, **गोविन्दराम हासानन्द**-दिल्ली तथा **आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट** द्वारा प्रकाशित साहित्य एवं यज्ञ कुण्ड, सुर्वा, हवन सामग्री आदि तथा वैदिक संसार पत्रिका की सदस्यता उपलब्ध करवाकर उपस्थितों को लाभान्वित करने का पूर्ण प्रयास किया जावेगा।

आर्य समाज नान्द्रा का २१ वाँ वार्षिकोत्सव

दिनांक १ से ५ जनवरी २०१५तक

अत्यंत हर्ष का विषय है कि आर्य समाज नान्द्रा,जिला-खरगोन म.प्र. का २१ वाँ वार्षिकोत्सव प्रतिवर्षानुसार स्थायी नियत तिथी १ जनवरी से ५ जनवरी २०१५ तक आमंत्रित विद्वानों के वेदोक्त सारगर्भित प्रवचन एवं भजन की प्रवाहित होने वाली अमृतवर्षा में सानन्द सम्पन्न होगा। इस अनुपम अवसर पर समस्त आर्यजन सादर आमंत्रित है।

आमंत्रित विद्वान्

डॉ. सोमदेव जी शास्त्री, मुम्बई (महा.),

पं. अमरसिंह विद्यावाचस्पति, ब्यावर (राज.)

पं. काशीराम जी अनल, कानड (म.प्र.)

निवेदक - **आर्यसमाज, नान्द्रा**

सम्पर्क सूत्र- डालूराम आर्य, ९६१७१८९११२

माता मोहिनी देवी मेमोरियल ट्रस्ट, गांधीधाम द्वारा आयोजित आयोजन में वेद प्रचार वाहन वैदिक साहित्य के साथ उपस्थित होगा

दिनांक १२से १६जनवरी तक

वरिष्ठ समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री नेमीचन्द जी शर्मा द्वारा अपने माता-पिता की स्मृति में अजमेर से लगभग ४० किलोमीटर की दूरी पर जिला-नागौर (राज.) में स्थित अपने पैतृक ग्राम-लाड़पुरा में पाँच दिवसीय भव्य आध्यात्मिक एवं सामाजिक आयोजन किया जा रहा है जिसमें जल मन्दिर (प्याऊ), विद्यालय में निर्मित हाल व उसके बरामदे का लोकार्पण तथा अन्य कार्यक्रम सम्पन्न होगें।

इस अवसर पर वैदिक संसार वेद प्रचार वाहन के साथ वैदिक साहित्य उपस्थित होगा। **उल्लेखनीय है कि वेद प्रचार वाहन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु माता मोहिनीदेवी मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा ही वैदिक संसार को सादर अर्पण किया हुआ है।**

उपरोक्त आयोजन में अधिक से अधिक स्नेहीजनों की उपस्थिति श्री नेमीचन्द जी शर्मा की ओर से सादर प्रार्थनीय है।

thearyasamaj.org

१३१वें ऋषि निर्वाण दिवस का आयोजन

आर्य समाज मंदिर मल्हारगंज, इंदौर में न्यायमूर्ति वीरेन्द्र दत्त ज्ञानी जी की अध्यक्षता में दिनांक २६ अक्टूबर २०१४ को इंदौर संभाग के समस्त आर्यसमाजों द्वारा संयुक्त रूप से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का १३१वाँ निर्वाण दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये।

आपने कहा कि आज चारों ओर से वैदिक संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है। आज हम अपनी वैदिक संस्कृति को भूलते जा रहे हैं यही कारण है कि तथा-कथित सम्प्रदायों की घूसपैठ से वैदिक संस्कृति दूषित हो रही है **'लवजिहाद'** उसी का एक उदाहरण है।

आपने आह्वान किया कि हमारे ऊपर ऋषि का ऋण है, आज हम उनके बलिदान को स्मरण करने के लिए उपस्थित हुए हैं ऋषि के ऋण से हम तभी उऋण हो सकते हैं जब हम **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के तत्व को समझें और संकल्प लें कि **'जिसमें जितनी योग्यता हो वह वहीं रहकर ऋषि के कार्यों को आगे बढ़ाएँ'** और ऋषि के बताए मार्ग पर चले।

इस अवसर पर महू से पधारे श्री चन्द्रप्रकाश जी निगम ने भी ऋषि के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम समापन पर सभाध्यक्ष न्यायमूर्ति वीरेन्द्र ज्ञानी जी ने कहा कि हमारी वैदिक संस्कृति प्राचीन संस्कृति है, यह ऋषि-मुनियों की संस्कृति है इसके पोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। आज इस संस्कृति को नष्ट करने की योजनाएँ चल रही हैं। हमारी अंतर्राष्ट्रीय धरोहरों को नष्ट करने की योजना चल रही है, अपनी संस्कृति को जाने-पहचानें और इसकी रक्षा करने का संकल्प ले।

कार्यक्रम में श्री गणपति वर्मा (पूर्व D.S.P.), मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा इंदौर के उपप्रधान श्री गोविन्द राम जी, उपमन्त्री डॉ. दक्षदेव गौड़, आचार्य संजयदेव जी, दिनेश जी गुप्ता, विनोद बिहारी भटनागर, पं. बाबूलाल जोशी, सुखदेव शर्मा प्रकाशक-वैदिक संसार उपस्थित रहे।

आर्यसमाज के मंत्री डॉ. विनोद अहलुवालिया जी ने आभार व्यक्त किया। शांतिपाठ तथा ऋषि लंगर के रूप में स्नेह भोज के साथ कार्यक्रम समापन हुआ।

प्रधान-आर्यसमाज मन्दिर मल्हारगंज, इन्दौर

शारदीय नवसस्येष्टि एवं ऋषि निर्वाण दिवस सम्पन्न

दीपावली से हम अंधकार से लड़कर सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा ले। हृदय में ज्ञान की ज्योति जलाएँ। यह आह्वान श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा आयोजित शारदीय नवसस्येष्टि एवं ऋषि निर्वाण दिवस पर किया। श्री आर्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के राष्ट्रोद्धार एवं वेदोद्धार हेतु समर्पित जीवन पर प्रकाश डालते हुए महर्षि के उपकारों का वर्णन किया।

आरम्भ श्री अनन्तदेव शर्मा उपप्रधान आर्य समाज हिरण मगरी के पुरोहित्व में सम्पन्न यज्ञ से हुआ। समाज के वरिष्ठ जन श्री बंसतलाल कोहली एवं डॉ. एस.सी. खोसला का ७५ वर्ष आयु प्राप्त करने के उपलक्ष्य में समाज के प्रधान श्री भंवरलाल आर्य, प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, संजल शांडिल्य, मुकेश पाठक व दिनेश अग्रवाल ने श्रीफल, उपर्णा एवं शॉल द्वारा अभिनन्दन किया। श्री इन्द्रदेव पीयूष ने शास्त्रीय शैली में ईश-भजन एवं ऋषि भजन-**'ऋषिराज तुम तो अकेले जीवन की होली खेले'** प्रस्तुत किये। आभार श्रीमती ललिता मेहरा, मंत्री आर्य समाज हिरण मगरी ने ज्ञापित किया।

संचालन समाज के उपमंत्री श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। समाज के सभासद श्री इन्द्र प्रकाश यादव द्वारा शांतिपाठ एवं जयघोष के साथ वैदिक पर्व सम्पन्न हुआ।

-**भूपेन्द्र शर्मा**, उपमंत्री

नेत्र परीक्षण शिविर में नेत्रदान की घोषणाएँ

स्वास्थ्य विभाग म.प्र. शासन एवं अंधत्व नियंत्रण समिति, जिला-मंदसौर के सहयोग तथा जैन परिवार-दिल्ली एवं इनव्हील क्लब मंदसौर के सौजन्य से नि:शुल्क मोतियाबिन्द नेत्र लेंस प्रत्यारोपण ऑपरेशन शिविर का आयोजन प्रस्तावित है इसी कड़ी में महर्षि आर्यसमाज देहरी (मंदसौर) द्वारा चतुर्थ नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन दिनांक २९/८/१४ को ग्राम-देहरी में किया गया जिसमें श्री लाभमुनि चिकित्सालय मंदसौर के सिद्ध हस्त चिकित्सकों ने पुनीत सेवाएँ दीं। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री मन्नालाल जी पाटीदार, श्री बापूलाल पाटीदार (सेठ), श्री चंतराम पाटीदार, श्री नानालाल शर्मा, चिकित्सक श्री सोलंकी जी, श्री राणासाहब, श्री सुनील कनेसरिया जी, श्रीमती साक्षी, श्रीमती पुष्पा ने ओम् ध्वजारोहण व दीप प्रज्वलित कर किया।

डॉ. श्री सोलंकी, श्री राणा, श्री कनेसरिया, जिला पंचायत सदस्या श्रीमती केशर बाई निनामा, जनपद पं. सदस्या श्रीमती वर्षा दवे आदि ने नेत्रों का महत्व व इनकी सुरक्षा पर महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये। ब्रह्मचारी श्री कपिलमुनि शर्मा ने स्वस्ती वाचन मंत्रों से आगन्तुकों का तिलक-अक्षत से स्वागत किया। आर्यसमाज के सघन प्रचार से दूर-दराज के २१७ नेत्र रोगियों का परिक्षण होकर ४५ मोतियाबिंद नेत्र रोगियों का श्री लाभमुनि नेत्र चिकित्सालय में नि:शुल्क ऑपरेशन व लैंस प्रत्यारोपण हेतु चयन किया गया।

संचालन की सुंदर भूमिका में परमात्मा कृत मानव शरीर का प्रत्येक अंग अमूल्य है, ऐसे शरीर को मृत्यु बाद जला या गाड़ दिये जाने पर इसके अंगों का कोई उपयोग नहीं रहता। मनुष्य अपने जीवन में तो परोपकार करता ही है, पर मृत्यु बाद भी अपने अमूल्य अंगों के दान से आत्मानन्द की प्राप्ति की जा सकती है। ऐसे विचारों से प्रेरित सेवा निवृत्त द्वय प्रधानाध्यापक श्री जयचंद पाटीदार रींछालाल मुंहा व श्री नानालाल शर्मा 'आर्य' देहरी ने नेत्रदान की घोषणाएँ की।

श्रीमती सुशीला शर्मा आर्या, श्रीमती कारी पाटीदार, श्रीमती अम्बा वढेरा, श्रीमती रमीला, श्रीमती सावित्री मकवाना, श्रीमती मांगू, श्री उदयराम जी, समाज सेवी श्री जगदीश शर्मा, वैदिक भजनोपदेशक एवं वेदपाठी श्री सत्यपाल शर्मा, श्री भुवानसिंह (पूर्व सरपंच), भभूत काका, मोतीलाल जी शर्मा, भंवरलाल जी जैन, रूपराम जी पाटीदार, श्री बसन्तीलाल पाटीदार आदि उपस्थित रहे। उपस्थितों को वैदिक साहित्य वितरीत किया गया। आभार श्री बापूलाल पाटीदार (सेठ) पूर्व प्रधान ने माना।

शिविर सेवा कार्य से प्रभावित होकर श्री लाभमुनि जन सेवा ट्रस्ट द्वारा श्री नानालाल शर्मा का आभार एवं पुष्पाहार से स्वागत किया गया।

-**नानालाल शर्मा**, देहरी (मन्दसौर)

पृष्ठ-४२ का शेष भाग.....

माता प्रेमलता जी शास्त्री के देहावसान पर आर्यसमाज महूँ द्वारा श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया जाकर माता जी की दिवंगत आत्मा के प्रति पूर्ण श्रद्धा के साथ भावांजलि व्यक्त किये जाने बाबद् संस्था मंत्री श्रीधर जी गोस्वामी ने अवगत करवाया है।

माता जी द्वारा किये गये कार्य सम्पूर्ण मानव जाति पर उपकार है विशेषकर दूरस्थ वनवासी अंचलों में वास करने वाले शोषित-पीड़ित वर्ग के बालक-बालिकाएँ जिनके लिये माता जी का जीवन समर्पित रहा। ऐसी महान् आत्मा के इस संसार से प्रस्थान कर जाने से निश्चित रूप से मानव समाज तथा आर्यजगत् की अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा की व्यवस्था से ऐसी महान् आत्माएँ इस संसार में आती है परोपकारी यज्ञ कर्मों को करती है और आगामी श्रेष्ठ जीवन की पथिक बन जाती है। निश्चित रूप से माता जी की आत्मा ईश्वरीय व्यवस्था से पुन: आवेंगी और जगत् को लाभान्वित करेंगी।

वैदिक संसार परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपने श्रद्धा सुमन व्यक्त करता है।

thearyasamaj.org

माननीय पं. सुखदेव जी शर्मा, सस्नेह नमस्ते! २७/०८/२०१४
महोदय,

आपके वैदिक संसार के लेख वास्तव में दिल को छूने वाले और वेद की गहराइयों तक पहुँच वाले होते हैं। धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जानकारियों से ओत-प्रोत मिलते हैं। कृपया मुझे भी वार्षिक ग्राहक बना कर वैदिक संसार भेजने का कष्ट करें।

-कन्हैयालाल शर्मा, अंगिरा नगर, अजमेर (राज.)

आदरणीय श्रीयुत सुखदेव जी शर्मा १७/१०/२०१४
प्रकाशक-''वैदिक संसार'' हिन्दी मासिक

सादर प्रणाम। आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तक **''वैदिक संसार''** पढ़ने का अवसर मिला। आपका संपादकीय सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों के लिये अहम चुनौती-**''लव जिहाद का जनक लव मैरिज''** आज की युवा पीढ़ी के लिए जागो पार्थ जागो का संदेश है। बहुत ही विचारणीय और अपनाने योग्य व जगाने योग्य प्रेरक है। आप बधाई के पात्र हैं। साथ ही **स्वामी अग्निवेश आये चर्चा में शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द को चुनौती देने से।** बहुत ही प्रेरणा का अलख है। स्वामी जी के तर्क का अच्छा उल्लेख पढ़ने को मिला है। आप के अच्छे आलेख वैदिक संसार के माध्यम से हमारे यहाँ भी ज्ञान पिपासुओं के अध्ययनार्थ सप्रेम भिजवाएगें तो लाभ होगा। हमें आशा है कि आप अपनी ज्ञान की गठरी में से हमें भी ज्ञान प्राप्त करने का मौका देगें।

विनीत- **संत महेश वैष्णव,** जोधपुर

श्रद्धेय पं. सुखदेव जी शर्मा २०/१०/२०१४
सादर सस्नेह आत्मीय नमस्ते

वैदिक संसार पत्रिका आधुनिक वैदिक पत्रिकाओं में सिरमौर होकर इस का प्रत्येक पृष्ट, पंक्ति एवं शब्द का महत्वपूर्ण अर्थ निकलता है। तथा अमूल्य ज्ञान प्रदान करता है। वैदिक संसार के समस्त सहयोगियों को दीपावली २०१४ के उपलक्ष में कोटि-कोटि शुभकामना स्वीकार हो। एवं इस पत्रिका की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति के लिये मंगलमय प्रार्थना करते हैं।

-कश्यप रामनिवास शर्मा, बिहारीगंज, अजमेर

आदरणीय अधिकारी जी, सेवा में सादर प्रणाम ०७/०८/२०१४

विनम्र निवेदन है कि कोई लेख उदाहरण देकर भी लिखे जैसे राजा-महाराजा कहानी-किस्से भी लिखे, अमृतवाणी, लतीफे भी लिखे, प्रदूषण हटाओं-पर्यावरण बचाओं, जनरल नालेज, पाप-पुण्य पर भी लेख लिखे। जैसे-अज्ञानी लोग उपवास के दिन या त्यौहार पर गाय को रोटी प्लास्टीक थैली में बाँधकर उपर से फेकते हैं, गाय के हाथ नही होते जो उसे खोल कर खायेगी अत: प्लास्टीक खा जाती है मर जाती है पाप लगा या पुण्य? पेपर में लपेट कर फेंकने का लिखे।

लोगों में जागरूकता लाये, नये युग में नया तरीका अपना कर लोगों में धार्मिक भावना जगाएँ। कुछ लोग घर के पीछे कचरा फेंकते हैं धीरे-धीरे वहाँ कचरे का ढ़ेर हो जाता है प्रदूषण बढ़ता है। कचरा गाड़ी आती है फिर भी आलसी पना करते है। काँच की बोटल एवं बल्ब को रास्ते में फेंकते हैं, काँच राहगीरों को चुभता है, गाड़ीयाँ पंचर होती है। देश-विदेश की अच्छी शिक्षा प्रद कहानियाँ लेकर उसका हिन्दी में ट्रांसलेशन करके छापे या पुस्तक बनावे, समाज का विकास होगा, देश की उन्नती होगी। अंधविश्वास, गलत रिवाज पर भी रोशनी डाले। भ्रूणहत्या, गोरक्षा और प्रदूषण पर समय-समय पर लेख लिखते रहें। इस पत्र को पढ़कर उस पर विचार विमर्श जरूर-जरूर किजीएगा।

जय महाराष्ट्र - जय हिन्द **एक शुभ चिन्तक**

श्रीमान् सुखदेव जी शर्मा २९/१०/२०१४

सादर नमस्ते। आपका पत्र नित्यप्रति प्रगतिशील, राष्ट्रीय विचारों से आलोकित, ज्ञान वर्धन सामग्री से भरपूर व आर्य विचारों से ओत-प्रोत, इस पिछड़े समाज में नव-योवन स्वरूप, नया-पन व सुदृढ़ आर्य विचारों का प्रचार-प्रसार कर संदेश वाहक बनेगा ऐसी कामना हम करते हैं। सुखदेव जी का सुख सबमें व्याप्त हो मन को प्रसन्न व हर्षित करें।

हृदय से आपका आभार व धन्यवाद। **-पुरूषोत्तमदास गोठवाल**
वरिष्ठ प्रधान आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार, जयपुर

श्रद्धेय श्री सुखदेव जी शर्मा ''वैदिक संसार'' १३/१०/२०१४

मंगलकामना के साथ नमस्ते। नव वर्ष दीपावली की मंगलमय बधाई। पं. श्री सत्यपाल शर्मा वैदिक भजनोपदेशक देहरी (मंदसौर) **''वैदिक संसार''** प्रतिनिधि की प्रेरणा से मैं जैसे ही **''वैदिक संसार''** पत्रिका का पाठक बना अन्य पत्रिकाएं बंद कर दी। महीने के प्रथम सप्ताह में पत्रिका की प्रतीक्षा करते हुए पत्रिका प्राप्ति के बाद इसे पूर्ण रूप से कई बार पढ़कर दूसरों को भी लाभ लेने का आग्रह करता हूँ। पत्रिका अपने आप में अवर्णनीय वैदिक ज्ञान के साथ-साथ व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र के उत्थान की भावना लेकर धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक घटना और ऋषि-ऋषिकाएँ, महापुरुषों के त्याग, बलिदान, शौर्य की बड़े सुंदर व्याकरण संगत, सार गर्भित लेखों से विशुद्ध ज्ञान देती है। इसका आकार, प्रकार, छपाई, कागज, कलेवर विशुद्ध हिंदी व हिंदी में अंक होने से बड़ी मनोहर लगती है। परमात्मा ऐसी वैदिक पत्रिका को और अधिक प्रगति प्रदान करें, व अपने उद्देश्यों से विश्व का कल्याण करें।

शुभेच्छूक - बालमुकन्द शर्मा अध्यापक, हेमड़ा (राज.)

श्रीमान शर्मा जी, वैदिक संसार, इन्दौर २७/०९/२०१४

सादर वन्दन, आपके अथक प्रयास के प्रतिफल स्वरूप प्रकाशित वैदिक संसार पत्रिका का माह अगस्त २०१४ का अंक प्राप्त हुआ। मुख्य पृष्ठ पर महर्षि श्री दयानन्द सरस्वती जी की दृष्टि में योगीराज श्री कृष्णचन्द्र जी के सम्बन्ध में वर्णित लेख अत्यन्त ही सार गर्भित लगा। तथा पत्रिका का वर्तमान स्वरूप काफी प्रशंसनीय होकर पाठक वृन्द को पढ़ने के लिए अति उत्साहित कर रहा है। पत्रिका में श्री गंगाशरण जी आर्य द्वारा लीखित लेख **आत्मिक ज्ञान और पुण्य खरीदे नहीं जा सकते** अत्याधिक सराहनीय एवं शिक्षा प्रद होकर सर्व जन हीताय प्रतीत हुआ। इस लेख के लेखक साधुवाद के पात्र है। पत्रिका में उल्लेखित दानवीर भामाशाह श्री नेमीचन्द्र शर्मा द्वारा वैदिक संसार को वेद प्रचार वाहन भेंट दिये जाने सम्बन्धी जानकारी पढ़कर अत्यन्त ही प्रसन्नता हुई। उपरोक्त कार्य हेतु श्री नेमीचन्द जी शर्मा व उनका परिवार धन्यवाद के पात्र है साथ ही अन्य महानतम दान दाताओं से इस पत्र के माध्यम से वैदिक संसार को यथा सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

-रामचन्द्र दुबे, से. नि. जि. न्याया. कर्म., सुकलिया, इन्दौर (म.प्र.)

thearyasamaj.org

दयानन्द सेवाश्रम संघ की अध्यक्षा माता प्रेमलता शास्त्री का निधन

आर्यजगत् की महान् विभूति स्व. पृथ्वीराज जी शास्त्री की पत्नी, दयानन्द सेवाश्रम संघ की अध्यक्षा, कन्या गुरुकुल रानीबाग, दिल्ली की प्राण श्रद्धेय माता जी श्रीमती प्रेमलता शास्त्री का निधन १/११/२०१४ को हो गया। उसके पूर्व सितम्बर १४ को मैं भारत विकास परिषद की राष्ट्रीय बैठक के अवसर पर, उनसे मिलना हुआ था। ९१ वर्ष की आयु में भी वे अपने घर से दूर पंजाबी बाग, रानीबाग में उन्हीं के द्वारा स्थापित कन्या गुरुकुल में उत्तर पूर्वांचल की ५० के लगभग नागा बालिकाओं को अध्ययन करवा रही थीं। उन्होंने मुझे उनके गुरुकुल की एक बालिका को महिनाभर पहले राष्ट्रपति जी को राखी बांधते हुए फोटो बताया, बच्ची से मिलवाया तथा कांकनवाड़ी (थांदला म.प्र.) के उनके विद्यालय के लिये बांसवाड़ा से ३००० स्क्वेयर फीट मार्बल भेजने को कहा। मार्बल की व्यवस्था हो गई थी माहेकम सिंह जी के सहयोग से, पर ट्रक उपलब्ध न होने से मार्बल उनकी मृत्यु उपरांत ही कांकनवाड़ी पहुँचा। '**भारत रत्न**' रानी गाईदिन्ल्यु के साथ माता जी का ५०-६० वर्ष पुराना फोटो भी देखा। माताजी ने अपने साक्षात्कार के बारे में कहा था कि हमारे दिल्ली के साथ काम करने वाले आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं को भी बहुत नयी जानकारी इस प्रकाशित समाचार को पढ़कर मिली। पुण्यात्मा को नमन, जीवनभर देह को आर्यसमाज के कार्य में समीधा की तरह अर्पीत किया तथा मृत्यु उपरान्त भी अपना शरीर आर्मी मेडीकल कॉलेज में देहदान कर जीवन और मृत्यु दोनों धन्य कर गई।

-डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी, बांसवाड़ा

उन्हीं की जुबानी उनके जीवन की मर्मस्पर्शी सेवाभावी संक्षिप्त कहानी

डॉ. युधिष्ठिर त्रिवेदी द्वारा माता प्रेमलता जी का लिया गया साक्षात्कार जो माही प्रवाह साप्ताहिक में फरवरी २०१२ में प्रकाशित किया गया था।

दुर्गावती जब रण में निकली चलने लगी तलवारे दो इस गीत की पंक्तियों ने आज से कोई ८० वर्ष पहले एक बालिका के मन में अपनी घर गृहस्थी के अलावा देश के लिए कुछ करने का भाव उत्पन्न किया था। वह बालिका अब श्रीमती प्रेमलता शास्त्री के रूप में ८७ वर्ष की आयु में अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ की अध्यक्ष के रूप में पूरे देश में शिक्षा, सेवा और राष्ट्र रक्षा हेतु अलख जगा रही है।

प्रश्न - आपकी आयु क्या है तथा आप कब से सेवा कार्यों से जुड़ी?

उत्तर - आयु ८७ वर्ष है। पिछले ६० से अधिक वर्षों से, पहले पति श्री पृथ्वीराज शास्त्री के साथ तथा बाद में अन्य सहयोगियों के साथ सेवाश्रम संघ के माध्यम से सेवा कार्य करती हूँ।

प्रश्न - अभी दयानन्द सेवाश्रम संघ कहाँ पर क्या कार्य करता है?

उत्तर - ६०० छात्रावासों में ११ हजार करीब वनवासी, जनजाति तथा गरीब तबके के बालकों और बच्चियों को पढ़ा रहे हैं। आपके यहाँ बांसवाड़ा कुशलबाग में तथा आसपास के रतलाम, थांदला-झाबुआ, होशंगाबाद में हमारे छात्रावास तथा विद्यालय हैं। इसके अलावा नागालैण्ड, आसाम, कानपुर, देहात तथा पौड़ी गड़वाल में भी सेवाश्रम संघ कार्यरत हैं।

प्रश्न - इतने सारे सरकारी विद्यालयों के होते हुए भी आप क्यों विद्यालय चलाती हैं?

उत्तर - हमारे विद्यालय विशेष रूप से दूरस्थ क्षेत्र में हैं। जहाँ विद्याध्ययन के प्रति रूचि अभी भी कम है। वहाँ बच्चों को विशेष रूप से लड़कियों को पढ़ने की प्रेरणा तथा व्यवस्था करते हैं। पढ़ाई के अलावा नैतिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों को सुसंस्कार भी देते हैं। विचारों में शुचिता तथा जीवन में त्याग समर्पण भाव के लिए वेदों का अध्ययन व यज्ञ कर्म सिखलाते व करवाते हैं।

प्रश्न - उत्तरपूर्व आसाम नागालैण्ड की बच्चियों का गुरुकुल कैसे खोला?

उत्तर - नागालैण्ड की दिमासा जनजाति वहाँ की पृथकतावादी ताकतों में शामिल नहीं है। इसलिये वहाँ पर राष्ट्रविरोधी मिशनरी उन पर बहुत अत्याचार करती है। कुछ दिमासा बंधुओं ने बताया कि **श्रेष्ठ महाबलि भीम ने हमारी पूर्वज हिडिम्बा से ब्याह रचाया था तथा उसके पुत्र घटोत्कच के बलिदान से ही अर्जुन के प्राण बचे थे।** ये हमारा हस्तीनापुर (दिल्ली) वालों पर ऋण है। इसे चुकाने के लिए आप हमारी बच्चियों को पढ़ाकर सशक्त बनाओं। **दिमासा जनजाति के वरिष्ठ नागरिकों की बात मानकर दिल्ली में आर्यसमाज रानीबाग (पंजाबी बाग के पास) वैदिक कन्या गुरुकुल खोला।** जब ये बच्चियाँ शिक्षा प्राप्त कर, विकसित संस्कारित हुईं तो दिमासाओं ने कहा कि आप हमारे लिये यहीं नागालैण्ड में अच्छी शिक्षा का प्रबंध करें। **उनके एक बंधु ने अपनी ११८ बीघा जमीन दान दी। अब वहाँ एम.डी.एच. मसाले वाले महाशय धर्मपाल जी के एक करोड़ के दान से, भारतीय सेना का सहयोग लेकर एक बड़ा विद्यालय बना रहे हैं।** यहाँ जनजाति के छात्रों को राष्ट्रभक्ति के संस्कार के साथ Excellance के लिए पढ़ायेंगे। वे आई.ए.एस., आई.पी.एस. बनें ताकि वे अपने दिगभ्रमित पृथकतावादी जाति भाइयों को पुनः राष्ट्र की मुख्य धारा में ला सके।

प्रश्न - बाजना में भी कोई बड़ा विद्यालय बना रहे हैं?

उत्तर - हाँ! थांदला, झाबुआ में हमारे कई छोटें-छोटें प्राथमिक विद्यालय हैं, जो अति पिछड़ों को शिक्षा से जोड़ते तो हैं पर सुप्त प्रतिभावान छात्रों को उच्चतर स्तर की पढ़ाई की सुविधा देकर उन्हें शिक्षा में ऊंचाइयों तक नहीं पहुँचाते हैं। इस उद्देश्य से **थांदला के पास बाजना में डेढ़ करोड़ की लागत से एक** आवासीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय का भूमि पूजन श्री कांतीलाल भूरीया की उपस्थिति में एम.डी.एच. मसालों के धर्मपाल जी ने किया है।

प्रश्न - दयानन्द सेवाश्रम से जुड़ने से पहले आप क्या करती थीं?

उत्तर - उससे पहले आर्यसमाज रानी बाग के आस-पास रहने वाली रोगी बच्चियों तथा महिलाओं को अस्पताल ले जाना-लाना था, गर्भवती महिलाओं के घर पर प्रसव के समय मदद किया करती थी। उसके बाद अपने क्षेत्र में कन्या भ्रुणहत्या तथा दहेज के विरोध में पेम्पलेटों, रेलियों, सभाओं तथा लेखों द्वारा जन जागरण करती थी।

प्रश्न - इस लगन से महिलाओं की शिक्षा प्रचार की ये प्रेरणा आपको कैसे मिली?

उत्तर - बहुत पुरानी बात है। गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक तथा देशभर में डी.ए.वी. स्कूल तथा कॉलेजों की श्रृंखला स्थापित करने वाले स्वामी श्रद्धानंद की पहली वाली शिष्या जिन्होंने जलंधर से बी.ए. पास किया था। वे रामरक्खी देवी पंजाब (अब पाकिस्तान) के हाफिजाबाद कस्बे में लड़कियों का स्कूल चलाती थीं। जिसमें ५०० लड़कियाँ पढ़ती थीं तब मैं ६ वर्ष की थी। उन्होंने मेरे घर आकर मेरे पिता जी को मुझे पढ़ाने को कहा मेरे पिता जी हिचके, तो उन्होंने उनसे खुब आग्रह किया। तब पिता जी मान गये पर दादी ने रोड़ा अटका दिया। लड़कियाँ पढ़कर क्या करेंगी? उस पर रामरक्खी देवी ने मेरे पिता जी को अपना भाई बना दिया और कहा कि अब ये मेरी भतिजियाँ हैं। छोटी बहिन को कंधे पर बैठाकर और मेरी अंगुली पकड़कर वे मुझे विद्यालय ले गईं और पढ़ाना शुरु किया। बाद में मेरी शादी आर.बी.आई. में अधिकारी और गुरुकुल के स्नातक श्री पृथ्वीराज शास्त्री से हो गई तथा देश विभाजन के बाद हम दिल्ली आ गये। रामरक्खी देवी भी दिल्ली आ गईं। मेरे मन में '**दुर्गावती जब रण में निकली**' गीत की पंक्तियाँ रची बसी थी। **रामरक्खी देवी ने समझाया अब युद्ध अशिक्षा तथा कुसंस्कारों के खिलाफ है। इसमें हथियार अक्षर, किताब और विद्यालय हैं।**

प्रश्न - सेवा कार्य करते-करते कभी दुःख निराशा के क्षण भी आये होंगे?

उत्तर - क्षणिक रूप से कभी दुःख होता है, जब इतनी शिक्षा और संस्कार देने के बावजूद कोई बच्चा कुछ छोटी-मोटी चोरी कर पढ़ाई छोड़कर भाग जाता है तो कष्ट पहुँचना स्वाभाविक है।

प्रश्न - इस ८७ वर्ष की अवस्था में आपकी इच्छा, युवाओं को संदेश।

उत्तर - **अपने बच्चों विशेषकर बच्चियों को खुब पढ़ायें। अच्छे संस्कार दें, नशे से बचायें, राष्ट्रभक्त बनायें, भारत फिर विश्वगुरु बने यही अभिलाषा।**

शेष पृष्ठ-४० पर

thearyasamaj.org

सफलता का संसार– कामयाबी के मूल मंत्र का परिचय देते पुस्तक के कुछ पृष्ठ

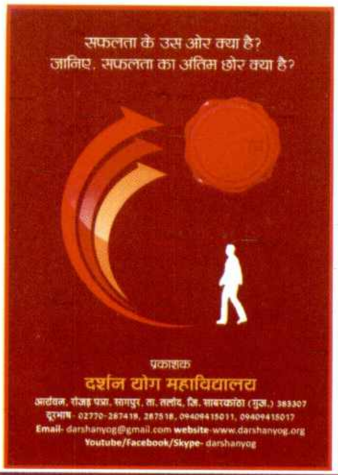

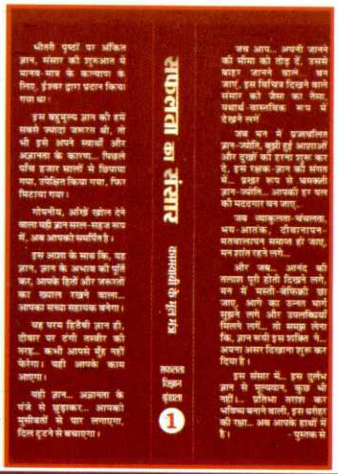

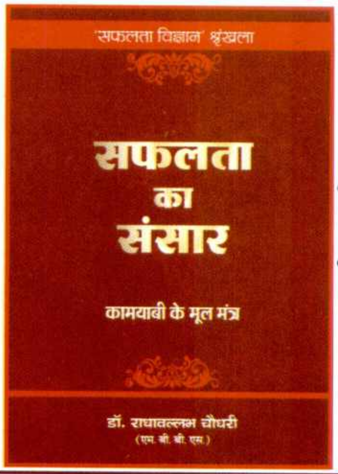

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३७ पर

विस्तृत विवरण पृष्ठ ४० पर

ग्राम देहरी में चतुर्थ नेत्र परिक्षण शिविर आयोजित आयोजन के मुख्य सूत्रधार समाजसेवी पं. नानालाल जी शर्मा का सम्मान

बाबाओं का विवादों से पुराना नाता

रामपाल प्रकरण के बाद बाबाओं के काले कारनामों की याद ताजा हो गई है आस्था के साथ खिलवाड़ करने वाले कई बाबा हत्या और बलात्कार जैसे संगीन अपराधों में लिप्त पाए गए है। एक नजर विवादित बाबाओं पर...

गुरमीत राम रहीम सिंह

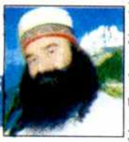

डेरा सच्चा सौदा प्रमुख बाबा राम रहीम सिंह पर सी.बी.आई ने रेप के आरोप में केस दायर किया है। बाबा पर सिरसा स्थित डेरा के मुख्यालय में महिलाओं के यौन शोषण का आरोप है।

आसाराम

आसाराम के स्कूल में दो बच्चों की मौत के बाद उस पर नरबलि के आरोप लगाये गये थे। फिलहाल शिष्याओं के रेप व योन शोषण के आरोप में आसाराम जेल में है।

चंद्रा स्वामी

तांत्रिक चंद्रास्वामी राजनितिक रसूख के कारण काफी चर्चा में रहा था 1998 में एम सी जैन आयोग की एक रिपोर्ट में राजीव गाँधी हत्याकाण्ड मामले में उसकी भूमिका बताई गई थी। आश्रम से हथियार डीलरोंको दिये गये 11 लाख डालर के ड्राफ्ट मिले थे।

नित्यानंद स्वामी

नित्यानंद स्वामी का एक टीवी चेनल ने विडियो प्रसारित किया था जिसमें दक्षिण भारतीय अभिनेत्री रंजीता के साथ आपत्तिजनक स्थिति में दिख रहा था।

प्रेमानंद

त्रिचिरापल्ली का प्रेमानंद 13 लड़कियों से बलात्कार का आरोपी है उस पर श्रीलंका के एक व्यक्ति की हत्या का आरोप भी है।

जयेन्द्र सरस्वती

कांची कामकोटी पीठ के शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती को नवंबर 2004 में मंदिर मैनेजर शंकर रमन की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। 26 अक्टूबर 2005 को सुप्रीम कोर्ट ने केस तमिलनाडू से पांडिचेरी कोर्ट में ट्रांसफर कर दिया था।

साभार– नईदुनिया, दि. 20-11-2014

धर्म के वे चन्द मुखोटे जिनकी सूची बहुत लम्बी है जिन्होंने धर्म को गोरख धन्धा बनाकर भोले –भाले लोगों की धार्मिक भावनाओं का कई वर्षों तक क्रूर शोषण किया है और करते जा रहे हैं। हमारे ऋषि–महर्षियों ने एक स्वर से वेद को धर्म का मूल बताया है – वेदोऽखिलो धर्म मूलम्, वेद प्रति –पादितो धर्मः , अधर्मस्तद्विपर्ययः, धर्म जिज्ञासमाननं प्रमाणं परमं श्रुतिः। ऐसे ऋषि वचनों के रहते हुए भी धर्म ज्ञान से शून्य अपराधी प्रवृत्ति के लोग धर्म गुरु बनकर अमानवीय, असामाजिक एवं अराष्ट्रीय गतिविधियाँ चलाते रहते हैं।

जिस ऋषि दयानन्द ने अखण्ड ब्रह्मचारी रहकर बगैर कोई मठ – आश्रम, चेले–चेली बनाये बगैर अनेकों प्राण हरण की घटनाओं से विचलित हुए बगैर वेदों की और लौटने का संदेश दिया तथा वेदों की महत्ता को पूनर्स्थापित करने हेतु अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की उपरोक्त ग्रंथ रामप्रसाद बिस्मिल जैसे अनेकानेक राष्ट्रभक्तों का प्रेरणा स्त्रोत बना और देश परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त हुआ। अत्यंत विडम्बना है कि ढ़ोंग और पाखण्ड के सहारे अपना साम्राज्य स्थापित करने वाले रामपाल ने आर्य जाति और राष्ट्र के लिये अपने प्राणों को होम करने वाले ऋषि दयानन्द,महिलाओं और दलितों के उद्धारक आर्य समाज और धर्म व ईश्वर के सत्य स्वरुप से अवगत करवाने वाले सत्यार्थ प्रकाश को अपने निशाने पर लिया उसके बावजूद अज्ञानी लोगों ने उसे सिर माथे पर बैठाया।

जितने ये तथाकथित बाबा लोग दोषी है उससे ज्यादा वे लोग भी दोषी है जो इनके शिकार होते हैं। आर्य समाज के प्रत्येक सैनिक का कर्त्तव्य है कि स्वामी दयानन्द,स्वामी श्रद्धानंद, पं. लेखराम,पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की धर्म भावनाओं को हृदय में रखकर तप–त्याग और साधना पूर्ण जीवन बनाते हुए इन धर्म के ठेकेदारों के पाखण्डों का प्रभावशाली खण्डन करें ऐसा करना मानवता की सबसे बड़ी सेवा होगी और इसे एक आर्य ही कर सकता है।

– सम्पादक

thearyasamaj.org

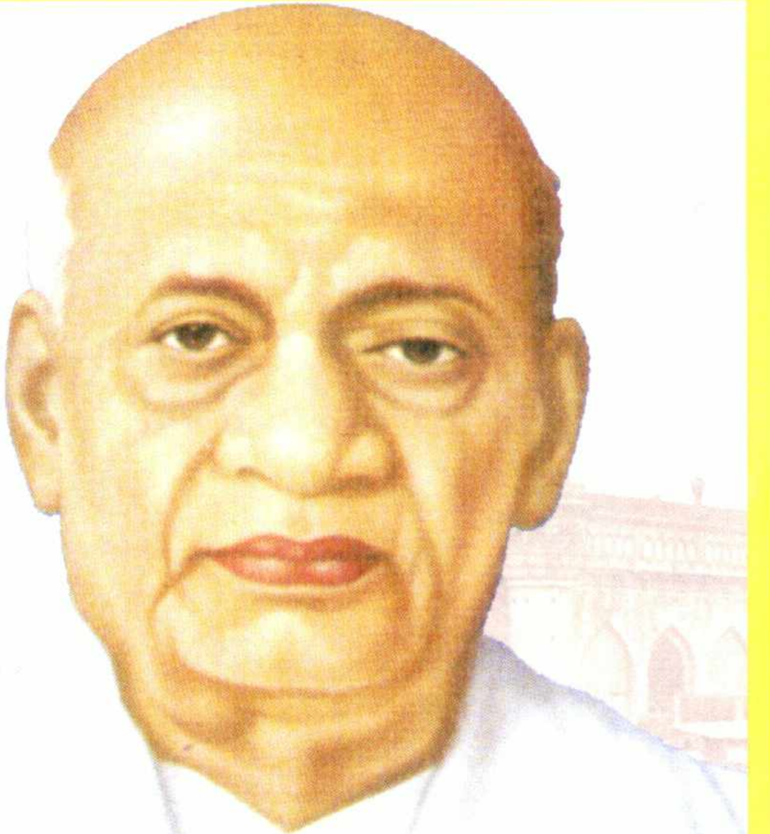

स्वामी दयानन्द का योगदान यह था कि उन्होंने देश का किं कर्त्तव्यविमूढ़ता के गहरे गड्ढे में गिरने से बचाया उन्होंने भारत की स्वाधीनता की वास्तविक नींव डाली –

लौह पुरुष

सरदार वल्लभ भाई पटेल

उपेक्षित सरदार पटेल को मिला यथोचित सम्मान

लगभग ५५० रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण के शिल्पी, आर्य समाज के सहयोग से हैदराबाद निजाम के दुराग्रहों पर पानी फेरने वाले भारत माता के सच्चे महान् सपूत को उनके १४० वें जन्म दिवस ३१ अक्टूबर को राष्ट्र ने एकता दिवस के रुप में मनाकर किया स्मरण ...

राष्ट्र भक्त महान् आत्मा को शत – शत नमन

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित, संपादक - गजेश शास्त्री, चलभाष - ०९९९३७६५०३१, कार्यालय - ०७३१-४०५७०१६